दसवीं सालगिरह विशेषांक

10 साल भरोसे के

बेबाक खबर हर दोपहर

दोपहर मेट्रो

भोपाल, शनिवार 09 मई 2026

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष- 9, 2083 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-09, अंक - 303 पेज 16, मूल्य 2 रुपए

विशेष संपादकीय

दोपहर मेट्रो आखिर क्यों?

राजेश सिरोठिया
प्रधान संपादक

ती स साल की पत्रकारिता के पहले ही एक सपना संजोया था। उम्र के पचास साल के पड़ाव के बाद पूंजीवादी दौर में पत्रकारों के समाचार पत्र का। जिसे समाज मान्यता दे और सरकार भी उसे स्वीकृति दे। दोपहर मेट्रो के रूप में एक ऐसा ही समाचार पत्र जो तमाम प्रतिकूलताओं को झेलते हुए अपने सपने को साकार करने की डगर पर चलते हुए एक हक्कीकत बन चुका है। डीएम डिजिटल के रूप में इसका विस्तार भी हो रहा है।

ऐसा कतई नहीं कि बड़े समाचार पत्र जनता की आवाज नहीं उठाते। उनमें काम करने वाले हमारे साथियों की कोशिश अपने पाठकों के सामने सच परोसने की होती है, लेकिन पूंजीवादी व्यवस्था में सत्ता के असली अधिष्ठाता कोई और होते हैं। सामने कोई और नजर आता है पर इसके पीछे असली चेहरे जुदा होते हैं। ऐसे में खबर का असली सच कहीं गुम हो जाता है। न खबर के पीछे छुपी खबर सामने आ पाती है और न उसके आगे की खबर।

स्वर्गीय राजेन्द्र माथुर की पत्रकारिता की पाठशाला के सबक शुरूआती दौर से जेहन में थे। उन्हें अपनी कलम से उकेरने की कोशिश बीते तीस साल तक करता रहा। स्वर्गीय मदनमोहन जोशी से लेकर एनके सिंह के दौर में भी नईदुनिया से लेकर दैनिक भास्कर तक में इसे अंजाम देने की कोशिश की। आउटलुक जैसी पत्रिका में आलोक मेहता जी के सानिध्य में काम करते हुए भी इसे खूब किया भी। विजय दत्त श्रीधर जैसे वरिष्ठ पत्रकार से लेकर कई विधा के जानकारों के साथ विद्यार्थी भाव के साथ असली मुद्दों को समझाने की कोशिश की। अपने पैशन को प्रोफेशन में बदलने के जिस जज्बे और जूनून के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा था, उसको सच करने का मौका भी मिला। किसी अखबार में कम तो किसी में ज्यादा। लेकिन एक तड़प फिर भी मन में रहती थी कि कुछ और नया किया जाए। नई जमीन खोदी जाए। इसी भाव ने एक मुकाम पर जाकर महसूस किया कि इसके लिए अपना खुद का अखबार हो। यह भी अंदाजा था कि सीमित संसाधनों के बूते इसे अंजाम देना इतना आसान नहीं है। बावजूद इसके एक जोखिम उठाने की हिम्मत जुटाई कि इसे करना ही है। बड़े और ब्रांडेड समाचार पत्रों में काम करने के बावजूद उनके ब्रांड बनकर जीने की हसरत मन में कभी नहीं रही। कभी इसका कोई मुगालता भी नहीं पाला। इस भाव के चलते यह फैसला लेने में कोई दिक्कत नहीं आई।

अगर क्रिकेट की भाषा में कहूँ तो पत्रिका में काम करना टेस्ट मैच खेलने जैसा है। सुबह का अखबार पचास ओवर वाला वन डे मैच है तो दोपहर का समाचार पत्र आज के दौर के टी- ट्वेंटी मैच की तरह है। कम वक्त में, कम पन्नों वाले अखबार में गागर में सागर को समाने की शर्तों से भरा सफ़र। आमतौर पर धारणा यही है कि दोपहर का समाचार सिर्फ लोकल कलेवर और फ्लेवर को अपने दामन में समटने वाला अख़बार है, लेकिन आज के दौर में जब पूरी दुनिया सिमटकर एक गाँव की शक्ल ले चुकी है तो क्यों न एक लोकल समाचार पत्र को ग्लोबल बनाया जाए। लोकल से ग्लोबल के इसी विचार ने दस साल का सफ़र कैसे तय कर लिया पता ही नहीं चला। सोशल मीडिया के इस दौर में जहाँ पत्रकारिता के दायरे को विस्तार मिला है तो इसके पीछे कई खतरे भी छुपे हैं। खबरों की इसी भ्रामक दुनिया के बीच अपने पाठको के सामने सच को परोसने की एक छोटी सी कोशिश है- दोपहर मेट्रो। पत्रकारिता में बढ़ती पतंगबाजी के इस दौर में अपनी साख को बनाए रखना भी किसी चुनौती से कम नहीं। इसमें हम और हमारी टीम कितनी कामयाब हुई, इसका आकलन तो असली परीक्षक(पाठक) करेंगे। हम तो रोज इम्तिहान देने वाले विद्यार्थी हैं। इसलिए हम अपनी कोशिशों में कितना कामयाब हुए ? आपकी कसौटियों पर कितना खरे उतरे, इसका आकलन तो आप ही करेंगे। इस वादे के साथ कि हमसे कभी भी कोई भी गलती हुई, तो उसमें सुधार और परिष्करण के लिए हम पहले भी तैयार रहे और आगे भी रहेंगे। आप सभी के सुझाव और सलाह हमारे लिए सदा बेशकीमती रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

निष्पक्ष पत्रकारिता को मिली राष्ट्रीय पहचान

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

म ध्य प्रदेश की पत्रकारिता का इतिहास केवल समाचार छापने का इतिहास नहीं है , बल्कि यह सामाजिक चेतना, राजनीतिक संवाद और जनमत निर्माण की एक लंबी परंपरा का इतिहास भी है। देश के भौगोलिक हृदय कहे जाने वाले मध्य प्रदेश में अखबारों की भूमिका हमेशा से विशेष रही है। रेडियो और टीवी के बाद डिजिटल युग आने पर यह माना गया था कि प्रिंट मीडिया का प्रभाव घट जाएगा, लेकिन पिछले कुछ वर्षों का अनुभव बताता है कि मध्य प्रदेश में विशेषकर हिंदी अखबार, अब भी सार्वजनिक जीवन के केंद्र में हैं। खासतौर पर दोपहर या मिड-डे में पढ़े जाने वाले समाचारपत्र। इनमें सुबह के प्रमुख अखबारों के दोपहर तक प्रभावशाली पाठकीय उपभोग का स्वरूप शामिल है। राज्य के राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक विमर्श पर ये गहरा असर बनाए हुए हैं।

दिल्ली में 55 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय रहने के बावजूद मैं सार्वजनिक रुप से कहता रहा हूँ कि प्रदेशों , जिलों में काम करने वाले पत्रकारों को अधिक चुनौतियोंपूर्ण काम करना होता है। स्थानीय और प्रादेशिक अखबारों का जनता पर अधिक असर होता है और इसी कारण राज्य सरकारों अथवा राजनीतिक संगठनों अथवा उद्योग व्यापार से जुड़े संस्थानों को उनकी खबरों और टिप्पणियों की चिंता रहती है। इस दृष्टि से भोपाल में दशकों से अपनी धारदार पत्रकारिता से राजेश सिरोठिया ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। इसी ईमानदार मेहनत और समर्पित कार्य का परिणाम है कि भोपाल में अपना अख़बार 'दोपहर मेट्रो ' निकालकर दस वर्षों में एक प्रतिष्ठित स्थान बना लिया। जमीन से जुडी निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता का सम्मान हर क्षेत्र में होता है। मिड डे अखबार होते हुए भी राजनीतिक सामाजिक क्षेत्रों में इसने अपनी अलग पहचान बनाई है। फिर डिजिटल युग में राजेश सिरोठिया विभिन्न माध्यमों से देश विदेश के पाठकों, दर्शकों को जोड़ रहे हैं। मुझे व्यक्तिगत रुप से इसलिए प्रसन्नता होती है कि राजेश सिरोठिया के नवभारत टाइम्स में महान संपादक राजेंद्र माथुर जी और मेरे साथ जुड़ने के 40 वर्ष हो गए हैं और निरंतर उनकी सफलताओं और समाज में प्रभाव से गौरव महसूस होता है। हाल के वर्षों में, मिड-डे पाठक यानी वे जो दोपहर में अखबार लेकर दिन के अंत तक उसकी खबरों की राजनीतिक चर्चा, दफ्तरों, बाजारों, चाय की दुकानों और सामाजिक मंचों तक करते हैं। इनकी शक्ति अक्सर जन-सागर में नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाले सीमित लेकिन सक्रिय पाठक वर्ग में होती है। इनका महत्व सुबह के दैनिकों से अलग रहा है।

सुबह का अखबार दिन की शुरुआत करता है, जबकि मिड-डे या इवनिंग अखबार दिन भर की तत्काल घटनाओं, अपराध, प्रशासनिक कार्रवाई, दुर्घटना, बाजार हलचल, स्थानीय राजनीति को उसी दिन पाठकों तक पहुँचाता है। दोपहर मेट्रो का प्रभाव स्पष्ट रूप से कायम रहा है। राजेश ने स्थानीय मुद्दों को राज्यव्यापी विमर्श बनाया, प्रशासनिक जवाबदेही बढ़ाई,चुनावी वातावरण प्रभावित किया,सामाजिक चेतना को दिशा दी और डिजिटल युग में भी विश्वसनीय सूचना का स्थान बनाए रखा। विधानसभा और लोकसभा चुनावों में उनकी भूमिका अत्यंत प्रभावी रही। जमीनी आकलन किया। कौन विधायक क्षेत्र में सक्रिय है , कहाँ सड़कें नहीं बनीं, किस जिले में किसानों का असंतोष है , किन क्षेत्रों में महिला सुरक्षा प्रश्न बना। इन सभी मुद्दों का व्यापक मंच अखबार को बनाया। मध्य प्रदेश के कई मामलों में टीवी चैनलों ने बहस बाद में शुरू की, जबकि मुद्दे पहले राजेश ने उठाए। इसीलिए इसका प्रभाव राजनीति से आगे समाज तक फैला है। इस सफलता की यात्रा में उज्जवल भविष्य के लिए दस वर्ष के उत्सव पर मेरी शुभकामनाएं।

जड़ों से जुड़े रहकर लगातार परिवर्तनशील रहने का समय

अनिल शर्मा
स्थानीय संपादक

सा मान्य धारणा है कि दोपहर या शाम का अखबार हो तो, उसे चलाने की पहली जरूरत सनसनीखेज सामग्री ही है। चटखारे लेकर पढ़ने लायक मसाला नहीं हुआ तो उसे नकार दिया जाएगा। यह धारणा यूं ही नहीं बनी। देश के अलग - हिस्सों और महानगरों तक में पाठकों के बीच ज्यादा प्रचिलत इस श्रेणी के अखबार ऐसा ही कंटेंट परोसते दिखाई देते हैं। ऐसे में, एक गंभीर और विश्लेषण आधारित दिन के अखबार की कल्पना साहस भरा कदम था। पूर्णतः पत्रकारों के अखबार के सामने चुनौतियां आनी ही थीं और आईं भी। लेकिन अखबार ने अपनी धारा नहीं बदली। साल दर साल यह विश्वास मजबूत होता गया कि गंभीरता के साथ अपनी बात कहकर भी पाठकों का विश्वास जीता जा सकता है। यह तो तय था कि सिर्फ खबरों से दोपहर के अखबार की पकड़ नहीं बन सकती। कुछ अलग करना होगा। खबर के पीछे और आगे क्या है, यह बताने की कोशिश और सटीक विश्लेषण। इसी दिशा के साथ कई दशक का अनुभव लिए एक खांटी पत्रकार का अखबार समाज के 'डिसीजन मेकर्स ' के बीच पहले चर्चा का विषय बना और फिर 'ओपीनियन मेकर' की भूमिका में आ गया। राजनेता हों या नौकरशाह, जब उनके बीच दोपहर के अखबार की विश्वसनीयता बढ़ती है तो फिर वह 'ट्रेंड सेटर' के रूप में उभरता है। अपनी पकड़ी राह पर कायम रहने से ही दोपहर मेट्रो को यह हासिल हो सका। रोजाना ,आम आदमी से लेकर सत्ता के शीर्ष तक की बेबाक खबरें और विचार ने अखबार को चिंतनशील वर्ग में अलग पहचान दिलाई है।

इसी के साथ एक दशक की यात्रा में 2025 - 26 का साल दोपहर मेट्रो के लिए कुछ अहम् बदलावों का भी रहा है। महसूस किया गया कि अखबार में रोजाना कुछ ऐसा कंटेंट भी शामिल किया जाए जो समाज के सभी आयु वर्ग के लिए उपयोगी हो। ÷ हर पेज कुछ कहता है ÷ के ध्येय वाक्य के साथ इसे लागू किया गया। इससे खबरों और अन्य सामग्री के चयन में बड़ा फर्क आया। पाठकों और रचनाकारों की अखबार में भागीदारी के प्रयास किया गए। एक और बड़ा बदलाव हुआ। शहर, प्रदेश और देश के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर भी खूब कलम चली। जियोपोलिटिकल अध्ययन के साथ विशेष लेख और टिप्पणियों पर जो फीडबैक आया वह उत्साह बढ़ाने वाला है।

कहा जाए तो एक छोटी शुरुआत के रूप में आए अखबार के प्रकाशन के दस साल पूरे होना एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। लेकिन यह बस एक शुरुआत की तरह भी है, जो आने वाले दिनों में और अधिक सशक्त होने का संदेश देती है। पीछे की कठिनाइयों को याद रखते हुए आगे की राह लेने का समय। जड़ों से जुड़े रहकर लगातार परिवर्तनशील रहने का समय।

'मंजिलें क्या हैं, रास्ता क्या है?
हौसला हो तो फ़ासला क्या है,
अभी तो एक छोटी सी उड़ान है,
अभी पूरा आसमान बाकी है।'

दोपहर मेट्रो की दसवीं सालगिरह का आयोजन आज

इन हस्तियों का होगा सम्मान

पद्मश्री नारायण व्यास | पद्मश्री आलोक मेहता | पद्मश्री विजयदत श्रीधर | एन के सिंह

आकृति मेहरा | डॉ राजेश शर्मा | दिव्यांका त्रिपाठी | डा. इंद्रकुमार चुघ | संजय त्रिपाठी

निष्पक्ष पत्रकारिता और पाठकों के भरोसे के साथ 'दोपहर मेट्रो' समाचार पत्र का एक दशक का सफर पूरा हुआ है। खबरों के आगे की खबर और उनके पीछे छिपे तथ्यों के साथ सटीक विश्लेषण के प्रयास को पाठकों का भरपूर प्यार मिला। किसी भी नई शुरुआत के दस साल पूरे होना अपने आप में महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। यह पड़ाव स्मृतियों में रहे, इसी उद्देश्य के साथ आज 9 मई को दसवीं सालगिरह का आयोजन किया जा रहा है। कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर (मिंटो हॉल) में शाम 7 बजे से आयोजित समारोह की अध्यक्षता विधानसभा के स्पीकर नरेंद्र सिंह तोमर करेंगे। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ प्रदेश सरकार के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और विश्वास सारंग सहित प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जीतू पटवारी विशिष्ट अतिथियों के रूप में मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम में प्रदेश का नाम देश - विदेश में रोशन करने वाली प्रमुख हस्तियों का सम्मान भी किया जाएगा। इनमें प्रदेश के मशहूर पुरातत्ववेत्ता पद्मश्री नारायण व्यास, वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर, वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता एवं एन के सिंह, रिटायर्ड कर्नल संजय त्रिपाठी, मशहूर सर्जन डा. इंद्रकुमार चुघ, लोकप्रिय गायिका आकृति मेहरा, प्रतिभाशाली अभिनेत्री दिव्यांका त्रिपाठी और ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ राजेश शर्मा शामिल हैं।

कार्यक्रम की लाइन स्ट्रीमिंग के लिए शाम 7 बजे से इस लिंक पर जाएं..
https://youtube.com/live/n4UVsWvcPiQ?feature=share

बेबाक खबर हर दोपहर
दोपहर मेट्रो
10 साल भरोसे के

10वीं वर्षगांठ कार्यक्रम

गरिमामयी उपस्थिति

केंद्रीय मंत्री
श्री शिवराज सिंह चौहान

मंत्री, म.प्र. सरकार
श्री कैलाश विजयवर्गीय

स्पीकर, म.प्र. विधानसभा
श्री नरेंद्र सिंह तोमर

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
श्री जीतू पटवारी

मंत्री, म.प्र. सरकार
श्री विश्वास सारंग

महापौर, भोपाल
श्रीमती मालती राय

9 मई, 2026 | शाम 7 बजे से | कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर, भोपाल

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन को एक उच्च स्तरीय वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित कर रहे हैं

आगामी सिंहस्थ 2028 और उज्जैन में पर्यटन विकास का बदलता स्वरूप

धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था की प्राचीन नगरी उज्जैन, आगामी सिंहस्थ 2028 के भव्य आयोजन के लिए एक अभूतपूर्व परिवर्तन की ओर अग्रसर है। क्षिप्रा नदी के पावन तट पर लगने वाला सिंहस्थ कुंभ केवल एक धार्मिक समागम नहीं, बल्कि भारतीय अध्यात्म और परंपरा का विश्वव्यापी उत्सव है। इस आयोजन को केंद्र में रखते हुए, मध्यप्रदेश सरकार उज्जैन को एक उच्च स्तरीय वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित कर रहे हैं। 'श्री महाकाल लोक' के निर्माण ने पहले ही शहर के पर्यटन परिदृश्य को बदल दिया है, जिससे यहाँ न केवल श्रद्धालुओं की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई है, बल्कि पर्यटन के बुनियादी ढांचे में भी व्यापक सुधार देखने को मिला है। महाकालेश्वर मंदिर, काल भैरव, मंगलनाथ और हरसिद्धि शक्तिपीठ जैसे प्रमुख केंद्रों के साथ-साथ अब शहर के ऐतिहासिक कुंडों और प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार भी तेजी से किया जा रहा है, ताकि आने वाले समय में यहाँ आने वाले करोड़ों श्रद्धालु उज्जैन की वैभवशाली विरासत से रूबरू हो सकें।

पर्यटन के इस विस्तार में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी श्रद्धालुओं के ठहरने की उत्तम व्यवस्था है। सिंहस्थ के दौरान जुटने वाली भारी भीड़ को देखते हुए पर्यटन विभाग अभी से तैयारियों में जुट गया है। पर्यटन विभाग अब पारंपरिक होटलों से आगे बढ़कर 'होमस्टे' (Homestay) की अवधारणा पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है। उज्जैन में होमस्टे की संख्या बढ़ाने के लिए निरंतर और योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके तहत स्थानीय निवासियों को अपने घरों में पर्यटकों को ठहराने के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह पहल न केवल शहर की आवास क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए स्वरोजगार के नए द्वार भी खोलती है। होमस्टे के माध्यम से श्रद्धालुओं को न केवल किफायती और सुरक्षित आवास मिलता है, बल्कि उन्हें उज्जैन की स्थानीय संस्कृति, खान-पान और पारिवारिक आतिथ्य का सीधा अनुभव भी प्राप्त होता है। सरकार द्वारा इन होमस्टे के पंजीकरण की प्रक्रिया को सुगम बनाया गया है और संचालकों को अतिथि-सत्कार के मानकों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि 'अतिथि देवो भव' की भावना को धरातल पर उतारा जा सके।

आगामी सिंहस्थ को देखते हुए उज्जैन में सड़क परिवहन, सुगम दर्शन व्यवस्था और क्षिप्रा नदी के शुद्धिकरण जैसे कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। पर्यटन विभाग का लक्ष्य केवल दर्शन की सुविधा देना नहीं, बल्कि उज्जैन को एक ऐसे गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करना है जहाँ श्रद्धालु आध्यात्मिक शांति के साथ-साथ आधुनिक सुविधाओं का भी आनंद ले सकें। डिजिटल सूचना केंद्र, बेहतर सार्वजनिक परिवहन और सुव्यवस्थित घाटों के निर्माण से सिंहस्थ 2028 एक ऐतिहासिक अनुभव बनने जा रहा है। होमस्टे की बढ़ती लोकप्रियता और प्रशासन के सक्रिय सहयोग से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि आने वाले समय में उज्जैन न केवल मध्य प्रदेश, बल्कि पूरे देश में धार्मिक और अनुभव-आधारित पर्यटन (Experience Tourism) का एक आदर्श मॉडल बनकर उभरे। पर्यटन और सुविधाओं का यह संगम उज्जैन को आने वाले दशकों के लिए एक नई पहचान देने को तैयार है।

जटाशंकरः प्रदेश में पचमढ़ी का अद्भुत गुफा मंदिर

मध्यप्रदेश, जिसे "इन्क्रेडिबल इंडिया का दिल" कहा जाता है, अपनी अनोखी बहुआयामी पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। यहां भव्य ऐतिहासिक धरोहरें, अनेक राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य मौजूद हैं। विविध परंपराओं, त्योहारों और हस्तशिल्प से सजी इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत हर किसी को आकर्षित करती है। जटाशंकर गुफा मंदिर मध्यप्रदेश के पचमढ़ी में स्थित है, जो पचमढ़ी बस स्टैंड से लगभग 1.5 किलोमीटर की दूरी पर है। यह पचमढ़ी के सबसे अधिक देखे जाने वाले स्थलों में से एक है। गहरी घाटी में विशाल चट्टानों के बीच स्थित यह गुफा धार्मिक और प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। मान्यता है कि भगवान शिव ने भस्मासुर के क्रोध से बचने के लिए यहां शरण ली थी। यह सुंदर चूना-पत्थर (लाइमस्टोन) की गुफा "जटाशंकर" इसलिए कहलाती है क्योंकि इसमें बनी प्राकृतिक संरचनाएं (स्टैलेक्टाइट्स और स्टैलेग्माइट्स) भगवान शिव की जटाओं जैसी प्रतीत होती हैं। गुफा की छत पर बना एक अद्भुत आकार शेषनाग के समान दिखाई देता है, जो इस स्थल की दिव्यता को और बढ़ाता है।

स्थापत्य कला और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम

पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव एवं पर्यटन बोर्ड के प्रबंध संचालक शेखर शुक्ला के अनुसार, "मध्यप्रदेश हर यात्री को विविध और अनोखे अनुभव प्रदान करता है। यहां के ऑफबीट और मल्टीस्पेशियलिटी पर्यटन स्थल यात्रियों को शांति और नवचेतना का अनुभव कराते हैं। यह राज्य स्थापत्य कला, प्राकृतिक सौंदर्य और परंपराओं का अद्भुत संगम है, जो देश-विदेश के पर्यटकों के लिए आदर्श गंतव्य है।" इस मंदिर में मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण पर्व महाशिवरात्रि है, जो सामान्यतः फरवरी या मार्च में आता है। इस अवसर पर पचमढ़ी में एक विशाल मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक शामिल होते हैं। जटाशंकर गुफा के अंदर प्राकृतिक रूप से बने 108 शिवलिंगों की पूजा की जाती है। गुफा के मुख्य भाग में एक विशाल चट्टान प्राकृतिक रूप से बने शिवलिंग पर छाया करती है। यहां से एक पवित्र जलधारा भी निकलती है, जो पत्थरों के बीच बहती हुई श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र बनती है।

रहस्यमयी जलधारा यहां की विशेषता

गुफा परिसर में दो कुंड भी हैं—एक में ठंडा पानी और दूसरे में गर्म पानी पाया जाता है। यहां बहने वाली रहस्यमयी जलधारा, जिसका स्रोत अज्ञात है, 'गुप्त गंगा' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी माना जाता है कि जम्बू द्वीप की धारा का उद्गम यहीं से होता है। गुफा के ऊपरी भाग में भगवान शिव और माता पार्वती की मूर्तियां स्थापित हैं। शांत वातावरण, बहती जलधाराएं और प्राकृतिक सौंदर्य इस स्थान को अत्यंत मनोहारी बनाते हैं। आसपास बंदरों की उपस्थिति इस अनुभव को और भी प्राकृतिक और रोमांचक बना देती है। हालांकि जटाशंकर गुफाएं पूरे वर्ष खुली रहती हैं, लेकिन मानसून के समय यहां की सुंदरता अपने चरम पर होती है, जिससे पर्यटकों की संख्या बढ़ जाती है। यहां मूलभूत सुविधाएं जैसे शौचालय और एक छोटा बाजार उपलब्ध है, जहां से प्रसाद और जलपान लिया जा सकता है। पर्यटकों को सलाह दी जाती है कि वे पानी और प्राथमिक चिकित्सा सामग्री साथ लेकर आएं। जटाशंकर गुफा तक पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन पिपरिया है, जबकि निकटतम हवाई अड्डा भोपाल का राजा भोज हवाई अड्डा है। यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक आस्था और रहस्य का अद्भुत संगम है, जो हर यात्री को एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है।

अब मध्य प्रदेश का दतिया पैलेस यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल

बलुआ पत्थर और चूने से बना एक ऐसा स्वप्न, जिसे समय ने फिर से जीवंत कर दिया है। बिर सिंह महल, सतखंडा महल, गोविंद महल और पुराना महल के नाम से भी प्रसिद्ध यह भव्य संरचना दतिया नगर की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है दतिया पैलेस। इसकी आकृति मित्रता, शाही वैभव और अद्वितीय स्थापत्य कला का मौन प्रतीक है। हाल ही में यूनेस्को की अस्थायी विश्व धरोहर सूची में शामिल होने के बाद, यह महल अब केवल इतिहास का हिस्सा नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश की जीवित धरोहर का गौरव बन चुका है।

इस महल का निर्माण 1614 में ओरछा के वीर बुंदेला शासक राजा वीर सिंह देव द्वारा कराया गया था। यह महल उनके प्रिय मित्र शहजादे सलीम (जो बाद में मुगल सम्राट जहाँगीर बने) के सम्मान में बनवाया गया था। राजनीतिक उथल-पुथल के समय पनपी उनकी मित्रता तब और गहरी हो गई जब वीर सिंह देव ने सलीम का साथ सम्राट अकबर के विरुद्ध संघर्ष में दिया। इस प्रकार, यह महल केवल एक राजसी निवास नहीं, बल्कि निष्ठा और मित्रता का प्रतीक बनकर उभरा। आज यह महल अपनी संपूर्ण भव्यता के साथ अडिग खड़ा है। लगभग 400 कमरों वाला यह महल नाजुक भित्ति चित्रों, मुगल शैली के मेहराबों, राजपूती झरोखों और घोड़ों, देवी-देवताओं व दरबारी दृश्यों से सजे अलंकरणों से समृद्ध है। इसकी सममितीय संरचना पवित्र स्वस्तिक के आकार की प्रतीत होती है, जो इसकी आध्यात्मिक और स्थापत्य दृष्टि को दर्शाती है। स्थानीय लोग इसे "भूल भुलैया" भी कहते हैं, क्योंकि इसके भीतर एक रहस्यमयी मार्गों का जाल है, जिसे अब सुरक्षित रखने के लिए बंद कर दिया गया है।

इस महल की भव्यता ने अंग्रेजों को भी आकर्षित किया था। 1818 में लॉर्ड हेस्टिंग्स यहाँ आए थे और 1902 में वायसराय लॉर्ड कर्जन ने यहाँ दरबार लगाया था। माना जाता है कि नई दिल्ली के प्रसिद्ध वास्तुकार सर एडवर्ड लुटियंस ने भी इस महल की शिल्पकला से प्रेरणा ली थी। मध्य प्रदेश पर्यटन के अनुसार, यह राज्य हर यात्री को विविध और अनूठे अनुभव प्रदान करता है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण, समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर इसे देश-विदेश के पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थल बनाते हैं।

कैसे पहुँचे दतिया

वायु मार्गः निकटतम हवाई अड्डा ग्वालियर (40 किमी) है, जहाँ से टैक्सी और बस आसानी से उपलब्ध हैं।
रेल मार्गः दतिया रेलवे स्टेशन दिल्ली–चेन्नई मार्ग पर स्थित है, जो ग्वालियर, झांसी, आगरा और भोपाल से जुड़ा हुआ है।
सड़क मार्गः राष्ट्रीय राजमार्ग NH-44 के माध्यम से दतिया, भोपाल, ग्वालियर और झांसी से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।
घूमने का सर्वोत्तम समयः अगस्त से अप्रैल के बीच, जब मौसम सुहावना होता है और महल की दीवारें धूप और चाँदनी में जीवंत लगती हैं।

धामनार गुफाएँः बौद्ध विरासत की ऐसी धरोहर जो यूनेस्को की नजर में बन गया प्राचीन वैभव

मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के शांत ग्राम धामनार में स्थित धामनार गुफाएँ भारत की प्राचीन आध्यात्मिक और कलात्मक परंपरा का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। गुप्तकाल (5वीं से 7वीं शताब्दी ईस्वी) के दौरान लेटराइट पत्थर की पहाड़ी को काटकर बनाई गई ये गुफाएँ शिल्पकला और वास्तुकला की उत्कृष्ट मिसाल हैं।

यह गुफा समूह कुल 51 एकाश्म (मोनोलिथिक) गुफाओं से मिलकर बना है, जिनमें 14 बड़ी और 37 छोटी गुफाएँ शामिल हैं। खास बात यह है कि इन्हें बनाया नहीं गया, बल्कि सीधे चट्टानों को काटकर तराशा गया है, जिससे इनकी बारीक नक्काशी और भी अद्भुत प्रतीत होती है। यहाँ स्तूप, चैत्य (प्रार्थना स्थल), विहार (मठ) और सुंदर मूर्तियाँ मौजूद हैं, जो सदियों पुरानी साधना, ध्यान और कला की कहानी कहती हैं। दक्षिण दिशा की ओर मुख वाली ये गुफाएँ

वर्षा ऋतु में भिक्षुओं के लिए आश्रय स्थल के रूप में उपयोग की जाती थीं।

इन गुफाओं में 'भीम बाजार' विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहाँ बरामदे के साथ छोटे-छोटे कक्ष बने हुए हैं और ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की शांत प्रतिमा स्थित है। 'बड़ी कचहरी' नामक गुफा अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें दो विशाल स्तंभ, छह सुंदर मेहराबें और बीच में एक स्तूप है। गुफा संख्या 13 (छोटा बाजार) में एक चौकोर आधार पर बने स्तूप के चारों ओर 15 उत्कृष्ट मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं। वहीं 'भीम मंदिर' में उपदेश मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा आध्यात्मिक वातावरण को और गहन बनाती है। 'प्रदक्षिणा पथ' आज भी बौद्ध उपासना की परंपरा का जीवंत अनुभव कराता है। यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची (2024) की संभावित सूची में शामिल धामनार गुफाएँ मध्य प्रदेश की अनमोल विरासत के रूप में उभर रही हैं।

डिंडोरी का घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान

6.5 करोड़ वर्ष पुराने पौधों के जीवाश्मों का घर है यह उद्यान

मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले के प्रसिद्ध वन्यजीव अभयारण्यों कान्हा और बांधवगढ़ के बीच स्थित है एक ऐसा स्थान, जो आपको सीधे 6.5 करोड़ वर्ष पीछे ले जाता है- उस समय में जब पृथ्वी पर डायनासोर विचरण करते थे और मध्य भारत घने उष्णकटिबंधीय वनों से आच्छादित था। प्राकृतिक सौंदर्य से घिरे इस क्षेत्र में स्थित घुघुआ जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान पृथ्वी की प्राचीन वनस्पति धरोहर का अद्वितीय उदाहरण है। यह अनोखा जीवाश्म उद्यान लगभग 6.5 करोड़ वर्ष पुराने पौधों के जीवाश्मों का घर है, जो अपर क्रेटेशियस से प्रारंभिक टर्शियरी काल के बीच के हैं- यह वह महत्वपूर्ण समय था जब पृथ्वी की वनस्पति में बड़े बदलाव हो रहे थे।

यहाँ पाए जाने वाले जीवाश्म मुख्यतः द्विबीजपत्री और पाम परिवार से संबंधित हैं। इनमें प्राचीन

यूकेलिप्टस जैसे दुर्लभ जीवाश्म भी शामिल हैं, जो मूलतः ऑस्ट्रेलिया के माने जाते हैं। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि कभी गोंडवाना महाद्वीप अस्तित्व में था, जो दक्षिणी भूभागों को आपस में जोड़ता था।

इस उद्यान में लकड़ीदार पौधों, बेलों, पत्तियों, फूलों, फलों और बीजों के सुंदर रूप से संरक्षित जीवाश्म देखे जा सकते हैं। इनमें खजूर, जामुन, केला, रुद्राक्ष और आंवला जैसे पौधों के जीवाश्म भी शामिल हैं, जो यह दर्शाते हैं कि प्राचीन काल में मध्य भारत का वातावरण आज की तुलना में कहीं अधिक आर्द्र और हरित था।

बाघिनी नदी के किनारे स्थित मानव-निर्मित ये गुफाएँ भारत की प्रसिद्ध शैलकर्तित स्थापत्य तकनीक का एक अनुपम उदाहरण है

प्राचीन भारतीय वास्तुकला की जीवंत गवाही देती है बाघ गुफाएँ

मध्य प्रदेश, जिसे भारत का हृदय कहा जाता है, अपनी समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है। इसी विरासत का एक अनमोल रत्न हैं बाघ गुफाएँ, जो प्राचीन शैल-कट (रॉक-कट) स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। ये गुफाएँ इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करती हैं। मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल ये गुफाएँ प्राचीन भारत की कलात्मक उत्कृष्टता और आध्यात्मिक गहराई की झलक देती हैं।

बाघ गुफाएँ मध्य प्रदेश के धार जिले में विंध्य पर्वतमाला की दक्षिणी ढलानों पर स्थित हैं। ये कुल नौ शैल-कट संरचनाओं का समूह हैं, जिनका निर्माण गुप्त काल (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) के दौरान हुआ था। गुप्त काल को भारतीय कला और संस्कृति का स्वर्ण युग माना जाता है। इन गुफाओं के भीतर सुंदर मूर्तिकला और बाघ शैली की भित्ति चित्रकारी देखने को मिलती है, जिनमें बौद्ध शिक्षाओं और जातक कथाओं का चित्रण किया गया है। माना जाता है कि ये गुफाएँ बौद्ध विहार (मठ) के रूप में उपयोग की जाती थीं, जो उस समय की आध्यात्मिक चेतना और कलात्मक कौशल को दर्शाती हैं।

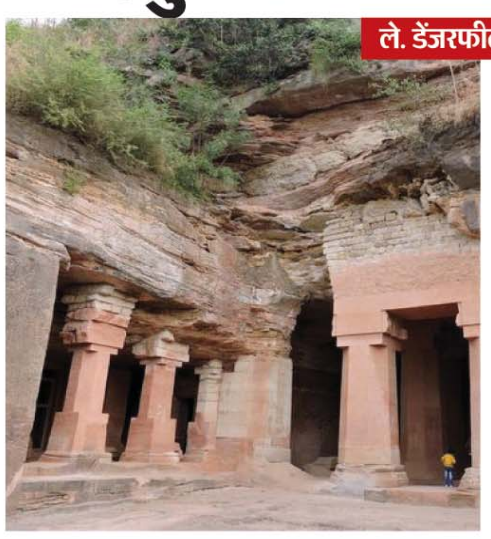

ले. डेंजरफील्ड को दिया जाता है गुफाओं की खोज का श्रेय

ऐतिहासिक रूप से, बाघ गुफाओं की खोज का श्रेय लेफ्टिनेंट डेंजरफील्ड को दिया जाता है, जिन्होंने 1818 में इसकी जानकारी प्रस्तुत की। इसके बाद 1854 में डॉ. ई. इम्पे ने इन गुफाओं का दौरा किया और 1856 में विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की। 1907-08 के बीच कर्नल सी.ई. लुआर्ड ने इन गुफाओं के स्केच और फोटोग्राफ तैयार किए। आगे चलकर 1923 में ए.के. हालदार और 1925 में एम.सी. डे ने भी इन पर अध्ययन किया। पुरातत्व विभाग की स्थापना के बाद एम.बी. गार्डे ने गुफाओं के संरक्षण और साफ-सफाई का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने प्रसिद्ध चित्रकारों से इन चित्रों की प्रतिकृतियाँ बनवाईं, जो आज ग्वालियर के गुजरी महल संग्रहालय और लंदन के ब्रिटिश म्यूज़ियम में प्रदर्शित हैं। 1927 में जॉन मार्शल ने भी संरक्षण कार्यों में भाग लिया। 1981 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने व्यापक संरक्षण कार्य किया, जिसके तहत पाँच गुफाएँ आज पर्यटकों के लिए खुली हैं।

यहां मिलती है नई ऊर्जा और शांतिः शिवशेखर शुक्ला

पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव और प्रबंध संचालक शेखर शुक्ला के अनुसार, यहाँ के ऑफबीट और मल्टी-स्पेशलिटी डेस्टिनेशन यात्रियों को नई ऊर्जा और शांति प्रदान करते हैं। राज्य में साहसिक गतिविधियाँ, सुरक्षित यात्रा और ईको-टूरिज्म जैसी पहलें यात्रा अनुभव को और बेहतर बनाती हैं। मध्य प्रदेश वास्तव में वास्तुकला, प्राकृतिक सौंदर्य और परंपराओं का अद्भुत संगम है।" बाघ गुफाओं की शैल-कट वास्तुकला प्राचीन भारतीय कारीगरों की अद्भुत प्रतिभा को दर्शाती है। बलुआ पत्थर की चट्टानों को काटकर बनाई गई इन गुफाओं में सुंदर प्रवेश द्वार, विशाल आंतरिक कक्ष और सुव्यवस्थित संरचना देखने को मिलती है। इनकी सबसे खास विशेषता है बाघ शैली की रंगीन भित्ति चित्रकारी, जो प्राचीन भारतीय कला के श्रेष्ठ उदाहरणों में गिनी जाती है। प्राकृतिक रंगों से बनाए गए ये चित्र दैनिक जीवन, प्रकृति और बौद्ध पौराणिक कथाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं। इन गुफाओं की भित्ति चित्रकारी की एक और विशेषता यह है कि इन्हें टेम्परा तकनीक से बनाया गया है, जो अजंता गुफाओं की शैली से मिलती-जुलती है।

दसवीं सालगिरह विशेषांक

10 साल भरोसे के

बेबाक खबर हर दोपहर

दोपहर मेट्रो

भोपाल, शनिवार 09 मई 2026

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष- 9, 2083 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-09, अंक - 303 | पेज 16, मूल्य 2 रुपए

राजस्थान-गुजरात, समय : शाम 7.30 बजे

सुभेंदु ने ली शपथ, कोलकाता में 'जय श्रीराम' का जयघोष

नया बंगाल...नया नेतृत्व

प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह सहित 20 मुख्यमंत्री शपथ ग्रहण समारोह में शामिल

कोलकाता, एजेंसी

सुभेंदु अधिकारी आज पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी के पहले मुख्यमंत्री बन गए। सुभेंदु ने बांग्ला में ईश्वर के नाम की शपथ ली। शपथ के बाद सुभेंदु, पीएम के पास गए और उन्हें झुककर प्रणाम किया। बंगाल के गवर्नर आरएन रवि ने सुभेंदु के अलावा 5 और विधायकों को मंत्री पद की शपथ दिलाई। इनमें दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, अशोक कीर्तनिया, खुदीराम टूडू और निषिथ प्रमाणिक शामिल रहे। शपथ समारोह में पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, एनडीए और बीजेपी शासित राज्यों के 20 मुख्यमंत्री मौजूद रहे। कार्यक्रम में

सबसे पहले मोदी ने मंच पर रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान पीएम ने भाजपा के 98 साल के कार्यकर्ता माखनलाल सरकार का सम्मान किया। मंच पर आते ही प्रधानमंत्री सीधे सरकार के पास गए, उन्हें शॉल ओढ़ाया और फिर उनके पैर छुए।

सुभेंदु की टीम के फिलहाल यह पांच चेहरे...

- **दिलीप घोष**- खड़गपुर सदर सीट से दूसरी बार विधायक बने हैं। मेदिनीपुर लोकसभा सीट से सांसद चुने गए थे। वे बीजेपी के महासचिव और प्रदेशाध्यक्ष भी रहे। उन्होंने इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया है।
- **अग्निमित्रा पॉल**- अग्निमित्रा पॉल पश्चिम बंगाल की असनसोल दक्षिण विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक हैं। वे 2021 में पहली बार इस सीट से विधायक चुनी गई थीं। 2026 में दूसरी बार जीत दर्ज की। उन्होंने 2022 का आसनसोल लोकसभा उपचुनाव और 2024 का मेदिनीपुर लोकसभा चुनाव भी लड़ा, लेकिन दोनों चुनाव हार गईं।
- **अशोक कीर्तनिया**- 52 साल के अशोक बनगांव उत्तर सीट से विधायक हैं। मतुआ समुदाय से आते हैं। राजनीतिज्ञ और व्यवसायी हैं।
- **खुदीराम टूडू**- रानीबांध विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक हैं। वे पेशे से शिक्षक रहे हैं। 2026 विधानसभा चुनाव में उन्होंने टीएमसी उम्मीदवार तनुश्री हांसदा को हराकर जीत दर्ज की। खुदीराम टुडू ग्रेजुएट हैं और लंबे समय से आदिवासी इलाकों में संगठन के साथ सक्रिय रहे हैं।
- **निषिथ प्रमाणिक**- निषिथ मथाभांगा विधानसभा सीट से विधायक हैं। वे 2026 में पहली बार विधायक बने हैं। इससे पहले 2019 में कूचबिहार लोकसभा सीट से सांसद रहे। केंद्र में गृह राज्य मंत्री व युवा मामलों और खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री रह चुके हैं। हालांकि 2024 लोकसभा चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था।

विजय की सरकार बनने पर अब भी पेंच: आज होने वाली शपथ टली

चेन्नई। तमिलनाडु में विजय सरकार बनाने पर राजनीतिक सस्पेंस अब भी बरकरार है। टीवीके चीफ और एक्टर विजय ने राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से मिलकर लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का दावा पेश किया, लेकिन उनके पास महज 116 विधायकों का ही समर्थन पत्र था। रिपोर्ट के मुताबिक बहुमत का आंकड़ा न होने के कारण आज होने वाला विजय का शपथ समारोह कैंसिल हो गया है। दरअसल, विजय ने

राज्यपाल को टीवीके, कांग्रेस, सीपीआई, सीपीआई (एम) के 116 विधायकों का समर्थन पत्र सौंपा था। आईयूएमएल और वीसीके ने अब तक समर्थन पत्र नहीं दिया है। दोनों के पास 2-2 विधायक हैं। विजय को भी बहुमत के लिए महज 2 विधायक और चाहिए। इससे पहले विजय ने 6 और 7 मई को भी सरकार बनाने का दावा पेश किया था। लेकिन राज्यपाल ने कहा कि 118 विधायकों का समर्थन दिखाए बिना वे सरकार बनाने के लिए आमंत्रित नहीं कर सकते। वीसीके चीफ थिरुमावलवन ने सार्वजनिक रूप से कहा कि उनकी पार्टी को समर्थन देगी। लेकिन देर रात तक राज्यपाल को समर्थन का औपचारिक पत्र नहीं सौंपा। इससे विजय की आज होने वाली सीएम पद की शपथ एक बार फिर टल गई। राज्यपाल कार्यालय से जुड़े सूत्रों के मुताबिक शुक्रवार शाम को हुई बैठक में विजय के पास केवल 116 विधायकों का ही रिकॉर्ड था।

सुब्रमणि बने देश के नए सीडीएस, स्वामीनाथन होंगे नौसेना प्रमुख

नईदिल्ली, एजेंसी

भारत सरकार ने देश की सैन्य व्यवस्था में बड़ा बदलाव करते हुए दो अहम नियुक्तियों का एलान किया है। सरकार ने लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि (सेवानिवृत्त) को देश का अगला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) नियुक्त किया है, जबकि वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन को भारतीय नौसेना का नया प्रमुख बनाया गया है। लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि 30 मई 2026 को जनरल अनिल चौहान का कार्यकाल पूरा होने के बाद नए सीडीएस का पद संभालेंगे।

पीए हत्याकांड: बदायूं पहुंची बंगाल पुलिस की टीम

बदायूं। पश्चिम बंगाल में भाजपा के घोषित मुख्यमंत्री चेहरे और वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी के निजी सहायक (पीए) की हत्या के मामले की जांच अब उत्तर प्रदेश तक पहुंच गई है। इसी सिलसिले में आरोपियों की तलाश करते हुए पश्चिम बंगाल पुलिस की टीम देर रात बदायूं पहुंची। पुलिस सूत्रों के मुताबिक जांच के दौरान आरोपियों के मोबाइल फोन की कॉल डिटेल संभल जिले के गुन्नौर क्षेत्र में मिलने के बाद बंगाल पुलिस वहां दबिश देने के लिए रवाना हुई थी।

न्यूज विंडो

भोपाल से जेवर एयरपोर्ट के लिए एक जुलाई से सीधी उड़ान

भोपाल। नवीं मुंबई के बाद नोएडा से भी भोपाल का हवाई कनेक्शन जुड़ने जा रहा है। इंडिगो ने इस रूट पर स्लॉट ले लिया है। एक जुलाई से उड़ान शुरू हो जाएगी। यह उड़ान शुरू होने के साथ ही भोपाल से दिल्ली रूट तक आठ उड़ानें हो जाएंगी। नोएडा का जेवर एयरपोर्ट से दिल्ली से लगभग 30 किलोमीटर दूर है। नवीं मुंबई एवं जेवर एयरपोर्ट से उड़ानों का संचालन हाल ही में शुरू हुआ है। दोनों देश के नए एयरपोर्ट हैं। इंडिगो ने समर शेड्यूल में नवीं मुंबई उड़ान शुरू की थी। अब एक जुलाई से भोपाल से जेवर तक सीधी उड़ान शुरू करने की तैयारी की है। इस रूट पर कंपनी 72 सीटों वाला एटीआर विमान संचालित करेगी।

एमपी-राजस्थान में तापमान 43 डिग्री के पार पहुंचा

भोपाल/लखनऊ/जयपुर। उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान में बारिश के साथ ओले गिरे। वहीं मध्य भारत में फिर से तेज गर्मी पड़ने लगी है। मध्य प्रदेश के 13 जिलों में आज आंधी-बारिश का अलर्ट है। रतलाम में पारा 43.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इधर, गुजरात के अहमदाबाद में तापमान 43.1 डिग्री और महाराष्ट्र के वाशिम में 42.8 डिग्री दर्ज किया गया। राजस्थान का बाड़मेर देश में सबसे गर्म रहा। यहां तापमान 44.6 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं जैसलमेर और फलोदी में तापमान 44 डिग्री रहा। बिहार के पटना समेत 7 जिलों में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। पेड़ और बिजली गिरने से 9 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 5 मौत राजधानी पटना में हुई।

कुशीनगर में हादसा, गड्ढे में डूबने से तीन बच्चों की मौत

कुशीनगर। सुबह कसया थाना क्षेत्र के ग्रामसभा मैनपुर के टोला दीनापट्टी स्थित एक ईट भट्ठे पर ईट के लिए मिट्टी निकाले गए गड्ढे में बरसात का पानी भरा था जिसमें चार मासूम बच्चे खेलते खेलते गड्ढे में गिर गए। जिसमें से एक बच्चा किसी तरह गड्ढे से निकलकर बाहर आया और परिजनों को सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंच परिजनों ने सभी बच्चों को बाहर निकाला और अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने जांचोपरांत तीनो बच्चों को मृत घोषित कर दिया।

पंजाब सरकार के मंत्री संजीव अरोड़ा के घर पर ईडी की रेड

चंडीगढ़, एजेंसी

पंजाब के मंत्री संजीव अरोड़ा के चंडीगढ़ स्थित आवास पर आज सुबह ईडी की रेड हुई है। सेक्टर दो में अरोड़ा के आवास पर सुबह करीब 20 गाड़ियों में टीम पहुंची है। मंत्री संजीव अरोड़ा पर महीने भर में ईडी की दूसरी कार्रवाई है। इससे पहले उनके लुधियाना के ठिकानों पर दबिश हुई थी।

सीएम मान बोले- पंजाब झुकेगा नहीं...

वहीं इस रेड पर भड़के सीएम भगवंत मान ने ट्वीट कर भाजपा पर निशाना साधा है। सीएम ने एक्स पर लिखा-आज फिर बीजेपी की ईडी संजीव अरोड़ा के घर आई है। एक साल में यह तीसरी बार है जब बीजेपी की ईडी उनके घर आई है, और एक महीने में दूसरी बार। फिर भी उन्हें कुछ नहीं मिला। मैं मोदी जी से कहना चाहता हूं कि पंजाब गुरुओं की धरती है। औरंगजेब भी इसे झुका नहीं पाया था। यह भगत सिंह की धरती है, जिन्होंने अंग्रेजों के सामने कभी सिर नहीं झुकाया; इसलिए पंजाब मोदी की चालों के आगे कभी नहीं झुकेगा। पंजाब, ईडी और भाजपा के इस अनैतिक गठबंधन को खत्म कर देगा।

पंजाब में हाई अलर्ट, खुफिया एजेंसियों के इनपुट के बाद बढ़ी चौकसी

जालंधर। जालंधर में हुए धमाके के बाद पूरे पंजाब में हाई अलर्ट घोषित कर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। खुफिया एजेंसियों से मिले इनपुट के बाद पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश जारी किए गए हैं। सूत्रों के अनुसार चंडीगढ़ से पहुंचे आला पुलिस अधिकारियों ने जालंधर में उच्च स्तरीय बैठक कर पूरे घटनाक्रम की समीक्षा की।

आज का कार्टून

इस्लामाबाद में एक बार फिर शांति वार्ता की संभावना

ट्रम्प बोले- हमारे प्रस्ताव पर जवाब का इंतजार

न्यूक्लियर प्रोग्राम पर समझौते को तैयार नहीं ईरान

तेहरान/वॉशिंगटन. एजेंसी

अमेरिका और ईरान के बीच तनाव कम करने को लेकर अगले हफ्ते पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में फिर बातचीत शुरू हो सकती है। वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के मुताबिक दोनों देश मध्यस्थों के जरिए एक समझौता ड्राफ्ट पर काम कर रहे हैं, जिससे एक महीने तक चलने वाली औपचारिक वार्ता का रास्ता खुल सकता है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि अमेरिका की तरफ से प्रस्तावित 14 बिंदुओं वाले ड्राफ्ट में ईरान के परमाणु कार्यक्रम, होर्मुज स्ट्रेट में तनाव कम करने और ईरान के एनरिच्ड यूरेनियम भंडार को किसी

दूसरे देश भेजने जैसे मुद्दे शामिल हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि उन्हें ईरान की तरफ से जल्द जवाब मिलने की उम्मीद है। अगर बातचीत आगे बढ़ी तो सीजफायर को और लंबा किया जा सकता है। साथ ही अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान ने साफ कर दिया है कि वह अपने न्यूक्लियर प्रोग्राम या हाईली एनरिच्ड यूरेनियम पर कोई समझौता नहीं करेगा।

ईरान को हथियार खरीदने में मदद करने पर चीन और हांगकांग की कंपनियों पर अमेरिका का बैन

अमेरिका ने चीन और हांगकांग समेत 10 व्यक्तियों और कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिया है। ट्रंप ने इन पर आरोप लगाया है कि इन्होंने ईरान को शाहिद ड्रोन और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम में इस्तेमाल होने वाले हथियारों के पुर्जे और कच्चा माल खरीदने में मदद की है। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग द्वारा घोषित ये प्रतिबंध अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के आगामी चीन दौरे से कुछ दिन पहले लगाए गए हैं। ट्रंप चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ बातचीत के लिए बीजिंग जाने वाले हैं।

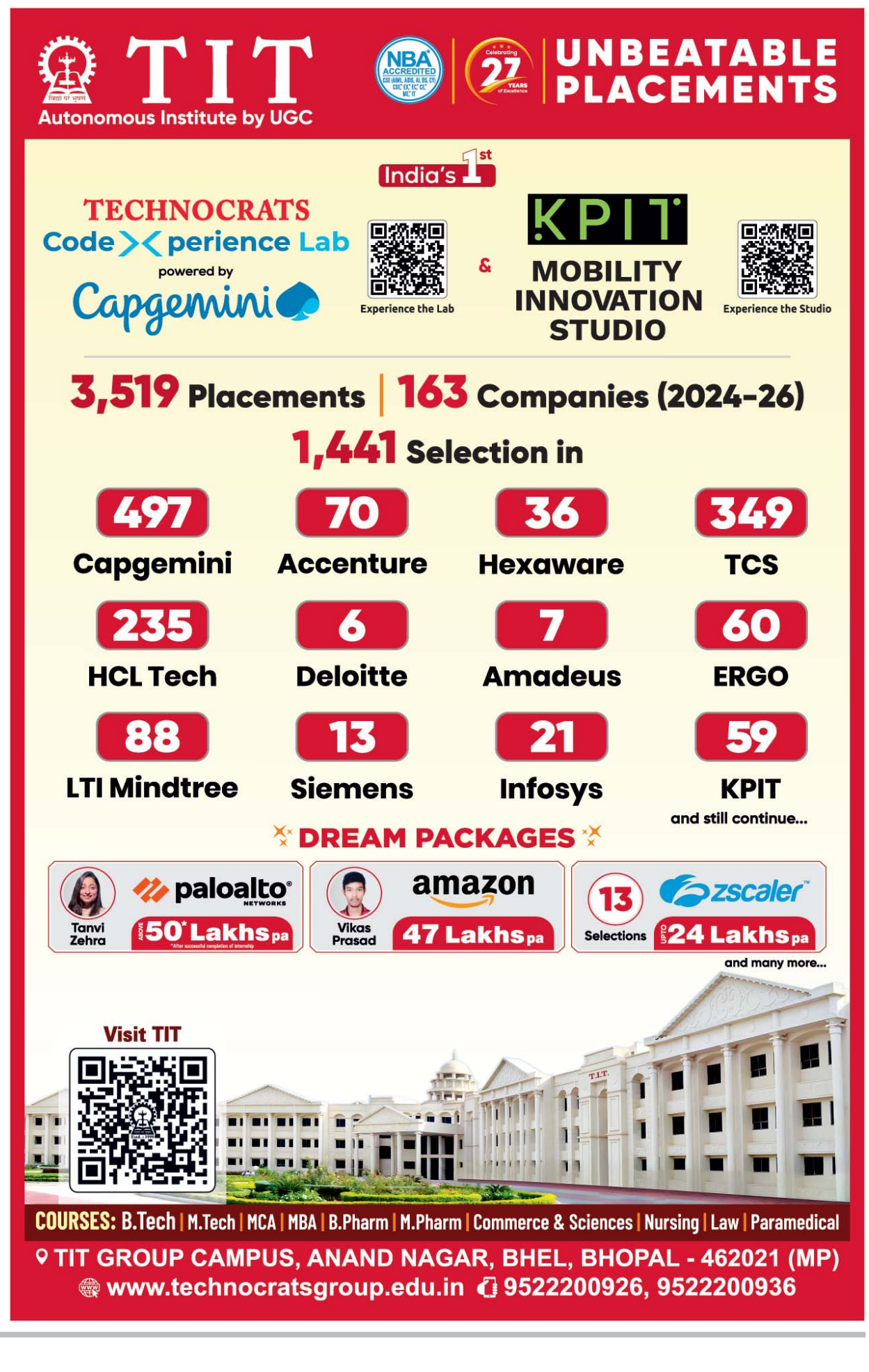

जनता की आवाज को जीवित रखने का सशक्त उदाहरण

मुकेश नायक
अध्यक्ष, मीडिया विभाग
मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी

मेहनत और जनसरोकारों के प्रति समर्पण के साथ किसी समाचार पत्र को लगातार 10 वर्षों तक चलाना अत्यंत प्रशंसनीय और प्रेरणादायक उपलब्धि है। यह केवल एक अखबार की यात्रा नहीं, बल्कि संघर्ष, विश्वास, प्रतिबद्धता और जनता की आवाज को जीवित रखने का एक सशक्त उदाहरण है।

दोपहर मेट्रो अखबार के सफलतापूर्वक 10 वर्ष पूर्ण होने पर मैं संस्थान से जुड़े समस्त पत्रकार साथियों, संपादकीय टीम, प्रबंधन एवं पाठकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

आज के समय में जब बड़े-बड़े मीडिया संस्थान संसाधनों और प्रभाव के बल पर अपनी उपस्थिति बनाए रखते हैं, ऐसे दौर में एक सामान्य व्यक्ति द्वारा अपने संघर्ष, मेहनत और जनसरोकारों के प्रति समर्पण के साथ किसी समाचार पत्र को लगातार 10 वर्षों तक चलाना अत्यंत प्रशंसनीय और प्रेरणादायक उपलब्धि है। यह केवल एक अखबार की यात्रा नहीं, बल्कि संघर्ष, विश्वास, प्रतिबद्धता और जनता की आवाज को जीवित रखने का एक सशक्त उदाहरण है। दोपहर मेट्रो ने पिछले एक दशक में समाज के उन मुद्दों को प्रमुखता से उठाया, जो आम जनता के जीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। गरीब, किसान, मजदूर, युवा, व्यापारी और समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज को जिस गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ इस समाचार पत्र ने मंच दिया है और दोपहर मेट्रो ने इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाया है।

राष्ट्रीय स्तर पर जनहित से जुड़े विषयों को उठाना, सामाजिक सरोकारों को निरंतर प्रकाशित करना और निष्पक्ष पत्रकारिता के मूल्यों को बनाए रखना आसान कार्य नहीं होता। इसके लिए साहस, धैर्य और जनसेवा की भावना की आवश्यकता होती है। दोपहर मेट्रो ने इन सभी मूल्यों को अपने कार्यों से सिद्ध किया है। यह उपलब्धि केवल संस्थान की सफलता नहीं, बल्कि उन पाठकों के विश्वास की भी जीत है जिन्होंने इस अखबार को लगातार समर्थन और स्नेह दिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दोपहर मेट्रो आने वाले समय में भी जनआवाज को मजबूती देने, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने और समाज के हर वर्ग के मुद्दों को प्रमुखता से उठाने का कार्य निरंतर करता रहेगा। दोपहर मेट्रो परिवार को इस गौरवपूर्ण 10 वर्ष की यात्रा के लिए पुनः हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भाजपा का विस्तार

बदलते भारत की नई राजनीतिक धारा

आशीष उषा अग्रवाल
भाजपा, मप्र के
प्रदेश मीडिया प्रभारी

भारतीय राजनीति में कुछ दल केवल चुनावी जीत तक सीमित नहीं रहते; वे समाज, विचार और जनविश्वास के नए आयाम भी गढ़ते हैं। भारतीय जनता पार्टी ऐसी ही ऐतिहासिक राजनीतिक यात्रा का जीवंत उदाहरण है। 1984 में लोकसभा में मात्र दो सीटों से शुरुआत करने वाली यह पार्टी आज न केवल भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बन चुकी है, बल्कि विश्व स्तर पर भी सबसे बड़े संगठनों में अपनी पहचान बना चुकी है। भाजपा की यह यात्रा केवल चुनावी सफलता की कहानी नहीं है; यह वैचारिक परिवर्तन, संगठन शक्ति और जनविश्वास का प्रतीक है।

स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक भारतीय राजनीति पर कांग्रेस का प्रभाव रहा, लेकिन समय के साथ उसकी नेतृत्व-केंद्रित राजनीति, वैचारिक अस्पष्टता और संगठनात्मक कमजोरियाँ स्पष्ट होने लगीं। इस अवसर पर भाजपा ने ÷राष्ट्र प्रथम÷ और ÷अंत्योदय÷ जैसे मूल मंत्रों के साथ राजनीति को जनसेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाया। परिणामस्वरूप, भाजपा ने धीरे-धीरे देश के हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर समुदाय में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाई और भारतीय राजनीति में एक नई दिशा स्थापित की। यह केवल सत्ता प्राप्ति का परिणाम नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता, विकास और जनसंपर्क आधारित राजनीति की मजबूती का प्रमाण है।

भाजपा का विस्तार

दो सीटों से बहुमत तक की यात्रा

1984 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को केवल दो सीटें मिली थीं। उस समय शायद किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि यह दल आने वाले दशकों में भारतीय राजनीति की केंद्र शक्ति बन जाएगा। भाजपा ने अपने संगठन, विचारधारा और जनसमर्थन के बल पर धीरे-धीरे हर राज्य और क्षेत्र में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाई। 2024 के लोकसभा चुनाव के परिणामों के अनुसार, भाजपा के पास 240 लोकसभा सांसद हैं, जबकि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का कुल बहुमत 293 सांसदों तक पहुंच गया है। राज्यसभा में भाजपा के सांसदों की संख्या 106 है, और हाल ही में आम आदमी पार्टी के कुछ सांसदों के भाजपा में शामिल होने के बाद यह आंकड़ा बढ़कर 113 तक पहुंच गया। ह्ष्ट्र की कुल संख्या राज्यसभा में अब 148 हो गई है। पाँच राज्यों के हालिया विधानसभा चुनाव परिणामों के अनुसार, भाजपा के विधायकों की संख्या 1,807 है, जबकि एनडीए के विधायकों की संख्या 2,315 है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हरियाणा, असम, गोवा, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और ओडिशा में भाजपा ने अपनी सरकारें बनाई हैं। इसके साथ ही अब पश्चिम बंगाल में भी भाजपा की राजनीतिक हिस्सेदारी बढ़ती दिखाई दे रही है। इस प्रकार देश के कुल 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भाजपा समर्थित सरकारें हैं, और 17 राज्यों में भाजपा की सीधे सत्ता में भागीदारी है।

संगठन और नेतृत्व - सफलता का आधार

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत इसका संगठन है। बूथ स्तर तक मजबूत नेटवर्क और कार्यकर्ता सक्रियता पार्टी की रणनीति का मूल है। भाजपा केवल चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सेवा और जनसंपर्क में लगातार सक्रिय रहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने भाजपा को नई गति दी है। मोदी सिर्फ एक राजनीतिक नेता नहीं हैं, बल्कि जनविश्वास के प्रतीक भी हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, जनधन योजना और हर घर नल-जल जैसी योजनाओं ने सीधे गरीब और मध्यम वर्ग तक पार्टी की पहुँच बढ़ाई। गरीब कल्याण, पारदर्शिता, डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और महिला सशक्तिकरण जैसे विषय भाजपा की विचारधारा और लोकप्रियता को मजबूती प्रदान करते हैं।

दक्षिण भारत में बढ़ता प्रभाव

पहले यह माना जाता था कि दक्षिण भारत भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, लेकिन हाल के दशक में इसका परिदृश्य बदल गया है। भाजपा ने दक्षिण भारत में संगठन विस्तार, स्थानीय नेतृत्व और सांस्कृतिक जुड़ाव के माध्यम से अपनी पहचान बनाई है। 2024 के लोकसभा चुनाव और हालिया विधानसभा चुनाव परिणामों ने यह संकेत दिया कि दक्षिण भारत में भाजपा का जनाधार तेजी से बढ़ रहा है। तेलंगाना में भाजपा ने मत प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। केरल में पहली बार भाजपा ने लोकसभा सीट जीतकर इतिहास रचा। हाल ही में वहां विधानसभा चुनाव में 3 सीटें भाजपा के खाते में गईं। तमिलनाडु में भी भाजपा ने पहली बार विधानसभा सीट जीतकर अपने संगठनात्मक विस्तार और वोट शेयर को मजबूत किया। कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में भी भाजपा या एनडीए गठबंधन ने प्रभावी उपस्थिति दर्ज की है। यह विस्तार केवल चुनावी सफलता नहीं, बल्कि विकास, सुशासन, सांस्कृतिक अस्मिता और नेतृत्व में जनता के बढ़ते विश्वास का प्रतीक है।

कांग्रेस और भाजपा - दो अलग राजनीतिक दृष्टियां

भारतीय राजनीति में कांग्रेस और भाजपा दो अलग राजनीतिक संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कांग्रेस लंबे समय तक स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत पर आधारित रही, लेकिन समय के साथ उसका संगठन कमजोर हुआ। वहीं, भाजपा ने कैडर आधारित संगठन और वैचारिक स्पष्टता के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सुशासन और अंत्योदय की राजनीति की बात करती है, जबकि कांग्रेस पर अक्सर अवसरवादी गठबंधनों और नेतृत्व-केंद्रित राजनीति का आरोप लगता रहा। भाजपा ने राजनीतिक विमर्श को जातीय समीकरणों से हटाकर विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, सांस्कृतिक गौरव और गरीब कल्याण जैसे विषयों की ओर मोड़ा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का योगदान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भाजपा के संगठन और वैचारिक विकास में अहम भूमिका निभाई है। संघ ने दशकों तक समाज सेवा, संगठन और राष्ट्र चेतना के काम किए हैं। इसकी विचारधारा भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता और स्वदेशी चिंतन पर आधारित है। संघ की शाखाओं, सेवा कार्यों और सामाजिक अभियानों ने राष्ट्रवादी विचारधारा को गांव-गांव तक पहुंचाने का काम किया। समय के साथ कम्युनिस्ट और कांग्रेस जैसी पारंपरिक पार्टियां सीमित होती गईं, जबकि भाजपा का विस्तार लगातार बढ़ता गया।

मध्यप्रदेश में भाजपा की सफलता और जनविश्वास

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार विकास, संस्कृति, सुशासन और जनकल्याण के समन्वित मॉडल को प्रभावी ढंग से लागू कर रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने, कार्यकर्ताओं में ऊर्जा बनाए रखने और भाजपा की वैचारिक एवं राजनीतिक पकड़ मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। राष्ट्रीय नेतृत्व की दूरदृष्टि, प्रदेश सरकार की जनहितकारी कार्यशैली और संगठन की मजबूत संरचना का यही समन्वय भाजपा को निरंतर विस्तार, व्यापक जनसमर्थन और अटूट जनविश्वास प्रदान कर रहा है। भारतीय जनता पार्टी की यात्रा केवल चुनावी सफलता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रवादी विचारधारा, संगठन शक्ति और जनसेवा आधारित राजनीति की स्वीकार्यता का प्रमाण है। भाजपा अब केवल उत्तर भारत या हिंदी पट्टी की पार्टी नहीं रही, बल्कि पूरे देश की राजनीतिक धारा का केंद्र बन चुकी है। इसके संगठन, नेतृत्व और व्यापक जनसमर्थन ने इसे लोकतंत्र में स्थायी और प्रभावशाली शक्ति बना दिया है। भाजपा का उदाहरण यह दिखाता है कि विचारधारा, संगठन और जनसेवा का समन्वय ही आधुनिक राजनीति में स्थायी सफलता की कुंजी है। पार्टी का विस्तार और जनविश्वास यह संकेत देता है कि भारतीय राजनीति अब विकास, सुशासन और राष्ट्रवादी विचारधारा की नई दिशा में आगे बढ़ रही है।

मोदी युग- बदलती राजनीतिक धारा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय राजनीति में कई बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, श्रीराम मंदिर निर्माण, जी-20 की सफल मेजबानी, डिजिटल ₹ ाति, आत्मनिर्भर भारत और वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा ने भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत विकल्प बनाया। भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं रही, बल्कि करोड़ों कार्यकर्ताओं और समर्थकों का सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन बन गई है। पार्टी की ताकत उसके संगठन, नेतृत्व और राष्ट्रवादी विचारधारा में निहित है। वर्तमान दौर केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि वैचारिक पुनर्स्थापन का है। जनता अब जातिवाद, तुष्टिकरण और परिवारवाद से आगे बढ़कर विकास, सुशासन, राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक गौरव को प्राथमिकता दे रही है।

संघ शताब्दी वर्ष में डॉ. हेडगेवार का स्मरण

डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी
संघ विचारक

आ सिंधु-सिंधु पर्यन्ता, यस्य भारत भूमिका ...
पितृभू-पुण्यभू भुश्चैव सा वै हिंदू रीति स्मृता...
इस श्लोक के अनुसार भारत के वह सभी लोग हिंदू हैं जो इस देश को पितृभूमि-पुण्यभूमि मानते हैं

वीर दामोदर सावरकर के इस दर्शन को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मूलाधार बनाकर संघ का संगठन, संस्थापना करने वाले डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का प्रथम श्रेणी में डाक्टरी की परीक्षा को पास करना और उसके बाद चिकित्सा के पेशे से सर्वथा भिन्न समाज व राष्ट्र सेवा में आजीवन अविवाहित रहकर आकंठ डूब जाना एक गहन जिज्ञासा का विषय है। केशव बलिराम हेडगेवार जी को हम यदि पूर्ण रूप से अपनी कल्पना में पिरोने का कार्य करें तो यह कार्य तनिक दुष्कर ही होगा। यह कार्य दुष्कर इसलिए होगा क्योंकि अधिकतर विचारक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का प्रथम श्रेणी में डाक्टरी की परीक्षा को पास करना और उसके बाद चिकित्सा के पेशे से सर्वथा भिन्न समाज व राष्ट्र सेवा में आजीवन अविवाहित रहकर आकंठ डूब जाना एक गहन जिज्ञासा का विषय है। हेडगेवार जी के विषय में कहते, लिखते, सोचते समय अपनी दृष्टि को संघ केन्द्रित कर लेते हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को ही उनके राष्ट्रीय शिल्प का मानक या केंद्र माना जाता है जो कि एक अधूरी, अपूर्ण व मिथ्या अवधारणा है। वस्तुतः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ उनके विशाल, महत्वाकांक्षी व विस्तृत वितान वाले भारत एक विश्व गुरु व परम वैभवमयी भारत माता के लक्ष्य का एक पाथेय भर है। वस्तुतः डॉ. हेडगेवार जी का समूचा जीवनचरित्र एक व्यापक एवं गहन अनुसंधान के साथ साथ सहज चिंतन व चर्चा का भी विषय है। उनके जीवन के विभिन्न गुणात्मक भाग गंभीर अध्येताओं व समाज शास्त्रियों हेतु हमेशा ही एक खोज का विषय बने रह सकते हैं। संक्षेप में यह कि लोग विचारते हैं कि संघ ही डॉ. हेडगेवार का जीवन लक्ष्य था जबकि सत्य यह है कि संघ को डॉ. साहब ने केवल अपना माध्यम बनाया था; उनका मूल लक्ष्य तो स्वर्णिम भारत, भारत माता की परम वैभव शिखर पर स्थापना व हिंदूत्व ध्वजा को विश्व भर में फहराना ही था; जो कि आज संघ का परम लक्ष्य है। यहां यह भी कहा जा सकता है कि डॉ. हेडगेवार जी ने स्वयं को तो संघ के रूप में संपूर्णतः व्यक्त कर दिया था किंतु संघ की संघटना, विचार शक्ति, योजना, कार्यशक्ति, कल्पना शक्ति, संवेदनशीलता को उन्होंने इस प्रकार शिल्प किया था कि संघ कभी भी, किसी भी काल में, किसी भी परिस्थिति में संपूर्णतः व्यक्त हो ही नहीं सकता है!! डाक्टर साहब के संघ को सदैव स्वयं अव्यक्त रहकर समाज को अभिव्यक्त करना आता है। संघ को स्वयं कुछ भी न करके सब कुछ कर देने का दिव्य अकर्ता भाव धारण करना आता है। संघ को सर्वदर्शी होकर कहीं भी न दिखने की दिव्य दृष्टि से परिपूर्ण डॉ. साहब ने ही किया है। संघ का यही निर्लिप्त भाव डॉ. हेडगेवार जी की सबसे बड़ी सफलता नहीं बल्कि उनकी अलौकिक उपलब्धि है। संघ का यही स्वरूप डाक्टर हेडगेवार जी को संघ से इतर ले जाकर एक संगठन शास्त्री ही नहीं अपितु एक ऐसे समाज शास्त्री के स्थान पर बैठाता है जिसमें समाज की दृष्टि राष्ट्र केन्द्रित होती है। यही कारण हैं कि आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व इसके देवतुल्य प्रचारक और इसके कार्यकर्ता भारत देश व इसके देशज समाज हेतु अमूल्य निधि हो गए हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आज सम्पूर्ण विश्व हेतु कौतुहल व जिज्ञासा के साथ साथ श्रद्धा विषय हो गया है। विश्व के समस्त संगठन विज्ञानी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इस विचित्र किंतु सत्य संगठन के अंतर्तत्व, मर्म व गुंठन-अवगुंठन को समझना चाहते हैं। किंतु, यह भी सत्य है कि संघ बड़े बड़े ज्ञानियों के समझ नहीं आता है और जब यही महाज्ञानी अपने भोलेपन व कुछ न जानने के बालपन के भाव से संघ की शाखा में जाते हैं तो संघ को सहजता से संपूर्णतः जान लेते हैं। डॉ. हेडगेवार जी को इस दृष्टि से हम जादूई संगठन कर्ता कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जो संघ को सतही तौर पर भी जानते हैं वे इस तथ्य से परिचित हैं कि डॉ. हेडगेवार रचित संघ में इसके संविधान का महत्व शून्य के जैसा है। संघ में जो लिखित संविधान है उसे केवल इसलिए अपनाया गया क्योंकि एक औपचारिक संगठन संस्थापना व कानूनी आवश्यकताओं हेतु यह आवश्यक था। डॉ. साहब के अनुसार तो संघ का संविधान केवल एक शब्द से परिभाषित व व्यक्त होता है और वह शब्द है - भारत माता। व्यक्ति से बड़ा समाज,

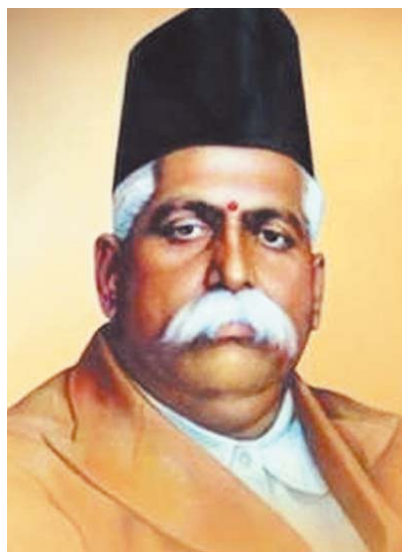

समाज से बड़ी जाति, जाति से बड़ा धर्म और धर्म से सर्वोपरि भारत माता, अर्थात राष्ट्रवाद; यही संघ का अलिखित किंतु अनिवार्य संविधान है। आज राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर कौतुहल का विषय भी यही है कि अपने संविधान को कभी खोलने पलटने व देखने भी न वाले संघ को आखिर डॉ. हेडगेवार ने कौन सी जादुई प्राणशक्ति दी है जिससे यह सदैव स्वस्फूर्त, स्वशासी, स्वमेव स्वायत्त होकर भी घोर अनुशासित रूप में कार्य करता रहता है। डॉ. हेडगेवार जी संघ की स्थापना के पूर्व अपने विद्यार्थी जीवन में बंगाल के क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति में सक्रिय रूप से कार्यरत रहे थे। वे युवावस्था में ही उनके दिव्य अनुभवों व कार्य कलापों के चलते हिन्दू महासभा बंगाल प्रदेश के उपाध्यक्ष नियुक्त कर दिए गए थे। कांग्रेस में भी वे कुछ समय तक सक्रियता से दायित्व निभाते रहे थे। संघ की स्थापना के पूर्व का उनका जीवन, कार्यानुभव व संपर्क कतई ऐसे नहीं माने जा सकते थे जिनसे 1925 से लेकर आज तक के शत वर्ष के होने जा रहे संघ के किसी भी रूप की कल्पना की जा सकती हो। यदि प्रश्न यह है कि संघ के इस अनहद, विहंगम, विराट व आत्मा में बस जाने वाले सूक्ष्म स्वरूप की कल्पना डॉ. साहब कैसे कर पाए थे तो उत्तर यह है कि संघ केवल और केवल उनकी ईश्वरीय अंतर्चेतना का परिणाम है। तथ्यों के स्थूल व भौतिक कल्पना से चलने वाले संगठन विज्ञानी इसे समझे न समझे किंतु अपने भोले मन से चलने व कार्य करने वाला एक स्वयंसेवक आज भी संगठन में डॉ. हेडगेवार जी को स्वयं के सम्मुख प्रकाशपुंज के रूप में साक्षात उपस्थित पाता है। प्रकाश पुंज के रूप में सतत उपस्थिति के इस तथ्य का अलौकिक आभास एक सामान्य स्वयंसेवक भी अपने आद्य सरसंघचालक प्रणाम की प्रक्रिया में बड़ी सहजता से करता रहता है। जो पाठक आद्य सरसंघचालक प्रणाम की परंपरा को नहीं समझते हैं उन्हें इसे समझने का सहज प्रयास करना चाहिए।

व्यक्ति के आंतरिक व्यक्त-अव्यक्त गुणों, कथित-अकथित क्षमताओं को उभारना व उसकी कार्यशीलता का भरपूर दोहन करना वे भली भांति जानते थे। संघ की आंतरिक कार्य प्रणाली को उन्होंने इस प्रकार विकसित किया कि चाहे कोई भी व्यक्ति स्वयंसेवक बने, उसकी क्षमताओं का सौ प्रतिशत उपयोग राष्ट्र सेवा में संघ कर ही लेगा। डाक्टर साहब ने अपने इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु कई प्रकार के नवाचार किये व नए नए प्रयोग अपनाए। डॉ. साहब ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने व्यक्ति की क्षमताओं को उभारने के लिये नये-नये तौर-तरीके विकसित किये और उनकी कल्पना व रीति नीति आज सौ वर्षों पश्चात भी पूर्ण प्रासंगिक, सटीक व सफल है।

उल्लेखनीय है कि डॉ. हेडगेवार जी ने बंगाल में हुए अपने जीवन के प्रारम्भिक सार्वजनिक अनुभवों से राष्ट्र सेवा हेतु अर्ध सैनिक संगठन की कल्पना की थी। उन्होंने 1925 की विजयादशमी के शुभ दिन आरएसएस की स्थापना के समय इसके अर्धसैनिक स्वरूप की ही कल्पना भी प्रस्तुत कर दी थी, किंतु शीघ्र ही वे सैन्य संगठन की सीमाओं को चिन्हित कर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा की यात्रा की ओर तीव्रता से अग्रसर हो गए थे। संघ की यह यात्रा अब तक अपने अटूट, अनवरत, अविभक्त स्वरूप में जारी है। संघ के स्थापना काल में अंग्रेजी का एक शब्द प्रचलित था मिलिशिया। संघ स्थापना के मूल में इस शब्द का ही वितान था। मिलिशिया का अर्थ होता है, सिविल सोसाईटी से देश सेवा हेतु निकले हुए अवैतनिक सैनिक। इस अंग्रेजी शब्द मिलिशिया के अंतर्तत्व में डॉक्टर साहब ने वीर सावरकर जी के हिंदुत्व दर्शन को स्थापित किया था जिसकी यह अविभाज्य मान्यता थी कि भारत के वह सभी लोग हिंदू हैं जो इस देश को मातृभूमि, पितृभूमि-पुण्यभूमि मानते हैं। इनमे सनातनी, आर्यसमाजी, जैन, बौद्ध, सिख आदि पंथों एवं धर्म विचार को मानने वाले व उनका आचरण करने वाले समस्त जन को हिंदू के व्यापक दायरे में रखा गया था। भारतीय समाज में सामाजिक समरसता की स्थापना व प्रत्येक स्तर पर अस्पृश्यता की समाप्ति इस संगठन के मूल मंत्र में स्थापित है।

डॉक्टर साहब शिल्पित संघ आज अपनी सैकड़ो समवैचारिक संगठनों व इन संगठनों के हजारों-लाखों प्रकल्पों के साथ भारत की प्रत्येक श्वांस में अपने पूर्ण स्वरूप में विद्यमान दिखता है। यह बड़ा ही सशक्त, गर्वोक्त किंतु विनम्र तथ्य है कि इतनी विराट, व्यापक व व्यवस्थित उपस्थिति के बाद भी संघ अपने किसी मंच से अपनी इस बलवान, प्रभासाक्षी व सर्वव्यापी उपस्थिति की उद्घोषणा नही करता है किंतु शाखा जाने वाले किसी साधारण से स्वयंसेवक के माध्यम से समाज में पुर्णतः व्यक्त हो जाता है। श्री केशव का ही पुण्य प्रताप है कि आज संघ सर्वोपरि होते हुए भी अपने उसी दैन्य किंतु दैवीय स्वरूप में विनयावत स्थिति में दिखता है।

बैरसिया रोड पर टाइगर का मूवमेंट...

दहशत में सात गांव, 10 दिन में पांच मवेशियों का किया शिकार

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

भोपाल के बैरसिया रोड पर टाइगर के मूवमेंट से 7 गांवों के लोग दहशत में हैं। पिछले 10 दिनों में टाइगर 5 गाय और भैंसों का शिकार कर चुका है। इस वजह से लोगों ने रात में रास्ता बदल लिया है। वे 5 से 6 किलोमीटर घूमकर आना-जाना कर रहे हैं। कनेरा गांव और उससे जुड़े करोंदखुर्द, कड़ैया, छापर, अगरिया, मुगालिया कोट और चांचड़ में टाइगर का मूवमेंट देखा गया है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट ने बताया कि हलाली नदी के किनारे टाइगर का मूवमेंट लगातार नजर आ रहा है। करीब 10 दिन पहले कनेरा में सबसे पहले टाइगर दिखाई दिया था। वहीं, गुरुवार-शुक्रवार की रात उसने एक और गाय का शिकार कर लिया।

रात में शिकार कर रहा टाइगर

ग्रामीणों ने बताया कि टाइगर रात में ही शिकार कर रहा है। इस वजह से किसानों ने रात में खेतों में जाना बंद कर दिया है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट ने बताया कि कई लोगों ने रास्ता बदल लिया है। वे 5 से 6 किमी घूमकर आना-जाना कर रहे हैं, ताकि उनका बाघ से सामना न हो। ग्रामीणों ने टाइगर के मूवमेंट की सूचना वन विभाग को भी दी है। वन विभाग की टीम ने सर्चिंग की, लेकिन टाइगर का पता नहीं चल सका। ग्रामीणों का कहना है कि टाइगर पहाड़ी और नदी किनारे के रास्तों से गांव तक पहुंच रहा है। वह खलिहानों और गांव के बाहर बने घरों में बंधे मवेशियों को अपना शिकार बना रहा है।

कब्रिस्तान के नीचे से मुस्लिम समुदाय को मेट्रो गुजरने पर आपत्ति

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

बड़ा बाग कब्रिस्तान के नीचे से मेट्रो गुजरने पर मुस्लिम समुदाय ने आपत्ति जताई है। धार्मिक भावनाओं के उल्लंघन, बिना अनुमति निर्माण और वक्फ संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने के आरोपों के साथ यह मामला वक्फ ट्रिब्यूनल पहुंच गया है। मामले में अब 14 मई को सुनवाई होगी, जिसमें मेट्रो अपना पक्ष रखेगा। दरअसल भोपाल टॉकीज क्षेत्र के बड़ा बाग कब्रिस्तान के नीचे प्रस्तावित अंडरग्राउंड मेट्रो लाइन और नारियलखेड़ा की वक्फ भूमि पर किए जा रहे निर्माण कार्य को लेकर मुस्लिम समाज ने विरोध दर्ज करा रहा है। शाही औकाफ इस मामले में पक्षकार के रूप में सामने आया है। वहीं मुस्लिम त्योहार कमेटी इसको लेकर आक्रामक रूख अख्तियार किये हुए है। जिससे शहर के विकास की रफ्तार धीमी पड़ने का खतरा मंडराने लगा है।

कार ने बाइक को टक्कर मारी, एक की मौत

भोपाल। भोपाल के बैरसिया इलाके में बाइक से पूजन सामग्री लेकर घर लौट रहे पुजारी और उसके साथी को तेज रफ्तार कार ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बाइक करीब 50 मीटर तक घिसटती चली गई। घटना में घायल पुजारी की इलाज के दौरान मौत हो गई।

बेबाक खबर हर दोपहर
दोपहर मेट्रो

दोपहर मेट्रो समाचार पत्र की 10वीं वर्षगांठ पर क्रेडाई भोपाल की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। बीते दस वर्षों में आपने निष्पक्ष, निर्भीक एवं जनसरोकारों से जुड़ी पत्रकारिता के माध्यम से समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य,निरंतर सफलता एवं जनहितकारी पत्रकारिता के इस सफर के सतत विस्तार की कामना करते हैं।

CREDAI BHOPAL

मंगल कलश यात्रा के साथ अखंड शनि महायज्ञ शुरू

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

मंगल कलश यात्रा के साथ नेहरू नगर स्थित नवग्रह मंदिर में आज से नौ दिवसीय अखंड शनि महायज्ञ शुरू हुआ। मंदिर के संस्थापक पुजारी पंडित गजेंद्र शास्त्री धर्माधिकारी के सानिध्य में निकाली गई कलश यात्रा विभिन्न मार्गो से नेहरू नगर चौराहा होते हुए वापस यज्ञ स्थल नवग्रह शनि मंदिर पहुंची। जहां वैदिक ब्राह्मणों द्वारा श्री गणेश पूजन मंडप पूजन व अन्य यज्ञ विधान संपन्न किए गए। इस अवसर पर कथा वाचक महाराज वैभव भटेले भागवतकर्ता पंडित जितेंद्र वैष्णव पूर्व पार्षद श्रीमती प्रदीप मोनू सक्सेना संतोष जितेंद्र कसाना रमेश गामोड ओम प्रकाश मिश्रा माया बैरागी राखी नागराज मोना ठाकुर सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कलश यात्रा के दौरान पंडित गजेंद्र शास्त्री ने बताया कि यह शनि महायज्ञ शनि जयंती महोत्सव उपलक्ष में लोक कल्याण की कामना से आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ के चलते 51 भागवत पुराण प्रतिष्ठा के साथ 9 मई से भागवत कथा व 11 मई से रात्रि कालीन बेला में श्रीराम कथा जैसे धार्मिक आयोजन भी होंगे। पूर्णाहुति विशाल भंडारे का आयोजन 16 मेंई को रहेगा।

ओटीपी मांगने से ठगी का डर, जनगणना कर्मियों को जानकारी देने से झिझक रहे हैं लोग

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

प्रदेश में एक मई से जनगणना की शुरुआत हो गई है। यह जनगणना का पहला चरण है। जिसमें एक महीने तक मकान और परिवार से संबंधित 33 बिंदुओं पर जानकारी पूछी जाएगी। इस काम के लिए भोपाल में ही 6 हजार से ज्यादा कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो शहरी क्षेत्र के 25 जोन में काम करेंगे।

जनगणना के बीच प्रगणकों को कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ रहा है। कई लोग प्रगणकों को जनगणना से जुड़ी जानकारी नहीं दे रहे हैं। सामने आया है कि ओटीपी (वन टाइम पॉसवर्ड) से लोगों को ठगी का डर भी है। वहीं, किराएदारों की जानकारी देने पर वे इनकम टैक्स के दायरे में आ सकते हैं? हालांकि, प्रगणक शहरवासियों को समझा रहे हैं कि ऐसा कुछ नहीं है। इसे लेकर नगर निगम की कमिश्नर संस्कृति जैन ने तस्वीर भी साफ की है। उन्होंने बताया कि जनगणना देश का बहुत बड़ा महाअभियान है, जो लोगों के सहयोग के बिना नहीं कर सकते। प्रगणक यदि आपके घर आ रहे हैं, उन्हें सही जवाब दें। प्रश्न बहुत आसान है। चिंता न करें, कोई ओटीपी नहीं लिया जा रहा है। हां, मोबाइल नंबर जरूर मांगा जा रहा है। ताकि एसएमएस के जरिए ही गणना की जानकारी मिल सके। जनगणना को लेकर प्रगणकों की हर रोज बैठकें भी ले रहे हैं।

पहले चरण में 33 बिंदुओं पर ले रहे जानकारी: मकान नंबर, छत-दीवार कैसी है?, मकान की वर्तमान स्थिति, उसका पयोग, घर में रहने वाले लोगों की संख्या, परिवार के मुखिया का नाम, उसका लिंग, पेजयल का मुख्य स्रोत, शौचालय का प्रकार, मोबाइल नंबर समेत 33 बिंदुओं की जानकारी ली जाएगी।

जनगणना कर्मियों के फोन से ऑटोमेटिक हट जाएगा एप: इधर, घर-घर जाकर जनगणना कर रहे सरकारी कर्मचारी (जनगणना कर्मचारी) लोगों से जो जानकारी जुटा रहे हैं, वह सीधे जनगणना के सरकारी सर्वर पर अपडेट हो रही है। यह डेटा जनगणना कर्मचारियों के मोबाइल फोन में स्टोर नहीं हो रहा।

निवेदिता शर्मा ने बाल आयोग में काम संभाला

भोपाल। मप्र राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग को सात माह बाद नया नेतृत्व मिल गया। डॉ. निवेदिता शर्मा ने आयोग की अध्यक्ष के रूप में विधिवत पदभार ग्रहण किया। समारोह के दौरान आयोग के अधिकारी, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

समझ, संबंध और सुविधा से ही बनेगा मानवीय समाज : आर्य

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

राज्य आनंद संस्थान में आयोजित 'आनंद सभा' के दौरान संस्थान के डायरेक्टर सत्यप्रकाश आर्य ने कहा कि जीवन में केवल सुविधाएं पर्याप्त नहीं हैं। 'समझ, संबंध और सुविधा' ये तीनों मिलकर ही एक मानवीय समाज का निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि समझ और संबंध ही मानवीय मूल्यों की वास्तविक आधारशिला हैं।

श्री आर्य ने प्रतिभागियों को आत्मीयता, विश्वास और मानवीय व्यवहार के महत्व से परिचित कराया। उन्होंने समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए सभी से संवेदनशील भूमिका निभाने का आह्वान किया। लोक शिक्षण संचालनालय के संयुक्त संचालक एच.एन. नेमा ने कहा कि पहले शिक्षक विद्यार्थियों और अभिभावकों से आत्मीय संवाद बनाए रखते थे, जिससे समाज में विश्वास का वातावरण बनता था। उन्होंने आत्म-अवलोकन पर जोर देते हुए शिक्षकों से आग्रह किया कि वे केवल औपचारिक नौकरी तक सीमित न रहें, बल्कि समाज में सेतु की भूमिका निभाएं। कार्यक्रम में लोक शिक्षण संचालनालय के उप संचालक शंकर खत्री ने भी अपने विचार व्यक्त किए। 'आनंद सभा' में उपस्थित शिक्षकों और प्रतिभागियों ने मानवीय मूल्यों को जीवन में उतारने का संकल्प लिया।

मनोज मीक
मशहूर शहरी विकास विशेषज्ञ

मध्यप्रदेश का शहरीकरण अब सामान्य नगर-विस्तार का विषय नहीं रहा। यह राज्य की आर्थिक आत्मनिर्भरता, रोजगार, आवास, निवेश और जीवन-गुणवत्ता से जुड़ा बड़ा प्रश्न बन चुका है। आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश अभी शहरीकरण के शुरुआती-मध्य दौर में है। नीति आयोग के राज्य-सार में 2023 के अनुमान के आधार पर मध्यप्रदेश की शहरी आबादी राष्ट्रीय औसत से कम लगभग 29 प्रतिशत बताई गई है, जबकि राज्य की कार्यशील आबादी अब भी बड़े पैमाने पर कृषि पर निर्भर है। इसका अर्थ यह है कि मध्यप्रदेश के पास अभी शहरीकरण को अव्यवस्था के बाद सुधारने की विवशता नहीं, उसे सही समय पर सही दिशा देने का अवसर है।

म्युनिसपालिटी से मेट्रोपॉलिटन इकोनॉमी तक : मध्यप्रदेश के शहरों का अगला सफर

शहरीकरण अभी अधूरा है इसलिए उम्मीदों से भरा है

भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, सागर, सतना और नर्मदापुरम जैसे शहर अब पारंपरिक नगरपालिका सीमाओं से बड़े हो रहे हैं। शहरीकरण का नया चरण नगर सीमा, मास्टर प्लान, रिंग रोड, मेट्रोपॉलिटन रीजन, लॉजिस्टिक्स, अफोर्डेबल हाउसिंग, किराए के आवास, वर्टिकल डेवलपमेंट और क्लीन मोबिलिटी को साथ लेकर चलेगा। यही वह क्षेत्र है, जहाँ रियल एस्टेट को जमीन की खरीद-बिक्री से आगे जाकर शहर निर्माण की मुख्य धुरी बनना होगा।

जहाँ हम खड़े हैं- मध्यप्रदेश का आर्थिक ढांचा अभी कृषि-प्रधान है। नीति आयोग के अनुसार 2021-22 में राज्य के सकल मूल्य वर्धन में कृषि का योगदान 44.7 प्रतिशत, सेवाओं का 32.9 प्रतिशत और उद्योग का 22.5 प्रतिशत था। 2013-14 से 2022-23 के बीच राज्य में कृषि की औसत सालाना वृद्धि राष्ट्रीय औसत से बेहतर रही, पर मैनुफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर की वृद्धि राष्ट्रीय औसत से पीछे रही। यही बात शहरीकरण की दिशा तय करती है- यदि मध्यप्रदेश को अगले आर्थिक चरण में जाना है, तो शहरों को उत्पादन, सेवा, नवाचार और रोजगार के केंद्र बनाना होगा।

तुलना में प्रगतिशील राज्यों का अनुभव साफ़ है। महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना ने शहरों को औद्योगिक और सेवा अर्थव्यवस्था के इंजन के रूप में विकसित किया। गुजरात के 2025-26 सामाजिक-आर्थिक आकलन के आधार पर रिपोर्टों में 2027 तक 50.7 प्रतिशत आबादी शहरी होने का अनुमान बताया गया है। महाराष्ट्र में 2011 में ही 45.2 प्रतिशत आबादी शहरों में थी। मध्यप्रदेश अभी उस स्तर पर नहीं है, इसलिए हमारी चुनौती भी अलग है और संभावना भी अधिक है।

विकास का खर्च और उसकी दिशा

प्रदेश के बजट में शहरी क्षेत्र पर ध्यान बढ़ता दिखता है। पीआरएस के अनुसार 2026-27 में मध्यप्रदेश ने अर्बन डेवलपमेंट के लिए 13,178 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है, जो संशोधित अनुमान 2025-26 की तुलना में अधिक है। इसी में पीएम आवास योजना-शहरी के लिए 2,301 करोड़ रुपये का प्रावधान भी है। यह संकेत देता है कि आवास, बुनियादी ढांचा और नगरीय सेवाएँ अब राज्य की प्राथमिकता सूची में ऊपर आ रही हैं। फिर भी तस्वीर का दूसरा पक्ष ध्यान खींचता है। पीआरएस के अनुसार 2026-27 में जल आपूर्ति और स्वच्छता पर कुल व्यय का 1.7 प्रतिशत प्रावधान है, जबकि राज्यों का औसत 2.8 प्रतिशत बताया गया है। आवास, पानी, सीवरेज और ड्रेनेज किसी भी शहर की बुनियाद हैं। रियल एस्टेट तभी स्वस्थ रहेगा जब शहर की बुनियादी सेवाएँ जमीन के दाम से पहले योजना में आएँ।

अफोर्डेबल हाउसिंग घर से ज्यादा शहर का सवाल

मध्यप्रदेश में अफोर्डेबल हाउसिंग को सरकारी योजना, डेवलपर और नगरीय निकाय तीनों के साझा ढांचे में देखना होगा। पीएम आवास योजना-शहरी का राष्ट्रीय ढांचा अब बड़े पैमाने पर असर दिखा चुका है। आधिकारिक डैशबोर्ड के अनुसार देश में 125.31 लाख आवास स्वीकृत, 119.35 लाख ग्राउंडेड और 98.1 लाख पूर्ण बताए गए हैं। यह संख्या बताती है कि शहरी गरीब और निम्न-मध्यम वर्ग के लिए आवास अब सामाजिक योजना के साथ आर्थिक उत्पादकता का भी विषय है। मध्यप्रदेश में अफोर्डेबल हाउसिंग के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है सस्ती जमीन, तेज अनुमति, क्लीन टाइटल, कम लागत का इन्फ्रास्ट्रक्चर और छोटे घरों के लिए बेहतर डिज़ाइन और फाइनेंस। घर का दाम सिर्फ प्लॉट या फ्लैट की लागत से नहीं बनता; उसमें अनुमति, गाइडलाइन रेट, स्टाम्प ड्यूटी, बाहरी विकास, ब्याज लागत और देरी भी जुड़ती है। यदि राज्य को अफोर्डेबल हाउसिंग सच में बढ़ानी है, तो लागत घटाने वाली नीतियाँ उतनी ही जरूरी हैं जितनी सब्सिडी।

रियल एस्टेट का नया रूप

रियल एस्टेट का पहला दौर कॉलोनियों और प्लॉटिंग का था। दूसरा दौर अपार्टमेंट, टाउनशिप और गेटेड कम्युनिटी का रहा। तीसरा दौर अब शुरू हो रहा है, जिसमें मिश्रित उपयोग, किराए के आवास, छात्र आवास, वरिष्ठ नागरिक आवास, औद्योगिक वर्कर हाउसिंग, मेडिकल वेलनेस स्टे और ट्रांजिट ओरिएंटेड डेवलपमेंट जैसे नए वर्ग आएँगे। प्रदेश की इंटीग्रेटेड टाउनशिप नीति 2025 इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसमें योजनाबद्ध शहरीकरण, निजी निवेश और सिंगल विंडो क्लीयरेंस जैसे तत्व शामिल हैं।

आने वाले वर्षों में रियल एस्टेट का मूल्य उस शहर में अधिक बनेगा, जहाँ रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और डिजिटल सेवाएँ साथ मिलेंगी। इंदौर ने व्यापार और सेवा क्षेत्र के आधार पर बढ़त बनाई। भोपाल के पास प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, हरित भूगोल और नॉलेज-एआई सिटी की संभावना है। जबलपुर रक्षा, न्याय, शिक्षा और लॉजिस्टिक्स से जुड़ सकता है। ग्वालियर शिक्षा, पर्यटन और उत्तर भारत कनेक्टिविटी का स्वाभाविक केंद्र है। उज्जैन धार्मिक पर्यटन और सिंहस्थ के कारण विशेष शहरी अर्थव्यवस्था रखता है। राज्य की वास्तविक ताकत इसी बहु-केंद्रित मॉडल में है।

मास्टर प्लान-महानगरीय दृष्टि

प्रदेश के बड़े शहरों के सामने सबसे बड़ी समस्या यही है कि शहरीकरण जमीन पर तेज है, योजना कागज पर धीमी। भोपाल जैसे शहर में नई विकास योजना दो दशक से लंबित है। जब महानगरीय क्षेत्र की चर्चा होती है और मास्टर प्लान पीछे रह जाता है, तब जमीन, सड़क, आवास, उद्योग और पर्यावरण के बीच तनाव बढ़ता है। शहरों को पहले योजना, फिर इन्फ्रास्ट्रक्चर, फिर अनुमति और फिर विकास की श्रृंखला चाहिए। उलटे क्रम से शहर महँगे और अव्यवस्थित बनते हैं। मध्यप्रदेश को अब भोपाल और इंदौर जैसे शहरों को अलग-अलग नगरों की तरह नहीं, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के बड़े प्लेटफॉर्म की तरह देखना होगा। भोपाल मेट्रोपॉलिटन रीजन, इंदौर-उज्जैन रीजन और नर्मदापुरम-रायसेन-सीहोर जैसे आसपास के क्षेत्रों को जोड़कर राज्य एक नया ट्विन मेट्रोपॉलिटन ग्रोथ आर्क बना सकता है। यह विचार रियल एस्टेट से आगे जाकर परिवहन, लॉजिस्टिक्स, औद्योगिक क्लस्टर, आवास और सेवा क्षेत्र को जोड़ता है।

बाकी राज्यों से सीख

गुजरात ने औद्योगिक कॉरिडोर, नगर विस्तार और शहरी निवेश को एक साथ रखा। महाराष्ट्र ने मुंबई-पुणे-नासिक ट्रायंगल से निवेश खींचा। कर्नाटक ने बेंगलुरु की टेक पावर को क्षेत्रीय विकास से जोड़ने की कोशिश की। तेलंगाना ने भी हैदराबाद को वैश्विक टेक शहर बनाया। इन राज्यों की सीख यह है कि शहर तब बढ़ते हैं जब शासन, जमीन, वित्त, परिवहन और निवेशक विश्वास एक लाइन में आते हैं। मध्यप्रदेश के पास भूमि है, केंद्रीय भौगोलिक स्थिति है, शांत सामाजिक वातावरण है, तुलनात्मक रूप से कम लागत है और बड़े शहरों में रहने की गुणवत्ता भी बेहतर है। कमी है समयबद्ध मास्टर प्लान, साफ शहरी डेटा, नगर निकायों की वित्तीय क्षमता, परियोजनाओं की बैंक योग्य तैयारी और अनुमतियों की निश्चित समय-सीमा। यही पाँच सुधार अगले दशक की दिशा तय करेंगे।

यह पांच सुधार...

मध्यप्रदेश के पास भूमि है, केंद्रीय भौगोलिक स्थिति है, शांत सामाजिक वातावरण है, तुलनात्मक रूप से कम लागत है और बड़े शहरों में रहने की गुणवत्ता भी बेहतर है। कमी है समयबद्ध मास्टर प्लान, साफ शहरी डेटा, नगर निकायों की वित्तीय क्षमता, परियोजनाओं की बैंक योग्य तैयारी और अनुमतियों की निश्चित समय-सीमा। यही पाँच सुधार अगले दशक की दिशा तय करेंगे।

अपेक्षित उन्नयन

राज्य को अब 7 स्पष्ट मोर्चों पर काम करना चाहिए। पहला, हर बड़े शहर की नई विकास योजना समयबद्ध हो। दूसरा, नगर निकायों की आय बढ़े और वे बांड, भूमि मूल्य वसूली तथा पीपीपी मॉडल का उपयोग सीखें। तीसरा, अफोर्डेबल हाउसिंग को शहर से बाहर धकेलने की प्रवृत्ति रुके; उसे रोजगार और ट्रांसपोर्ट से जोड़ा जाए। चौथा, पुराने शहरों का रिडेवलपमेंट सांस्कृतिक पहचान बचाते हुए हो। पाँचवाँ, रियल एस्टेट अनुमति प्रणाली पूरी तरह डिजिटल और जवाबदेह हो। छठा, गाइडलाइन रेट वैज्ञानिक, क्षेत्र-आधारित और बाजार-समझ वाले हों। सातवाँ, बड़े शहरों में ग्रीन बिल्डिंग, ई-बस, साइकिल नेटवर्क, जल संरक्षण और वेस्ट मैनेजमेंट को रियल एस्टेट नीति से जोड़ा जाए।

अंतिम बिंदु

मध्यप्रदेश का शहरीकरण अभी अधूरा है, इसलिए उम्मीद से भरा है। यह प्रदेश मुंबई या बेंगलुरु की तरह भीड़ और महँगाई के दबाव में शहर नहीं बना रहा। उसके पास आज भी योजना से पहले सोचने, जमीन के उपयोग को सही दिशा देने और रियल एस्टेट को रोजगार, आवास और जीवन-गुणवत्ता से जोड़ने का अवसर है।

दोपहर मैट्रो के स्थापना दिवस पर सबसे महत्वपूर्ण बात यही कही जा सकती है कि आने वाला मध्यप्रदेश गाँवों से शहरों की ओर भागता प्रदेश नहीं होना चाहिए; यह ऐसे शहरों का प्रदेश बने, जहाँ रहने योग्य आवास, काम करने योग्य अर्थव्यवस्था, चलने योग्य सड़कें, साँस लेने योग्य हवा और निवेश योग्य विश्वास सब साथ मिलें। यही मध्यप्रदेश के शहरीकरण का अगला उन्नयन होगा।

विजयदत्तय श्रीधर
हिन्दी पत्रकारिता के शोध अध्येता एवं इतिहास लेखक

'हिन्दुस्तानियों के हित के हेत'....यह हिन्दी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा है। इस संकल्पन के साथ 30 मई 1826 को हिन्दी का पहला समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड'प्रकाशित हुआ। युगलकिशोर शुक्ल को हिन्दी पत्रकारिता का प्रथम संपादक होने का गौरव प्राप्त है।

दो सौ साल का सफर

हिन्दी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा

जनवरी, 1931 तक यह माना जाता रहा कि हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत सन् 1845 में काशी से प्रकाशित होने वाले 'बनारस अखबार' से हुई। 'माडर्न रिव्यू' के सहायक संपादक ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय (बनर्जी) जब भारतीय भाषाओं की पत्रकार-कला का इतिहास लिख रहे थे, उनकी शोध दृष्टि में 'उदन्त मार्तण्ड' की फाइल आई। 'विशाल भारत' के सन् 1931 के फरवरी, मार्च, अप्रैल और मई चार अंकों में ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी के शोध आलेख प्रकाशित हुए। तब यह तथ्य सामने आया कि हिन्दी का पहला समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है।

समाचारपत्र के मुख पृष्ठ पर बड़े अक्षरों में 'उदन्त मार्तण्ड' नाम होता था। नीचे संस्कृत में लिखा जाता था- दिवाकान्त कान्तिं बिनाध्वान्तमन्तं नचाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोक। समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तुं नशक्नोति तस्मात्करोमीति यत्नं।। इसका अर्थ है- सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अंधेरा नहीं मिटता उसी तरह समाचार सेवा के बिना अज्ञ जन जानकार नहीं बन सकते। इसलिए मैं यह समाचारपत्र प्रकाशनरूपी प्रयत्न कर रहा हूँ। अर्थात उदन्त मार्तण्ड का तात्पर्य है समाचार-सूर्य।

उदन्त मार्तण्ड के अंतिम पृष्ठ पर अंत में लिखा रहता था- युगल किशोर कथयति धीर सविनय मेतत सुकुलज वंश। उदिते दिनकृति सती मार्त्तण्डे तद्वद्विलसती लोक उदन्ते।... यह उदन्त मार्तण्ड कलकत्ते के कोल्हू टोला के अमड़ातला की गली के 37 अंक की हवेली के मार्त्तण्ड छापा में हर सतवारे मंगलवार को शाया होता है।

प्रवेशांक में 'इस कागज के प्रकाशक का इश्तेहार' शीर्षक से समाचार पत्र का मंतव्य दिया गया है- यह उदन्त मार्तण्ड अब पहले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेत जो आजतक किसी ने नहीं चलाया पर अंग्रेजी ओ पारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जानने और पढ़ने वालों को ही होता है और सब लोग पराये सुख सुखी होते हैं जैसे पराये धन धनी होना ओ अपनी रहते पराई आँख देखना वैसे ही जिस गुण में जिसकी पैठ न हो उसको उसके रस का स्वाद मिलना कठिन ही है.....।'

हिन्दी के पहले समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के पहले अंक, दिनांक 30 मई, 1826 के प्रथम पृष्ठ की छाया प्रति।

4 दिसंबर, 1827 को उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन बंद हो गया। इसका एक कारण यह था कि अन्य भाषाओं के समाचारपत्रों को कंपनी सरकार से जैसी सहायता मिलती थी, वह उदन्त मार्तण्ड को नहीं मिली। डाक घर से समाचारपत्र के वितरण की सुविधा भी नहीं मिली। जिन हिन्दी भाषियों के हित के लिए युगलकिशोर शुक्ल ने समाचारपत्र प्रकाशित किया था, उन्होंने भी सहारा नहीं दिया। पत्र बंद होने की सूचना देने के लिए यह पद्यांश लिखा गया-

आज दिवस लौं उग चुक्यौ, मार्तण्ड उदंते।
अस्ताचल कौ जात है दिनकर दिन अब अन्त।

जब तें या कलकत्ता नगरी में उदन्त मार्तण्ड को प्रकाश भयौ तब लैं आज दिवस लौं काहू प्रकार तें ढाडस बाँध विद्या के बीच बैवे को हिन्दुस्तानिओ के जड़ता के खेत को बहु विध जोत्यौ पहिले तो अैसी कठोर भूमि काहे कौ जुते।

उदन्त मार्तण्ड ने हिन्दी पत्रकारिता की ठोस नींव रखी। विगत दो सौ वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता का आशातीत विस्तार और विकास हुआ है। विषयों की विविधता है। अधनातुन प्रौद्योगिकी तक मुद्रण और संप्रेषण की प्रगति हुई है। हिन्दी पत्रकारिता ने स्थायी महत्व के दो बड़े काम किए। एक, देश और दुनिया के हालात और हलचलों में दिलचस्पी लेने वाला पाठक वर्ग तैयार किया। दूसरे, भाषा को नया रूप दिया और साफ-सुथरे, सुस्पष्ट और समर्थ गद्य की परंपरा का विकास किया।

हिन्दी पत्रकारिता के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि उसके मूर्धन्य संपादकों में हिन्दीतर भाषी मनीषियों का महत्वपूर्ण अवदान है। माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराडकर, लक्ष्मण नारायण गर्दे, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, अमृतलाल चक्रवर्ती, गुजराती के स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, कन्नड के नारायण दत्त, तेलुगु के बालशौरि रेड्डी प्रभृति मनीषियों की एक लंबी श्रृंखला है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। हिन्दी के शब्द भण्डार को समृद्ध करने में बाबूराव विष्णु पराडकर के 'आज' (1920, काशी) के संपादकों की महती भूमिका है। हिन्दी गद्य के विन्यास और वर्तनी की एकरूपता के लिए सरस्वती संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कठिन साधना की। गणेशशंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' और माखनलाल चतुर्वेदी का 'कर्मवीर' हिन्दी पत्रकारिता के गौरव हैं। हिन्दी में आध्यात्मिक पत्रिका का श्रेष्ठ उदाहरण है 'कल्याण'। अगस्त, 2026 में कल्याण के प्रकाशन के एक सौ साल पूरे हो रहे हैं। इसके संपादक थे भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार।

सीएम ने कहा

प्रदेश में दो वर्ष में 7.31 लाख हैक्टेयर सिंचाई क्षेत्र का हुआ विस्तार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में गत दो वर्षों के दौरान 7.31 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में नई सिंचाई क्षमता विकसित की गई है, जो राज्य के कृषि क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य वर्ष 2026 तक प्रदेश की सिंचाई क्षमता में 8.44 लाख हेक्टेयर की अतिरिक्त वृद्धि करना है। इसके साथ ही दीर्घकालीन दृष्टि से प्रदेश के कुल सिंचित क्षेत्र को 100 लाख हेक्टेयर तक ले जाने का संकल्प लेकर योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। सिंचाई परियोजनाओं में पारदर्शिता, समयबद्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए इनकी नियमित समीक्षा प्रधानमंत्री गतिशक्ति पोर्टल के माध्यम से की जाएगी।

- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पार्वती–काली–सिंध और चंबल अंतर्राज्यीय लिंक परियोजना तथा केन–बेतवा अंतर्राज्यीय लिंक परियोजना को राज्य के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से इन परियोजनाओं को स्वीकृति मिली है, जिससे प्रदेश के बड़े हिस्से में जल उपलब्धता बढ़ेगी और किसानों को स्थायी सिंचाई सुविधा प्राप्त होगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राज्य स्तर पर भी विभिन्न नदियों को आपस में जोड़ने के लिए नदी जोड़ो परियोजना के क्रियान्वयन में तेजी लाई जाए, ताकि जल संसाधनों का संतुलित और प्रभावी उपयोग किया जा सके।
- राज्य में नदी जोड़ो परियोजना के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण नदियों का सर्वेक्षण किया जा चुका है। उज्जैन जिले में कान्ह–गंभीर, मंदसौर, नीमच और उज्जैन में कालीसिंध–चंबल, सतना जिले में केन–मंदाकिनी, सिवनी एवं छिंदवाड़ा जिले में शक्कर–पेंच और दूधी–तामिया तथा रायसेन जिले में जामनेर–नेवन और नेवन–बीना नदियों को जोड़ने की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। इन सभी परियोजनाओं के क्रियान्वयन से कुल 5 लाख 97 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। इन योजनाओं की अनुमानित लागत 9,870 करोड़ रुपये है, जिससे प्रदेश के सात जिलों के हजारों किसानों को सीधा लाभ मिलेगा और कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राज्य की नदियों में बाढ़ नियंत्रण, जल प्रबंधन और जल के समुचित उपयोग के साथ-साथ नदी कछारों में पर्याप्त जल उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 13 नवंबर 2024 को एक तकनीकी दल का गठन किया गया है। यह दल नदियों को आपस में जोड़ने से जुड़ी तकनीकी, पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं का अध्ययन कर व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करेगा, जिससे भविष्य में योजनाओं को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।
- मुख्यमंत्री ने भोपाल की झीलों की प्राचीन जल संरक्षण तकनीक का उल्लेख करते हुए कहा कि यह मॉडल आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भोपाल की ऐतिहासिक झील प्रणाली का अध्ययन कर उसी तर्ज पर कम लागत में सुरक्षित जलाशय और बांध निर्माण की अवधारणा पर कार्य किया जाए। साथ ही इस मॉडल का प्रदर्शन कर इसे प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी लागू करने की दिशा में पहल करने को कहा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले– कृषि, सिंचाई और किसानों की आय बढ़ाने से डबल डिजिट ग्रोथ की ओर बढ़ा मप्र

मध्यप्रदेश बना भारत का फूड-बास्केट... अन्नदाता ही नहीं, अब राष्ट्र निर्माता हैं हमारे प्रदेश के किसान

कभी 'बीमारू राज्य' और विकास की दौड़ में पिछड़ा माना जाने वाला मध्यप्रदेश आज आत्मनिर्भरता, कृषि समृद्धि और तेज आर्थिक विकास का प्रतीक बन चुका है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य ने योजनाबद्ध नीतियों और किसानों की मेहनत के बल पर नई पहचान हासिल की है। आज मध्यप्रदेश न सिर्फ विकास दर में अग्रणी है, बल्कि देश के नए 'फूड बास्केट' के रूप में उभरकर सामने आया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का कहना है कि कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों में हुई आशातीत प्रगति के पीछे किसानों की निर्णायक भूमिका है। बीते वर्षों में कृषि उत्पादन, सिंचाई विस्तार और किसानों की आय बढ़ाने के प्रयासों ने मध्यप्रदेश को खाद्यान्न उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल किया है। राज्य की विकास दर अब डबल डिजिट तक पहुंच चुकी है, जिसमें सबसे बड़ा योगदान कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का है।

उन्होंने कहा कि सरकार ने खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने का संकल्प लिया है। सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, पर्याप्त बिजली आपूर्ति, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी, भावांतर भुगतान योजना और कृषि यंत्रीकरण ने किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है। आज मध्यप्रदेश गेहूं, चना, मसूर, सोयाबीन और तिलहन उत्पादन में देश में अग्रणी है। कई फसलों में राज्य ने पंजाब और हरियाणा जैसे परंपरागत कृषि सम्पन्न राज्यों को पीछे छोड़ा है। कृषि के साथ डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। ODOP योजना, एग्रो-फूड प्रोसेसिंग इकाइयां और कोल्ड स्टोरेज चेन किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने में सहायक बनी हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लक्ष्य स्पष्ट है—हर खेत तक पानी, हर किसान तक प्रगति और हर घर तक समृद्धि। उन्होंने किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और कृषि अमले को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में मध्यप्रदेश देश की खाद्य सुरक्षा को और मजबूत करेगा तथा वैश्विक कृषि मानचित्र पर भी अपनी पहचान बनाएगा।

कभी 'बीमारू राज्य' और विकास की दौड़ में पिछड़ा माना जाने वाला मध्यप्रदेश आज आत्मनिर्भर

किसानों की आय बढ़ाने के लिए कृषक कल्याण मिशन

कृषि समृद्ध प्रदेश बनने की कहानी

कभी सीमित सिंचाई साधनों, अस्थिर बिजली आपूर्ति और अपर्याप्त अवसंरचना के कारण मध्यप्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था घाटे में चल रही थी। किसानों की आमदनी सीमित थी और ग्रामीण जीवन में भी कुछ कठिनाइयां थीं। परंतु बीते दो दशकों में परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है। सरकार ने कृषि और ग्रामीण विकास को अपनी नीतियों के केंद्र में रखकर जो कार्य किया, उसने राज्य की तस्वीर ही बदल दी। हाल ही में हुए आर्थिक सर्वेक्षण में मध्यप्रदेश ने 24 प्रतिशत की विकास दर दर्ज की है, जो राष्ट्रीय विकास औसत से कहीं अधिक है। यह प्रगति बताती है कि मध्यप्रदेश अब आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

कृषि विकास में आई नई क्रांति

मध्य प्रदेश में सबसे अधिक विकास कृषि क्षेत्र में देखने को मिला है। राज्य सरकार ने खेती को केवल आजीविका नहीं, बल्कि समृद्धि का आधार बनाने का लक्ष्य तय किया। किसानों की लागत घटाने और आय बढ़ाने के लिए कृषक कल्याण मिशन के तहत कई योजनाएं लागू की गईं। भावांतर भुगतान योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी और बोनस ने किसानों को आर्थिक सुरक्षा दी। उन्नत कृषि यंत्रों पर सब्सिडी तथा प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा मिला। नर्मदा घाटी, केन-बेतवा और अन्य नदी जोड़ परियोजनाओं से सिंचाई का विस्तार हुआ।

खेती-किसानी की बदलती परिभाषा

मध्यप्रदेश के किसान अब पारम्परिक खेती तक सीमित नहीं हैं। वे नई तकनीकों और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाकर उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में सुधार ला रहे हैं। ड्रिप इरिगेशन, ऑर्गेनिक फार्मिंग, मल्टीक्रॉपिंग और फसल विविधीकरण जैसे नवाचारों ने कृषि को एक व्यावसायिक रूप दिया है। प्रदेश में कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केंद्रों और कृषि विज्ञान केंद्रों की सक्रिय भूमिका ने किसानों को नवीनतम जानकारी सहित प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया है। अब किसान बाजार की मांग के अनुसार फसलें पैदा कर रहे हैं और निर्यात की दिशा में भी कदम बढ़ा रहे हैं।

खाद्यान्न उत्पादन में नया इतिहास

मप्र आज नए आत्मविश्वास के साथ विकास के नए अध्याय लिख रहा है। गांव से शहर, खेत से बाजार और फ़ार्म से लैब तक बदलाव की स्पष्ट लहर दिखाई दे रही है। प्रदेश के किसान अब केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माता और ऊर्जादाता भी बन रहे हैं। खेतों में सोलर पम्प के लिए अनुदान जैसी योजनाओं ने किसानों को आत्मनिर्भर बनाया है। किसान हितैषी नीतियों और परिश्रम के बल पर मध्यप्रदेश गेहूं, धान, चना, मसूर, सरसों और सोयाबीन उत्पादन में अग्रणी बन चुका है। गेहूं उत्पादन में राज्य देश में पहले स्थान पर है, जबकि चना उत्पादन में लगभग 30 प्रतिशत योगदान देता है। कृषि क्षेत्र की प्रगति से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है, रोजगार बढ़ा है और खेती लाभकारी व्यवसाय के रूप में उभरी है। कृषि आधारित उद्योगों और प्रोसेसिंग से राज्य का भविष्य और सशक्त दिख रहा है।

मप्र में 'स्वच्छ जल अभियान': हर मंगलवार होगी जल सुनवाई, दूषित पेयजल पर सख्त कार्रवाई

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जल सुरक्षा, जल संरक्षण और जन-सुनवाई के उद्देश्य से "स्वच्छ जल अभियान" को 10 जनवरी 2026 से वर्चुअल माध्यम से लॉन्च किया। इस अवसर पर मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और प्रहलाद पटेल भी वीसी के माध्यम से उपस्थित रहे। अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम में सभी महापौर, जिला पंचायत अध्यक्ष, संभागायुक्त, कलेक्टर, नगर निगम आयुक्त, जिला पंचायत सीईओ सहित नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के जनप्रतिनिधि और अधिकारी शामिल हुए।
- इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य नागरिकों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना तथा "जल सुनवाई" के माध्यम से आमजन को अपनी शिकायत रखने का अधिकार देना है। अभियान का क्रियान्वयन दो चरणों में किया जाएगा। पहला चरण 10 जनवरी से 28 फरवरी और दूसरा चरण 1 मार्च से 31 मई तक चलेगा।
- अभियान के अंतर्गत सभी जल शोधन संयंत्रों और पेयजल संग्रहण टंकियों की सफाई की जाएगी। जीआईएस आधारित मैपिंग एप के जरिए जलापूर्ति प्रणाली की निगरानी होगी। पेयजल और सीवेज पाइपलाइनों की मैपिंग कर इंटर-पॉइंट चिन्हित किए जाएंगे तथा लीकेज की जांच रोबोट तकनीक से की जाएगी। पाइपलाइनों में दूषित मिश्रण रोकने के लिए सख्त कार्रवाई होगी। सभी पेयजल स्रोतों की गुणवत्ता की नियमित जांच की जाएगी और एसटीपी की भी सतत निगरानी होगी।
- हर मंगलवार "जल सुनवाई" आयोजित की जाएगी। 181 हेल्पलाइन पर पेयजल संबंधी शिकायतें दर्ज होंगी और समयसीमा में निराकरण कर आवेदक को जानकारी दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि स्वच्छ जल को घर-घर पहुंचाना सरकार की जिम्मेदारी है। तकनीक का उपयोग करते हुए किसी भी स्थिति में दूषित पेयजल की आपूर्ति न हो। उन्होंने चेताया कि अभियान में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

कम पानी में हरा चारा देगा कैक्टसः किसानों को नई खेती की ट्रेनिंग

ग्रीन-एजी परियोजना... कांटारहित कैक्टस से चारा, खाद व बायोगैस बनाने की ट्रेनिंग

किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग द्वारा खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) की ग्रीन-एजी परियोजना के तहत श्योपुर जिले के किसानों के एक दल ने सीहोर जिले के अमलाहा स्थित ICARDA केंद्र का भ्रमण किया। इस अध्ययन दौरे का उद्देश्य किसानों को कांटारहित कैक्टस की खेती और उसके बहुपयोगी लाभों से अवगत कराना था। दौरे के दौरान राज्य तकनीकी समन्वयक डॉ. नीलम बिसेन पवार, संचार अधिकारी मिली मिश्रा और पशुपालन विशेषज्ञ अमृतेश वशिष्ठ भी किसानों के साथ मौजूद रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ICARDA-India की वैज्ञानिक डॉ. नेहा तिवारी ने बताया कि कैक्टस बेहद कम पानी में उगने वाला पौधा है, जो शुष्क और बंजर भूमि में भी आसानी से पनप सकता है। उन्होंने बताया कि कांटारहित कैक्टस पशुओं के लिए गर्मी और सूखे के मौसम में हरे चारे का एक प्रभावी वैकल्पिक स्रोत बन सकता है। इसके अलावा, इससे बायोगैस और जैविक खाद तैयार करने की तकनीक भी किसानों को समझाई गई। किसानों को कैक्टस की पोषण संबंधी विशेषताओं, इसके दीर्घकालिक लाभों और जलवायु अनुकूल खेती में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी गई।

किसानों ने खेतों में जाकर कांटारहित कैक्टस की विभिन्न किस्मों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया और इसकी खेती की तकनीक को करीब से समझा। किसानों का कहना था कि कैक्टस की खेती पशुपालन को मजबूती देने के साथ-साथ आय बढ़ाने में भी सहायक साबित हो सकती है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे शुभारंभ

आज से 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' की शुरुआत, जंबूरी मैदान में रैली

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जनवरी को भोपाल के जंबूरी मैदान में राज्य स्तरीय कार्यक्रम के माध्यम से कृषक कल्याण वर्ष 2026 का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा अब धरातल पर उतरने जा रही है। शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री किसानों की रैली को फ्लैगऑफ करेंगे और प्रदेश के किसानों को कृषक कल्याण वर्ष में संचालित की जाने वाली गतिविधियों से अवगत कराएंगे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान शामिल होंगे, जिन्हें राज्य सरकार की किसान हितैषी योजनाओं और आगामी पहलों की विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि कृषक कल्याण वर्ष 2026 के फोकस सेक्टर उद्यानिकी, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण होंगे। सरकार का उद्देश्य कृषि को केवल उत्पादन तक सीमित न रखते हुए उसे लाभकारी, टिकाऊ और तकनीक आधारित रोजगार सृजन मॉडल में परिवर्तित करना है। इसके लिए कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन और वानिकी को एकीकृत करते हुए जिला स्तर पर क्लस्टर आधारित विकास को बढ़ावा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि उच्च उत्पादकता, प्राकृतिक खेती, डिजिटल सेवाओं और कृषि प्रसंस्करण के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाई जाएगी। साथ ही एग्री-टेक, ड्रोन सेवा, एफपीओ प्रबंधन, हाइड्रोपोनिक्स और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किए जाएंगे।

कृषि मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की आधारशिला

मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। प्रदेश में कृषि बजट में लगातार वृद्धि की जा रही है और किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी, भावांतर योजना, फसल बीमा, किसान सम्मान निधि, मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना, कृषि उन्नति योजना और श्रीअन्न प्रोत्साहन जैसी योजनाएं प्रभावी रूप से लागू की जा रही हैं। कृषक कल्याण वर्ष 2026 के माध्यम से किसानों के समग्र विकास को नई गति मिलेगी।

52 हजार किसानों के खेत अब लहलहाएंगे सोलर पंप से

मध्यप्रदेश के अन्नदाता अब बनेंगे ऊर्जादाता

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किसानों के हित में किये जा रहे अनेक कल्याणकारी कार्यों से प्रदेश में अन्न उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। किसानों को खेती के लिये खाद बीज की सहज उपलब्धता के साथ सिंचाई के संसाधन भी उपलब्ध कराये जा रहे है। इसी दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए प्रदेश में 52 हजार किसानों के खेत में सोलर पंप स्थापित करने की योजना प्रारंभ की गई है। सोलर पंप स्थापित हो जाने से अब प्रदेश का किसान अन्नदाता के साथ ऊर्जादाता भी बनेगा। अब प्रदेश के किसान सूरज से खेती करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की इस अभिनव पहल के तहत 34 हजार 600 इकाइयों को लेटर ऑफ अवार्ड जारी कर 33 हजार कार्यादेश जारी किए जा चुके हैं। किसान के खेत में सोलर पम्प स्थापित होने से अब उन्हें विद्युत प्रदाय पर बिजली बिल का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। बिजली बिल पर व्यय होने वाली यह राशि अब उनके पास बचत के रूप में रहेगी। इसके अतिरिक्त सोलर पम्प से उत्पादित अतिरिक्त ऊर्जा को किसान सरकार को बेच कर अतिरिक्त आय भी अर्जित कर सकेंगे। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग द्वारा लगातार किसानों को सोलर प्रोजेक्ट लगाने के लिए विभिन्न योजनाओं में लाभ प्रदान कर सक्षम बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों के हित में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए 52 हजार किसानों के खेतों में सोलर पम्प लगाने का अभिनव नवाचार किया है।

प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना

प्रदेश में प्रधानमंत्री कुसुम (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान) योजना के द्वारा किसानों के लिये ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है। केन्द्र सरकार की इस योजना को प्रदेश में "प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना" के नाम से संचालित किया जा रहा है। इसमें (कुसुम-ब) कृषकों के यहां ऑफ ग्रिड सोलर पम्पों की स्थापना की जाती है। योजना में किसानों को 1 एच.पी. से 7.5 एच.पी. तक क्षमता के पम्प पर 90 प्रतिशत सब्सिडी (अनुदान) दिये जाने का प्रावधान किया गया है। इसमें सभी वर्ग को समान सब्सिडी (अनुदान) प्रदान की जाती है।

D-19042/26

वंदे मातरम् के मर्म को समझें .... उसमें निहित भाव को पढ़ने की कोशिश करें

मनोज श्रीवास्तव
(पूर्व आईएस एवं चिंतक, विचारक और लेखक)

किसी भी देश के राष्ट्रगीत या राष्ट्रगान को लेकर यदि विवाद हों या उनको का लेकर ऐसी धारणाएं बनाई जाएं जो उसके मूल भाव या वैचारिक धुरी से से ही परे समझी जाए तो बौद्धिक दिवालिएपन के सिवाय उसे क्या समझा जाए ? यदि किसी गीत को आधा अधूरा गाया जाये या किसी मन्त्र को आधा ही उच्चारित किया जाए तो क्या वह अपने मायने नहीं खो देता ? या कोई भी कही गई बात आधी अधूरी है तो वह सम्प्रेषण यानी कम्युनिकेशन की असल शर्त को पूरा कर सकती है?

आज दुनिया में बनते और बिगड़ते नेरेटिव यही बयाँ करते दिखते हैं । वन्देमातरम के साथ भी बीते कई दशकों तक यही होता रहा है । लेकिन जब उसके डेढ़ सौवें साल में उस भूल को सुधारा गया तो अधकचरे ज्ञान से भरे कुछ लोग अभी भी इसको लेकर अनमनेपन का भाव लिए दिखते हैं। उसके प्रति पूर्वाग्रहों से भरे लगते हैं । यदि हम वंदे मातरम् का वही टुकड़ा इस तरह रखें जिसमें सिर्फ प्रकृति की सुषमा का वर्णन है। जिसमें सुमधुरभाषिणीं, सुहासिनीं भारतीय पहचान का वर्णन है तो क्या वह भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि और आत्म-छवि एक ऐसे राष्ट्र की नहीं बनाता जो एक सॉफ्ट स्टेट है? जो दुनिया भर की धर्मांतरणोन्मादी शक्तियों के लिए एक खुला गोचर है, जहाँ आतंकवादी अपनी गतिविधियों के लिए स्वतंत्र हैं? उन्हें संरक्षण देने वाले क्या वही नहीं हैं जो ऐसे भाव पालकर चलने वालों को आश्रय देते हैं ? बल्कि वे भी हैं जो अभी अपने भाषणों में उनकी बी टीम की तरह काम करते हैं। दुर्गा के 10 हथियार 10 दिशाओं में भारती की संप्रभुता का गान थे।

भारतीय सेना के मुखिया सैम मानेकशा ने क्यों कहा था कि A nation that sings only half its war cry will lose half its wars. (जो देश जंग को आधा अधूरा बयां करेंगे वो आधा युद्ध हारने जैसा ही होगा) । दुर्गा का संघर्ष किसी समकालीन समुदाय के विरुद्ध नहीं था, असुरों के विरुद्ध था। तब कोई समुदाय उनके नाम से क्यों बिदकेगा? इंडोनेशिया में एक दुर्गा मस्जिद है। क्या वहाँ के बहुसंख्यक समुदाय ने उस मस्जिद जाना बंद कर दिया? मौलाना हसरत मोहानी ने 1921 में इसे मातृभूमि की पुकार की तरह बताया था जो यह है भी। 1905 के स्वदेशी आंदोलन में वन्देमातरम का पूरा गीत सड़कों पर गूँजा। नज़रुल इस्लाम ने गाया।

मूल वंदे मातरम् के शेष हिस्से की आवश्यकता आज इसलिए है कि भारत की न कोई विश्व-छवि और न कोई आत्म-छवि खंडित तरह से बने। जब आजाद हिंद फौज ने जापानी हवाओं में इसे गाया था तो पूरे पाँच छंद एक साथ गाये थे और उस फौज में बहुत सी आस्थाओं के सैनिक थे।

इजरायल का हतिक्वा (1878) गान में जिओन और यहूदी आत्मा है। फिलिस्तीनी नफरत करते हैं। पर क्या उसे इजरायल ने अपने यहाँ की एक आबादी को खुश करने के लिए काटा? नहीं। परिणाम? आयरन डोम, मोसाद, टफ राष्ट्र के रूप में वैश्विक छवि। इज़राइल के अधिकारियों और न्यायालयों ने भी यही टेक रखी कि यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन का गीत है, यह नहीं बदला जा सकता। तुर्की में एर्दोआन ने ओटोमन मार्च लौटाया–कोई धर्मनिरपेक्ष विद्रोह वहाँ तमाम आधुनिकीकरण के बाद भी नहीं हुआ। भारत में हमने गोली चलने से पहले ही अपना गान काट दिया। पूर्ण गीत अलगाव नहीं पैदा करता यदि अलगाव पहले से है–अपनी पहचान छोड़ कर आप किसी की नज़रों में सम्मान के पात्र नहीं होते।

लिथुआनिया के राष्ट्रगीत Tautiška giesme की भी काँट छाँट करने की माँग कुछ वर्ग वर्षों से कर रहे हैं। लिथुआनिया ने कहा कि ऐसे संशोधन उनकी दृष्टि में देश की राष्ट्रीय संप्रभुता से खिलवाड़ होंगे, जो अस्वीकार्य है। 2018 में equal opportunity commissioner ने जर्मनी के राष्ट्रगीत में आये Fatherland" को "homeland" शब्द से और "brotherly" को "courageously" शब्द से प्रतिस्थापित करने का सुझाव दिया पर चांसलर एंजेला मार्केल ने मना कर दिया और राष्ट्रपति फ्रैंकवाल्टर स्टीनमियर ने भी मना कर दिया।

प्रतीकों पर समझौता संप्रभुता का समर्पण होता है और आधा गान वैश्विक हँसी का पात्र बनाता है। BBC डॉक्यूमेंट्री (2025) का शीर्षक "India: The Reluctant Giant" इसीलिए था क्योंकि हम खुद को सेंसर करते हैं। उनका संदेश यह है कि यह देश अपनी जड़ों से कट चुका है। मैं 1937 में लिये गये निर्णय की आलोचना नहीं कर रहा। जिस निर्णय में देश के तीन असाधारण नेता शामिल हों, उस पर कुछ कहने लायक ऊँचाई अपनी है भी नहीं, न उस दौर का तापमान का इतने वर्षों बाद सुरक्षित दूरी पर बैठे हुए हम जैसे लोग सही आकलन नहीं कर सकते हैं। मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि 1957 में भारतीय कापीराइट एक्ट में संशोधन हुआ । उसमें किसी भी कवि या लेखक के मृत्यूपरांत भी उसके अपनी रचना पर नैतिक अधिकार का बने रहना माना गया। वह अधिकार उसके विधिक उत्तराधिकारी पर अंतरित होना स्वीकार किया गया। वह तो शुक्र मानिए कि बंकिमचंद्र जी के उदार वंशजों ने वन्देमातरम के इस संक्षिप्तीकरण पर अभी तक कोई आपत्ति नहीं की अन्यथा कोई भी कानूनन किसी महान रचना के साथ ऐसी स्वच्छंदता दिखाने या उसमें काट छांट नहीं देता ।

वन्देमातरम से छेड़छाड क्या वह सिर्फ एक ऐसी रचना का अंग-भंग नहीं था जिसने अंग्रेजों के बंग-भंग को भी रोक दिया था? तब उसे अक्षुण्ण रूप से गाया जाता था। यदि उसमें मूर्तिपूजा दिखती थी और आपने उस मूर्तिपूजा के तर्क को स्वीकार लिया तब क्या यह उस अमर गीत में वर्णित मूर्ति का भंजन नहीं हुआ? मध्यकाल में मूर्तियाँ पत्थर की होती थीं तो तोड़ दी जाती थीं तब हमने आधुनिक युग में इस शब्द-मूर्ति को तोड़ना उचित समझा कि कुछ लोग अकॉमॉडेट हो सकें? इससे वह विभाजन दिखता है, क्योंकि भारत सिर्फ प्रकृति ही नहीं है, जनसंख्या भी है। बंकिम को प्रकृति के तत्काल बाद वे भी याद आये थे। कोई भी राष्ट्र बनता तो अपनी आबादी से ही है। प्रकृति ईश्वर की निर्मिति है। पर संस्कृति तो मनुष्यों से बनती है। बंकिम प्रकृति और संस्कृति दोनों से समन्वित भारत की बात कर रहे थे–

कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले।

भारत की यह जनसंख्या जो भारत का सबसे बड़ा dividend सिद्ध होती, इसी को अंग्रेजी राज ने कभी अकालों और कभी महामारियों में करोड़ों की संख्या में मरवाया। उनका इरादा इस जनसंख्या के साथ भी वही करने का था जो उन्होंने अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की स्थानीय आबादी के साथ किया। उनका उत्पाटन और उन्मूलन। पर वंदे मातरम् के कवि ने इस आबादी को याद कराया कि तुम निःशक्त नहीं हो- अबला केन मा एते बल। शक्ति की शब्द-मूर्ति बंकिम ने अकारण ही नहीं गढ़ी थी। Baz Luhrmann ने कहा था–A life lived in fear is a life half lived. कि भय में बिताया जीवन आधा जिया जीवन है।

बंकिम को क्या मालूम था कि उनके गीत को ही आधा कर दिया जाएगा

एक विलक्षण यायावर : रवीन्द्रनाथ

डॉ. सुधीर सक्सेना
हिन्दी के वरिष्ठ कवि, लेखक, अनुवादक एवं पत्रकार

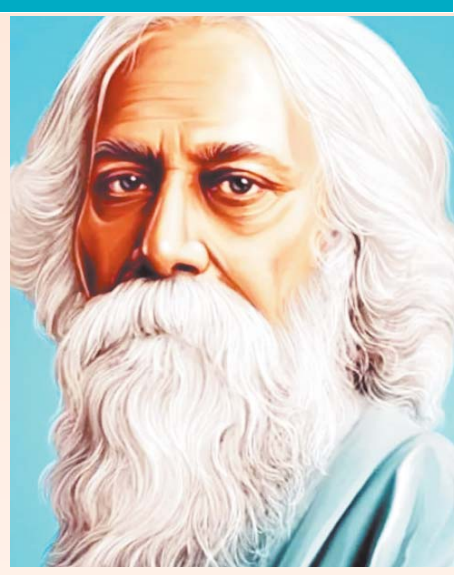

आमि एक जाजाबोर
हां, मैं हूं एक यायावर
हम सब हैं यायावर
वह भी था यायावर
विलक्षण जाजाबोर रवीन्द्रनाथ।

गुजरा इस पृथ्वी से
उन्नीसवीं शती के लगभग मध्य से
बीसवीं शती के लगभग मध्य तक
चलता रहा अहर्निश अविराम
आठ दशक जारी रहा
शब्दों से, रंगों से, रेखाओं से, सुरों से
आचार से, विचार से, भावों से, भंगिमाओं से
अनथक उसका सविनय संग्राम।

वह देखो कैलेंडर में फड़फड़ाती है
7 मई, सन् 1861 की तारीख
किंचित पीताभ नहीं, चमकीली नीलाभ
पश्चिम बंग में कलकत्ते में अभिराम
एक नहीं, उगे दो सूर्य
एक प्राची में, दूसरा ठाकुरबाड़ी, जोड़ासांको में
दोनों के मुख सुंदर, अम्लान
धरा पर अद्भुत युगल-विहान
खगकुल ने छेड़ा नव मधुर गान।

एक रवि गगन में
दूसरा शारदा-देवेन्द्र के प्रांगण में
डूबा पहला रवि सांझ गए
पर दमका दूजा आलोकित दिग-दिगंत
प्रतिदिन उज्ज्वल से उज्ज्वलतर
उज्ज्वलतर से उज्ज्वलतम।

चौदह की वय में
बनफूल से शुरू हुई यात्रा
कालांतर शब्दों में जुड़ी रेखाएं, जुड़े रंग
कंठ से फूटा सुमधुर संगीत निर्झर
पांव नहीं थमे
पगों की परिधि में दोनों गोलार्द्ध
श्रीलंका, रूस, इराक, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान
अमेरिका, कनाडा, पेरू, मलेशिया, हॉलैंड, इटली, ईरान।

सरहदें मिटीं, जन्मा विश्वकवि
उमगी ज्ञान और संवेदना के गोमुख से
विश्वकविता की अमिय धार
सींचे विश्व के प्राण
शुष्क मनों में अभिनव रस का संचार
जुड़े बर्नार्ड शॉ, बर्ट्रैन्ड रसेल, यीट्स, रोम्या रोलां, एजरा पाउंड, आइंस्टीन से तार...

एक दिवस मिले दो महानुभाव
गही बाहें
मिले रवीन्द्र से मोहनदास
कि मोहन से रवीन्द्रनाथ
नदी से नहीं,
सिंधु से भेंटा सिंधु
समेटे अनगिन धाराएं
क्षुब्ध नहीं, शांत गहन-गंभीर
विचलित दोनों ही
धरती, समाज और इतिहास के विकार से
आतुर, कटिबद्ध लड़ने को अंधकार से।

ज्योतिपुंज मिले दो ऐसे
कि रवीन्द्र हुए गुरुदेव
और महात्मा मोहनदास
लौकिक कायाओं में अलौकिक प्रकाश
देखा धरा ने
भिन्न होकर भी दोनों अभिन्न
दोनों वैष्णव जन तो तेणे कहिए,
जे पीर पराई जाने रे के वैष्णव जन।

गुनगुनाए गुरुदेव
जीवन जखन शुकाय जाय, करुणा धाराय एशो
की महात्मा ने सबको सन्मति की प्रार्थना
कहा गुरुदेव ने जोदि तोर डाक शुने केओ ना आशे,
किंतु दृश्य नितांत विलोम
नंगे फकीर के साथ चल पड़ा ज़माना
देखा गुरुदेव ने धवल स्वप्न
रचा नया नीड़ अभिनव।

वो देखो, जाजाबोर !
फलक पर दिपदिप दिनांक
13 नवंबर, सन् 1913
गीतांजलि पर नोबुल निसार
भारत को प्रथम बार
दासता में उन्नत गौरव अपार।

किसके हैं रवीन्द्र
शुधू आमार नाईं, शुधू नाईं तोमार
वास्तव में आमादेर
राष्ट्र कवि नहीं, विश्व-कवि
द्वीप नहीं, महाद्वीप नहीं
कविता में समग्र धरती की टेर
रचा एक नहीं, दो राष्ट्रों का गान
कहीं नहीं कोई कंफर्ट-जोन
किसी विधि अनीति नहीं स्वीकार
कभी नहीं निश्चल, कभी नहीं मौन, सर्वदा प्रतिकार
जालियांवाला नरमेध पर लिखा वायसराय को पत्र
लो, यह रहा नाइटहुडका खिताब
थिरका अधरों पर मानवमुक्ति का मंत्र।

विचित्रा में आज भी धरी हैं कुर्सी ओकांपे-प्रदत्त
जिस पर बैठ बरसों-बरस रचा प्रति-संसार
कहा, मिथ्या नहीं, वास्तव है जगत
सत्य जीवन, सत्य सर्वोपरि, सत्य ही ईश्वर
सृजन मानव मन का श्रृंगार।

कैसा अद्भुत जीवन
वर्ष, मास, दिवस, प्रहर, पल-प्रतिपल
कुछ भी नहीं अहेतुक
आराधना शब्दों से सत्य की
उसी की इबादत रंगों-रेखाओं से
सहेतुक जीवन
साधना सत्य की, सुंदर की, शिव की अविराम।

मृत्यु नहीं चाहता कवि
चाहता है फिर-फिर जनम
चाहता है जीना धरा पर बारंबार
उसे फ़कत अंध से, कलुष से, असत से
हिंसा से, अनीति से विराग
धरती से, जीवन से, प्रकाश से
वायु से, वनस्पतियों से, भद्रता से, शांति से,
गौरव से, गरिमा से, स्मित से उसका आत्मीय राग।

कहो तो, जाजाबोर !
कहां है वह लोक,
जहां चित्त भयग्रस्त नहीं
जहां बहती हो मुक्ति की मुक्त पवन मंद?

जब तक क्षुद्रता चलेगी इतराती-इठलाती
दीखेगा कवि विषण्ण
स्मृति में जीवित वह, जीवित उसकी रचनाएं चितचोर
धरती के स्वप्न में विचरता है
नाम उसका रवीन्द्रनाथ ठाकुर
विश्वव्रती विलक्षण जाजाबोर।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर विश्वास करती हैं महिलाएं, मोदी की हर गारंटी, हर आश्वासन पर देशभर की नारी-शक्ति का अटूट और दृढ़ विश्वास

स्थानीय निकायों, विधानसभाओं और संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से 2047 तक विकसित देश बनेगा भारत

भोपाल | संसद में 16 अप्रैल से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर चर्चा शुरू होने जा रही है। इसे लेकर देशभर में उत्साह का माहौल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं से इस संवैधानिक संशोधन के समर्थन में आगे आने और सांसदों को पत्र लिखकर भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह संशोधन महिलाओं की विधायी संस्थाओं में भागीदारी बढ़ाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम साबित होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि संसद इस प्रस्ताव को पारित कर लोकतंत्र को व अधिक सशक्त व समावेशी बनाएगी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में महिलाएं हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। विज्ञान, स्टार्टअप, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रिसर्च, स्पेस और डिफेंस जैसे क्षेत्रों में उनकी भागीदारी लगातार बढ़ रही है।

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए

आत्मनिर्भरता की मिसाल बन रहीं...

प्रधानमंत्री ने बताया कि देशभर में सेल्फ हेल्प ग्रुप्स के जरिए महिलाएं आत्मनिर्भरता की मिसाल बन रही हैं। ये महिलाएं न सिर्फ खुद सशक्त हो रही हैं, बल्कि अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि इन बदलावों को देखते हुए अब समय आ गया है कि विधायी निकायों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए। पीएम ने कहा कि पिछले कई दशकों में इस दिशा में प्रयास हुए, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। अब यह संशोधन उस कमी को दूर करने का अवसर है, जिससे लोकतांत्रिक व्यवस्था और मजबूत होगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले चुनावों में महिलाओं के आरक्षण का लाभ मिलेगा व लोकतंत्र अधिक समावेशी बनेगा।

नीति-निर्माण व निर्णय... पीएम ने 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य का जिक्र करते हुए कहा कि आधी आबादी की आकांक्षाओं को पूरा किए बिना यह लक्ष्य संभव नहीं है। महिलाओं की नीति-निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ने से विकास की रफ्तार तेज होगी।

रक्षा सूत्र

मध्य प्रदेश में अब जमीन पर दिखने लगा महिला सशक्तिकरण

भोपाल | मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण अब योजनाओं से आगे बढ़कर जमीन पर दिखने लगा है। आर्थिक सहायता, स्वयं सहायता समूह और सामाजिक अभियानों के जरिए महिलाओं की स्थिति में बड़ा बदलाव आया है। प्रदेश में 5 लाख से अधिक महिला स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनसे 65 लाख से ज्यादा महिलाएं जुड़ी हैं। इन समूहों के जरिए महिलाएं छोटे ऋण लेकर स्वरोजगार शुरू कर रही हैं और आर्थिक रूप से मजबूत बन रही हैं।

सरकार ने "महिला रक्षा बंधन" जैसे कार्यक्रमों की शुरुआत की है, जिससे समाज में महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा को लेकर सकारात्मक माहौल बनाया जा रहा है। प्रदेश में इन योजनाओं का असर यह है कि महिलाएं अब न केवल आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं, बल्कि सामाजिक निर्णयों में भी उनकी भागीदारी बढ़ रही है।

वहीं संकटग्रस्त और जरूरतमंद महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना संचालित है, जिसके तहत उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने, रोजगार उपलब्ध कराने और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है।

नारी-शक्ति का नीतियां बनाने से लेकर नेतृत्व तक बढ़ रहा है वर्चस्व

मध्य प्रदेश में पंचायत से प्रशासन तक बढ़ी महिलाओं की भागीदारी, बना नया इतिहास

भोपाल | मध्य प्रदेश के सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे में पिछले कुछ वर्षों में एक युगांतरकारी परिवर्तन आया है। 'नारी शक्ति' अब केवल एक आदर्श वाक्य न रहकर राज्य की प्रगति का मुख्य आधार बन चुकी है। राज्य ने न केवल नीतिगत स्तर पर महिलाओं को सशक्त किया है, बल्कि उन्हें निर्णय लेने वाले सर्वोच्च पदों पर भी स्थापित किया है। विधायी भागीदारी से लेकर ज़मीनी स्तर के लोकतंत्र (पंचायती राज) और प्रशासनिक नेतृत्व तक, महिलाओं का वर्चस्व हर क्षेत्र में बढ़ा है। यह रिपोर्ट राज्य में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, प्रमुख योजनाओं के प्रभाव और प्रधानमंत्री के 'महिला नेतृत्व वाले विकास' के विजन का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

बीते वर्षों में पंचायतों व नगरीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी रिकॉर्ड स्तर तक पहुंची है, जिससे स्थानीय शासन में उनकी भूमिका निर्णायक बनी है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लाखों महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिल रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण से जुड़ी योजनाओं ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार किया है। प्रशासनिक सेवाओं में भी महिलाओं की संख्या बढ़ने से नीति-निर्माण में संवेदनशीलता और संतुलन आया है।

मध्य प्रदेश के सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे में युगांतरकारी बदलाव...

राजनीतिक नेतृत्व

विधायी व संसदीय भागीदारी मध्य प्रदेश में महिलाओं का विधायी नेतृत्व संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों रूप से सशक्त हुआ है। राज्य की वर्तमान विधानसभा व संसद में महिलाओं की उपस्थिति यह दर्शाती है कि वे अब जटिल चुनावी राजनीति और नीति निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विधायी शक्ति (विधानसभा) मप्र की 16वीं विधानसभा (2023) में महिलाओं की भागीदारी में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। वर्तमान में 27 महिला विधायक प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

संसद में उपस्थिति

महिला विधायकों में अधिकांश स्नातकोत्तर व पेशेवर रूप से शिक्षित हैं, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर विशेषज्ञता के साथ चर्चा करती हैं। संसदीय प्रतिनिधित्व (लोकसभा) करने वाली मप्र की महिला सांसदों ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। 2024 के लोकसभा चुनावों में राज्य से 6 महिला सांसद संसद पहुंची हैं। इन प्रतिनिधियों ने संसद में महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा व जनजातीय कल्याण जैसे मुद्दों पर प्रभावी ढंग से राज्य का पक्ष रखा है।

जिलों की कमान

शासन की कमान महिलाओं के हाथ मप्र में प्रशासनिक स्तर पर महिलाओं का वर्चस्व एक नई मिसाल पेश कर रहा है। शासन की पारदर्शिता और तीव्रता सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर महिला अधिकारियों को प्राथमिकता दी है। जिला प्रशासन और कलेक्ट्रेट राज्य के 10 से अधिक जिलों की कमान वर्तमान में महिला कलेक्टरों के हाथों में है। यह संख्या राज्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विविधता इन महिला प्रतिनिधियों में समाज के हर वर्ग का समावेश है। विशेष रूप से जनजातीय और अनुसूचित जाति क्षेत्रों से आने वाली महिलाएँ अपनी प्रखर आवाज से विधायी प्रक्रियाओं को समृद्ध कर रही हैं।

महिला सशक्तिकरण

लाडली बहनों को अब तक दिए गए 52 हजार करोड़ रुपए

मध्य प्रदेश भारत का वह पहला राज्य है जिसने पंचायती राज संस्थानों और नगरीय निकायों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का क्रांतिकारी प्रावधान लागू किया था।

निर्वाचित प्रतिनिधि

राज्य की 23,000 से अधिक ग्राम पंचायतों में महिलाओं का वर्चस्व है। आंकड़ों के अनुसार, केवल आजीविका मिशन (SHG) से जुड़ी 17,000 से अधिक महिलाएं वर्तमान में सरपंच या पंच के रूप में निर्वाचित हैं।

जिला पंचायत

राज्य के लगभग 50% जिलों में जिला पंचायत अध्यक्ष के पद पर महिलाएं आसीन हैं। सागर, भिंड, मुरैना, खरगोन और नर्मदापुरम जैसे प्रमुख जिलों में महिला अध्यक्ष विकास बजट और योजनाओं का नियंत्रण कर रही हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण

'लाड़ली बहना' से 'लखपति दीदी' तक
आर्थिक आत्मनिर्भरता ही वास्तविक सशक्तिकरण का आधार है। मध्य प्रदेश सरकार की योजनाएं महिलाओं को केवल वित्तीय सहायता ही नहीं दे रही हैं, बल्कि उन्हें उद्यमी बना रही हैं। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना यह योजना राज्य के इतिहास की सबसे बड़ी प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण पहल बन चुकी है।
लाभार्थी: लगभग 1.29 करोड़ महिलाएं इस योजना के अंतर्गत पंजीकृत हैं।

वित्तीय सहायता

प्रत्येक लाभार्थी महिला को वर्तमान में 1,500 रुपये प्रति माह सीधे उनके बैंक खाते में प्रदान किए जा रहे हैं। प्रभाव: अब तक 52,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि वितरित की जा चुकी है। इस राशि ने ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग व्यय में 14% की वृद्धि की है और महिलाओं की परिवार के भीतर निर्णय लेने की शक्ति को सशक्त किया है।

आजीविका मिशन... प्रधानमंत्री के 'लखपति दीदी' विजन के तहत राज्य की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लखपति बनाने का लक्ष्य है। राज्य में 40 लाख महिलाएं 3.5 लाख स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं। ये महिलाएं पोषण आहार संयंत्र, स्कूलों की यूनिफॉर्म सिलाई व राशन दुकानों बखूबी चला रही हैं।

केंद्र का बड़ा कदम

महिला सशक्तिकरण के लिए राज्य का हरसंभव मदद

भोपाल| महिलाओं के सशक्तिकरण को केंद्र में रखकर सरकार ने पिछले एक दशक में योजनाओं का व्यापक नेटवर्क खड़ा किया है। इन योजनाओं का फोकस केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं, बल्कि जन्म से लेकर शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और पुनर्वास तक महिलाओं को मजबूत बनाना है। सरकार की प्रमुख योजना प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को 6,000 की आर्थिक सहायता दी जा रही है। यह राशि सीधे बैंक खाते में भेजी जाती है, जिससे गर्भावस्था के दौरान पोषण और स्वास्थ्य में सुधार सुनिश्चित हो सके।

सुरक्षित प्रसव, टीकाकरण और पोषण सुनिश्चित करना उद्देश्य

स्वास्थ्य क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए सुमन योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम और मिशन इंद्रधनुष जैसी योजनाएं संचालित हैं, जिनका उद्देश्य सुरक्षित प्रसव, टीकाकरण और पोषण सुनिश्चित करना है। वहीं दस्तक अभियान के जरिए बच्चों में बीमारियों की पहचान और इलाज किया जा रहा है। इसके अलावा स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सैनिटरी पैड वितरण, पोषण योजनाएं और डिजिटल ट्रैकिंग जैसी पहलें भी लागू की गई हैं।

मिशन शक्ति

मिशन शक्ति के 'समर्थ्य' घटक के तहत शक्ति सदन और सखी निवास योजनाओं ने भी बड़ा असर दिखाया है। संकटग्रस्त महिलाओं को आश्रय व पुनर्वास मिला, जबकि सखी निवास ने कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित आवास दिया। सरकार महिलाओं को राजनीतिक व कानूनी रूप से सशक्त बनाने पर भी जोर दे रही है। संसद में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

महिलाओं को उद्यमी बनाने की पहल करते सीएम डॉ. मोहन यादव

उद्यम क्रांति योजना में मिल रहा 50 लाख तक का ऋण

भोपाल | राज्य में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है। महिला उद्यमियों को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए 10 लाख रुपए तक का प्रोजेक्ट लोन 30% सब्सिडी के साथ दिया जा रहा है। वहीं, मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना के तहत 1 से 50 लाख रुपए तक का ऋण 3% ब्याज अनुदान के साथ उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। इधर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'महिला विकास' के बजाय 'महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास' पर जोर दिया है। 9 अप्रैल 2026 को अपने हालिया संबोधन में उन्होंने 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' (महिला आरक्षण बिल) को लोकतंत्र को मजबूत करने वाला कदम बताया।

खेल जगत में बढ़ा रहीं राज्य का मान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सांसदों से दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस सुधार का समर्थन करने की अपील की, ताकि 2029 के लोकसभा चुनाव और आगामी विधानसभा चुनाव महिला आरक्षण के साथ संपन्न हो सकें। क्रिकेट, मुक्केबाजी और पैरा-एथलेटिक्स में कई महिला खिलाड़ी राज्य का मान बढ़ा रही हैं। हाल ही में ब्लाइंड विमेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम में मध्य प्रदेश की तीन बेटियां शामिल थीं। न्यायपालिका और सुरक्षा राज्य उच्च न्यायालय में न्याय प्रक्रिया का नेतृत्व कर रही हैं। जिला न्यायालयों में महिला सिविल जजों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

नारी शक्ति को नई उड़ान **नारी-शक्ति को दी जा रही हरसंभव मदद, जन्म-शिक्षा, स्वास्थ्य तक सरकार उनके साथ**

महिला केंद्रित योजनाओं से बदल रही मध्यप्रदेश की तस्वीर डॉ. मोहन यादव सरकार ने सुरक्षा तंत्र को किया मजबूत

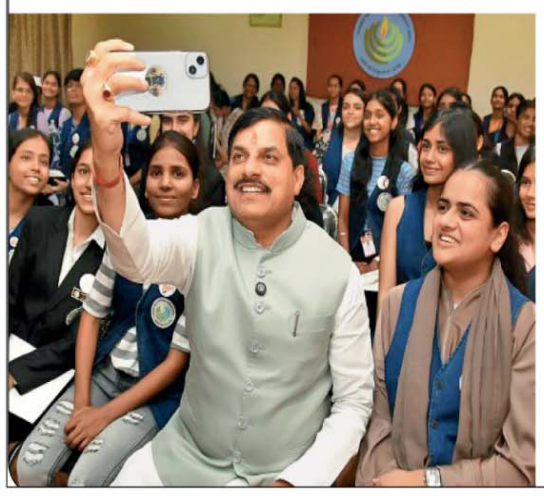

भोपाल | प्रदेश में महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर सरकार द्वारा कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य बालिकाओं के जन्म से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता तक हर स्तर पर सहयोग देना है।

बालिकाओं के उत्थान के लिए मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत जन्म से शिक्षा तक आर्थिक सहायता दी जाती है। संकटग्रस्त और जरूरतमंद महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना संचालित है, जिसके तहत उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने, रोजगार उपलब्ध कराने और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। इसके अलावा महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 भी आपात स्थिति में मदद के लिए सक्रिय हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए सुमन योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम और मिशन इंद्रधनुष जैसी योजनाएं संचालित हैं, जिनका उद्देश्य सुरक्षित प्रसव, टीकाकरण और पोषण सुनिश्चित करना है। वहीं दस्तक अभियान के जरिए बच्चों में बीमारियों की पहचान और इलाज किया जा रहा है। महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एमएसएमई विकास नीति 2025 और स्टार्टअप नीति 2025 के तहत विशेष प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इनमें पूंजी निवेश पर अनुदान और वित्तीय सहायता शामिल है।

योजनाएं महिलाओं को हर स्तर पर सशक्त बनाया जा रहा... स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सैनिटरी पैड वितरण, पोषण योजनाएं और डिजिटल ट्रैकिंग जैसी पहलें भी लागू की गई हैं। सरकार का दावा है कि इन योजनाओं के जरिए महिलाओं को हर स्तर पर सशक्त बनाया जा रहा है, जिससे वे समाज और अर्थव्यवस्था में अपनी मजबूत भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

D-19042/26

कोरोना काल

दोपहर मेट्रो के दवा और दहशत से बचाने वाले सरोकार

डॉ सुनील पांडे
मशहूर फिजियोथैरेपिस्ट
और स्तंभकार

जब देश को कोरोना ने अपनी चपेट में लिया तो पूरी दुनिया जानती थी कि अनावश्यक दवाओं और दहशत की वजह से लोग काल के गाल में समा रहे हैं। इन्हीं दोनों से बचाने के लिए दोपहर मेट्रो ने चलाई थी सार्थक मुहिम। इसका हिस्सा बने भोपाल के जाने माने चिकित्सक डॉ. भुवनेश्वर गर्ग और दोपहर मेट्रो के प्रधान सम्पादक राजेश सिरोठिया। उनके साथ खड़े हुए डॉ स्कन्द त्रिवेदी और डॉ राजेश शर्मा जैसे डॉक्टर, लोगों को लगातार आगाह कर रहे थे कि इस बीमारी से बचना है तो दहशत से खुद को बचाकर रखें।

नर्मदा अस्पताल के डॉ शर्मा को तो मैंने कभी अस्पताल में इस भयावह दौर में कभी मरीजों के बीच मास्क तक पहने नहीं देखा। डॉ अजय गोयनका ने तो घर जाना ही बंद कर दिया था। वो हमेशा अस्पताल के पीछे बने गेस्ट हाउस में ही रहे, लेकिन बहुत से ऐसे डॉक्टर भी थे जो फार्मा कम्पनियों की पैरवी के लिए खड़े थे और सरे आम कह रहे थे की रेमिडीसिविर दवा कोरोना में कारगर है। लेकिन दोपहर मेट्रो लगातार लिख रहा था कि जो दवा कोरोना से पहले जीका और इबोला वायरस को काबू नहीं कर सकी वह कोरोना में भला कैसे कारगर हो सकती हैं? यहाँ तक कि हर साल खोल बदलकर कहर बरपाने वाले एच1ऐन1 यानि स्वाइन फ्लू जैसे वायरस के खिलाफ टेमीफ्लू जैसी दवा कारगर नहीं हो सकी तो रेमीडीसिविर जैसी दवा क्या करेगी?

खुद राजेश जी ने मुझे बताया था कि कोरोना की इस महामारी के दौर में कई डॉक्टरों ने दुनिया की मजबूत फार्मा लॉबी के दवाब या प्रलोभन में आकर सरकारों को भी रेमीडीसिविर की बेवजह खरीदी करने को विवश किया। लोग इसका इस्तेमाल करके गंभीर होते रहे और अस्पतालों में हो रही मौतों से दहशत के चलते हजारों लोग असमय ही काल के गाल में समाते गए। राजेश जी ने मुझे बताया कि कोरोना के गंभीर संकट के दौर में भोपाल के एक नामीगिरामी डॉक्टर ने उनके किसी मित्र के जरिये फोन से संपर्क साधा कि वह उनका इंटरव्यू दोपहर मेट्रो में छापें और उनके हवाले से बताएं कि रेमिडीसिविर ही ऐसी दवा है जो कोरोना से बीमार लोगों को ठीक कर सकती है। लेकिन उन्होने विनम्रतापूर्वक उनके इस अनुरोध को यह कहकर ठुकरा दिया कि उनका अखबार तो इस दवा के इस्तेमाल से बचने की सलाह दे रहा है। लेकिन बाद में कई बड़े अखबारों में उनके हवाले से यह खबर छपी और कोरोना पीड़ितों के परिजन इस दवा के लिए सरकारों पर उसकी उपलब्धता सुनिश्चित करने का दवाब बनाने लगे।

सच बाद में यही निकला जब क्लिनिकल ट्रायल में विश्व स्वस्थ्य संगठन ने भी यह माना कि यह दवा कोरोना के मरीजों को ठीक करने या उसके उपयोग के बावजूद म्रत्यु दर कम करने में नाकाम रही। यही नहीं, कोरोना पीड़ितों पर हाइड्रोक्सोक्लोरोक्विन भी बेअसर साबित हुई। आईवरमेक्टिन जैसी दवा भी दी गई जबकि दोपहर मेट्रो लोगों को आगाह करता रहा की यह परजीवी नाशक दवा है । लोपिनवीर जो एड्स की दवा है, उसे भी दिया गया। ऐसी और कई दवाएं देकर कोरोना पीड़ितों को गिनीपिग बनाया गया जो उनकी जान नहीं बचा सकीं।

मुझे आज भी लगता है कि यदि लोग समय रहते चेत जाते और दवा तथा दहशत से बचकर चलते तो तो शायद अपनी जान बचा सकते थे। लेकिन दवा माफिया ने बड़े-बड़े मीडिया घरानों को मोहरा बनाकर इनके इस्तेमाल के लिए इस तरह प्रचारित किया कि यह उस माफिया के साथ ही कई डॉक्टरों और अस्पतालों के लिए आपदा में छुपा अवसर बन गया ।

दोपहर मेट्रो के पुराने पन्नों को पलटेंगे तो शायद आपको अंदाजा हो जायेगा कि उसके सामाजिक सरोकार इस विपदा काल में क्या थे। साथ में यह सबक भी कि किसी भी समाचार पत्र को ऐसे संकट के मौकों पर क्या भूमिका निभानी चाहिए। उसे लोगों को बेवजह के भय या पैनिक से बचाना है या शमशान घाटों पर जलती लाशों के बड़े - बड़े फोटो छापकर अपने पाठकों को डराना है। उन्हें यह अहसास भी होना चाहिए कि अख़बार सिर्फ काग़ज़ का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि समाज का दर्पण और लोकतंत्र का प्रहरी भी है। हर खबर का विश्वसनीय साथी है। हमें घर बैठे ही सात समंदर पार की घटनाओं से रूबरू कराता है। अखबार न केवल सूचना देता है, बल्कि हमारे ज्ञान और विचारों को भी नई धार देता है।

एक चिकित्सक के नाते मैंने महसूस किया कि दोपहर मेट्रो ने करोना काल के दौरान अपने कवरेज से वही भूमिका निभाई जो हर किसी जिम्मेदार खबरनवीस को निभाना चाहिए। जहाँ कई अखबार फार्मा कम्पनियों के मायाजाल में उलझकर जाने - अनजाने या चाहे - अनचाहे भयादोहन के भंवरजाल में फंस रहे थे,वहां दोपहर मेट्रो सीधे सवाल खड़े कर रहा था। जब कोरोना की कोई दवा ही दुनिया में उपलब्ध नहीं है तो कोई भी कोरोना पीड़ित दवा क्यों लें ? जब वायरस के खिलाफ शरीर खुद एंटीबाडी बनाता है तो बेवजह की एंटीबायोटिक दवा की क्या जरुरत है ? इसे बेवजह क्यों लें ? सबको पता है की ऐसी दवाएं शरीर की इम्युनिटी कम करती हैं। वायरस के खिलाफ एंटीबॉडी तैयार करने में बाधा खड़ी करती हैं, जिससे मरीज की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। शरीर के भीतर एंटीबॉडी तभी बन पाती है जब शरीर में भीतर से दम हो।

कोविड-19 महामारी के चुनौतीपूर्ण समय में दोपहर मेट्रो अखबार ने ऐसी तमाम भ्रांतियों को दूर कर तथ्यों, वैज्ञानिक शोधों और ग्राउंड रिपोर्टिंग के माध्यम से समाज को सटीक जानकारी पहुँचाने की कोशिश की। लेकिन नक्कारखाने में ऐसी बातें कहाँ ठहर पाती है? पर राजेश सिरोठिया एवं उनकी मीडिया रिपोर्टों ने सरकारी आंकड़ों के विपरीत जमीनी हकीकत उजागर करने की कोशिश नहीं छोड़ी। जन मानस के लिए निष्पक्ष पहलू को प्राथमिकता दी

लिखखाड़ मित्र राजेश भाई जैसा कोई नहीं.....

अशोक मनवानी
लेखक, जनसम्पर्क अधिकारी

पत्रकारिता दिवस के अवसर पर लिखखाड़ मित्र की युवावस्था का स्मरण कर रहा हूं। ऊर्जा से भरपूर युवक राजेश सिरोठिया अनायास पत्रकारिता में नहीं आए। उनमें लिखने पढ़ने की बचपन से लगन रही। वैसे ही लोगों का सानिध्य भी उन्हें मिला।

मैं अपनी पत्रकारिता की हॉबी और उसकी शुरुआत का स्मरण करता हूं तो मुझे सबसे ज्यादा याद आते हैं सागर में मेरे पत्रकारिता गुरु भवन भूषण देवलिया जी। साथ ही इस जर्नलिज्म बैच में वर्ष 1983 में मुझे ऐसे साथी मिले जो शुरुआती दौर में मेरे हमसफर बने। हम दोनों को लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, सलीम जावेद और न जाने क्या-क्या पदवियां दी गईं। कुछ लोगों ने तो विक्रम वेताल भी कहा। दरअसल राजेश भाई की मोटरसाइकिल राजदूत की सवारी सबसे ज्यादा जिन मित्रों ने की उसमें मैं शामिल हूं। वे बहुत अच्छी ड्राइव करते हैं,साथ ही सशक्त कलम के धनी हैं। लिखने की सधी हुई रफ्तार और वैसा ही बाइक चालन। इसके लिए जाने जाते हैं। शायद पुरातत्व में पीजी करने के लिए यूनिवर्सिटी के सेंट्रल ऑफिस में पहली बार राजेश मुझे मिले थे। मेरे पिता पुरातत्व के ही प्रोफेसर थे और उन्होंने राजेश भाई को पढ़ाया भी है।

इस बीच सागर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता की डिग्री प्रारंभ हो गई थी। ना शिक्षकों की व्यवस्था थी न पुस्तकें। तब मोर्चा संभाला देवलिया सर ने। नागपुर से प्रोफेसर के जी मिश्रा आए फिर बाद में दविंदर कौर उप्पल भी आई। कृष्णात्रे जी का आगमन तो हमारे बी जे करने के बाद ही हुआ। समाजशास्त्र के पीएच.डी. कर रहे अध्येता डॉ भूपेंद्र गौतम प्रिंसिपल ऑफ मास कम्युनिकेशन पढ़ाने आते थे। यूनिवर्सिटी के सोशल साइंस ब्लॉक में पत्रकारिता विभाग लगता था ।

राजेश सिरोठिया का लिखने का जुनून मैंने तभी देखा जब सागर के अनेक अहम विषयों को हमने स्पर्श किया। चाहे बीड़ी श्रमिकों का दर्द हो या विशाल सागर सरोवर की दुर्दशा। जिस झील के नाम पर शहर का नाम सागर हुआ उसकी बदहाली अच्छी नहीं लगती थी। आलेखों की श्रृंखला शुरू कर दी हम दोनों मित्रों ने। चाहे दैनिक जागरण हो या दैनिक भास्कर, नवभारत हो या हमारा उस दौर का प्रिय अखबार नई दुनिया इंदौर। एक से बढ़कर एक आलेख हम दोनों में संयुक्त रूप से लिखे। इनमें हैं सुखीं जलप्रदाय परियोजना,नौरादेही अभयारण्य, पथरिया बेड़नी ग्राम में शासन प्रशासन

के नवाचार, सागर के ऐतिहासिक किले गढ़पहरा के खजाने का रहस्य ,राहतगढ़ जलप्रपात क्यों लेता है हर साल बली, रानगिर की हरसिद्धि माता,चकराघाट का सौंदर्य, उपेक्षित क्यों हैं कवि पद्माकर,सागर को चाहिए ऑडिटोरियम, स्टेडियम बना लेकिन बैठें कहां दर्शक, इस तरह के अनेक विषय थे,जिन पर निरंतर लिखा गया। साहित्यिक पत्रकारिता भी की। कथा सम्राट प्रेमचंद जी की सुपुत्री अम्मा कमला देवी का विशेष साक्षात्कार लिया। शहर को मालूम ही नहीं था कि इतने बड़े लेखक की बेटी यहां रहती हैं। नई दुनिया इंदौर के रविवारीय परिशिष्ट में इसे सम्मानजनक जगह मिली। आर्टिकल हिट हो गया । आर्टिकल से हम दोनों को बहुत यश मिला। मैं 1986 में बेंगलुरु चला गया जब वेद प्रताप वैदिक के संपादन में हिंदी दैनिक आदर्श पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। राजेश भाई ने दैनिक भास्कर भोपाल ज्वाइन कर लिया। लेकिन जो चार-पांच साल हम लोगों ने मिलकर कार्य किया वो यादगार बन गया। राजेश भाई ने अपनी पुस्तक में मेरा जगह - जगह उल्लेख भी किया है। दोपहर मेट्रो प्रारंभ करने के पहले राजेश भाई नई दुनिया , दैनिक भास्कर , आउटलुक, गवर्नेंसेस नाउ, बिज़नेस वर्ल्ड , अग्निबाण और अनेक पत्र पत्रिकाओं से जुड़े रहे हैं। उनका काम करने का जज्बा कायम है। ईश्वर उनको ऐसी क्षमता दे कि वे पत्रकारिता के अंतरिक्ष में जगमगाते सितारे बनें। इस दिवस पर यह कामना करता हूं कि राजेश भाई राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाएं। यह भी बता दूं कि वे कुछ वर्ष से राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय विषयों पर निरंतर लिख रहे हैं। पत्रकार दिवस और दोपहर मेट्रो समाचार पत्र की यात्रा की दस वर्ष की यात्रा पूर्ण होने पर पर इस कर्मठ ,जुनूनी, बेमिसाल कार्य करने वाले मित्र को मंगलकामनाएं देता हूं।

कोरोना के बाद अब जंग के साइड इफेक्ट झेलती दुनिया

सुनील भंडारी
दोपहर मेट्रो के आर्थिक
मामलों के स्तंभकार

दो साल में कोरोना महामारी के दो दौर झेलने के फौरन बाद रूस-यूक्रेन का युद्ध शुरू हुआ तो उसका असर यूरोप नाटो देश सीमित था। थोड़ा बहुत असर आस्ट्रलिया और न्यूजीलैंड पर भी पड़ा। लेकिन खासतौर से भारतीय तेल और गैस कंपनियों ने जमकर फायदा उठाया। ओपेक की कीमतों से बेहद कम दरों पर भारत को तेल और गैस की सप्लाई हुई। भारत ने न सिर्फ अपनी जरूरतों तो पूरा किया बल्कि उसने जो तेल और गैस रूस से सीधे यूरोप जाता था उसका रास्ता भारत से कर दिया। इससे भारत और उसकी तेल कंपनियों और रिफाइनरी को जमकर फायदा हुआ। यही नहीं यूक्रेन जो यूरोप को गेहूं का बड़ा निर्यातक था, उसकी सप्लाइ चेन बाधित हुई तो न सिर्फ भारतीय अनाज व्यापारियों को भी फायदा हुआ बल्कि किसानों को भी गेंहूं का अच्छा दाम मिला।

28 फरवरी को जब इजरायल के साथ अमेरिका ने अपने मंसूबों को शुमार करते हुए सीधे जंग में कूदा तो पूरी दुनिया के हालात बिगडने लगे। यह सब क्यों हुआ इसकी कहानी सबके सामने है। ईरान पहले से ही तैयारी करके बैठा था कि अमेरिका उस पर हमला बोलेगा तो उसे पलटवार के बतौर क्या करना है। नतीजा क्या हुआ ईरान ने अमेरिका को दुनिया के सामने विलेन साबित कर डाला। पेंच अभी भी फंसे हुए हैं। कब सुलझेंगे? कितने सुलझेंगे? यह किसी को नहीं पता लेकिन इस दफे सारी दुनिया इस बेवजह की जंग का खामियाजा झेलने को चाहे अनचाहे झेलने को विवश है। दुनिया कोई शख्स ऐसा नहीं है जिसकी जेब पर इस जंग के चलते डाका नहीं पड़ा। जिसकी जेब नहीं कटी। जो लूट का शिकार नहीं हुआ। दुनिया के बाजार मंहगाई की सीधी सी दलील के साथ तैयार बैठें है। क्या करें भाई? ईरान की जंग के चलते सब कुछ मंहगा हो गया है। दुनिया के स्टॉक बाजार हाहाकार कर रहे हैं। शेयर मार्केट में खलबली मची है। सेंसेक्स का पारा तेजी से ऊपर नीचे हो रहा है। सोने चांदी की कीमतें किसी दिन उछाल मारती है तो किसी दिन धड़ाम करती दिख रही हैं।

सवाल अब यह नहीं बचा कि इसके लिए जिम्मेदार अब कौन कितना है, सवाल यह है कि दुनिया को बेवजह इसके साइड इफेक्ट को क्यों झेलना पड़ रहा है? सब्जी भाजी और रसद सामग्री से लेकर ईधन पर टिका परविहन का सारा कारोबार इसके असर से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। पर्यटन और उससे जुड़े कारोबार की दुनिया लगातार सिमट रही है। अमेरिका के खजाने पर दो ट्रिलियन डालर से ज्यादा का असर पड़ चुका है। आगे कितना पड़ेगा, इसका फैसला अमेरिकी के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के तुगलकी फैसलों के भरोसे है। ट्रम्प हैं कि मानते ही नहीं। वह किसी की सुनने को तैयार नहीं है। उनके हर दिन बदलते

फरमान और हर पल बदलते तेवर पूरी दुनिया पर भारी पड़ रहे हैं। भारत जैसे देश ही नहीं चीन को भी अपनी उर्जा जरूरतों की पूर्ति के लिए क्या क्या जतन करना पड़ रहे हैं , यह किसी से छुपा नहीं है। पाकिस्तान और पूर्वी अफ्रीकी देशों की तो बात ही क्या करें। दक्षिण कोरिया से लेकर जापान तक इस जंग के असर से कराह रहा है।

मिडिल ईस्ट के देश को धरती के तेल पर कभी दुनिया में रश्क का विषय बनते थे, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने उसकी उनकी वैश्विक ग्रोथ की रफ्तार 3.4 से घटाकर 3.1 फीसदी कर दी है। यह नुकसान थोड़ा नहीं बल्कि आधा ट्रिलियन डालर का नुकसान है। ईरान के हर दिन सैन्य अभियान के चलते 3500 करोड़ भारतीय रूपयों का नुकसान हो रहा है। खाड़ी देशों में 3 6 लाख नौकरियों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इन अमीर देशों में कार्यरत चालीस लाख लोग गरीबी की रेखा के नीचे जा सकते हैं। ऊपर से विडम्बना की बात है कि अमेरिका से यारी निभाने के फेर में फंसे कतर, कुवैत, यूएई और सऊदी अरब जैसे देश उसी अमेरिका से 8.6 अरब डॉलर के हथियार खरीदने को विवश है। यानी जिसके कारण वे आज असुरक्षा के घेरे में हैं जो अमेरिका के भरोसे देशों को महफूज मानकर चल रहे थे।

न तो कोरोना की बीमारी का कोई इलाज था और न ट्रम्प की महामारी का कोई तोड़ दुनिया को दिख रहा है। अमेरिका फर्स्ट बनाने के सपने के साथ चले डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने ही देश के लोगों को आखिरी पायदान धकेल दिया है।

वैश्विक आर्थिक नुकसान के प्रमुख आँकड़े

- वैश्विक तेल आपूर्ति में लगभग 13 फीसदी की कमी और LNG आपूर्ति में लगभग 20 फीसदी गिरावट दर्ज की गई।
- IMF के अनुसार यदि संघर्ष लंबा चला तो वैश्विक विकास दर 3.1 फीसदी से गिरकर 2फीसदी तक जा सकती है तथा वैश्विक मुद्रास्फीति 5.8 फीसदी तक पहुँच सकती है।
- UNCTAD के अनुसार वैश्विक व्यापार वृद्धि, जो 2025 में लगभग 4.7 फीसदी थी, 2026 में घटकर केवल 1.5–2.5 रहने का अनुमान है।
- मार्च 2026 तक वैश्विक शेयर बाजारों से लगभग 11.5 ट्रिलियन डॉलर की मार्केट वैल्यू मिट गई थी।
- तेल की कीमतें कई बार 100–118 डॉलर प्रति बैरल तक पहुँच गईं, जिससे परिवहन, बिजली, खाद्य और निर्माण लागत में भारी वृद्धि हुई।
- उर्वरक कीमतों में 30–40 फीसदी वृद्धि हुई, जिससे विश्वभर में खाद्यान्न महँगाई बढ़ने की आशंका है।

विभिन्न देशों और क्षेत्रों पर प्रभाव

भारत

- भारत जैसे तेल आयातक देशों पर सबसे अधिक दबाव पड़ा।
- कच्चे तेल के महँगे होने से पेट्रोल-डीजल, गैस, परिवहन और खाद्य कीमतों में बढ़ोतरी हुई।
- शेयर बाजारों में अस्थिरता और रुपये पर दबाव बढ़ा।

सऊदी अरब

- युद्ध के कारण सरकारी खर्च और सैन्य व्यय तेजी से बढ़ा।
- केवल पहली तिमाही में लगभग 33.5 बिलियन डॉलर का बजटीय घाटा दर्ज किया गया।

क़तर

- LNG अवसंरचना को नुकसान से निर्यात प्रभावित हुआ।
- IMF ने कतर की आर्थिक वृद्धि में भारी गिरावट का अनुमान जताया।

जापान और यूरोपीय देश

- ऊर्जा आयात पर निर्भरता के कारण उद्योगों की लागत बढ़ी।
- यूरोप में गैस कीमतों में लगभग 60 फीसदी तक वृद्धि हुई।

अमेरिका

- अमेरिकी बाजारों में भारी गिरावट देखी गई।
- रक्षा और सैन्य संचालन पर अरबों डॉलर का अतिरिक्त खर्च हुआ।

वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े प्रभाव

- ऊर्जा संकट – तेल और गैस आपूर्ति बाधित।
- महँगाई में वृद्धि – खाद्य, परिवहन और निर्माण महँगा।
- वैश्विक व्यापार धीमा – समुद्री मार्ग और बीमा लागत प्रभावित।
- शेयर बाजारों में गिरावट – निवेशकों का भरोसा कमजोर।
- विकास दर में गिरावट – कई देशों में मंदी का खतरा।

गंजबासौदा पुलिस को मिली बड़ी सफलता

सूने मकान में चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार, साढ़े चार लाख के जेवर बरामद

गंजबासौदा। दोपहर मेट्रो

थाना शहर पुलिस ने सूने मकान में चोरी की वारदात का खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से करीब 4 लाख 50 हजार रुपए कीमत के सोने-चांदी के आभूषण बरामद किए हैं। बरामद मशरूका में लगभग 25 ग्राम सोने के जेवर सहित चांदी के आभूषण शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार थाना शहर फरियादी दिनेश उर्फ रिक्की पिता राकेश कुमार जैन निवासी नानाजी वाली गली, चंद्रप्रभु नगर द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। फरियादी ने बताया कि वह 26 अप्रैल की रात अपने छोटे भाई की शादी में शामिल होने सिरोंज गए थे और घर पर ताला लगा हुआ था। अगले दिन सुबह पड़ोसियों ने सूचना दी कि घर के ताले टूटे हुए हैं। घर पहुंचने पर सामान बिखरा मिला तथा दीवान में रखी लकड़ी की पेटी और गोदरेज से सोने-चांदी के इस्तेमाली जेवरात एवं नगदी गायब थी। घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी ने आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश

दिए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशांत चौबे एवं एसडीओपी शिखा भलावी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी निरीक्षक संजय वेदिया के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने घटना स्थ+ल का निरीक्षण कर भौतिक एवं तकनीकी साक्ष्य जुटाए। विवेचना एवं मुखबिर सूचना के आधार पर पुलिस ने फ्रीगंज से दो आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में दोनों आरोपियों ने चोरी करना स्वीकार कर लिया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से करीब 4.50 लाख रुपए कीमत के सोने-चांदी के आभूषण बरामद किए हैं। पुलिस आरोपियों के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई कर रही है। इस पूरे मामले के खुलासे में थाना प्रभारी निरीक्षक संजय वेदिया, उपनिरीक्षक गौरव रघुवंशी, प्रधान आरक्षक सुरेश रघुवंशी, प्रधान आरक्षक सतेन्द्र रावत, आरक्षक अभिषेक शुक्ला, आरक्षक अरुण छारी, आरक्षक अखिलेश राजावत, आरक्षक शिवप्रताप सिंह एवं आरक्षक रुपेश की सराहनीय भूमिका रही।

ग्राम दूधी में तेज रफ्तार बाइक आपस में भिड़ीं, दो युवकों की मौत

धार। दोपहर मेट्रो

जिले के धामनोद थाना क्षेत्र अंतर्गत एबी रोड पर ग्राम दूधी में दो बाइकों के बीच हुई आमने-सामने की भीषण भिड़ंत में दो युवकों ने मौके पर ही मौत हो गई, जबकि गुजरी बगवानिया भाजपा मंडल अध्यक्ष गंभीर रूप से घायल हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार दुर्घटना पाबला सर्विस सेंटर के सामने हुई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बाइकों के परखच्चे उड़ गए और उस पर सवार युवक सड़क पर जा गिरे। हादसे में चिकटियाबढ़ टाण्डा निवासी जगदीश पिता शिवकुमार नायक और भोडल निवासी मोहन पिता धनसिंग की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इस दुर्घटना में गुजरी बगवानिया भाजपा मंडल अध्यक्ष करण काहीर भी गंभीर रूप से घायल हुए हैं। उनके हाथों में काफी चोटें आई हैं। राहगीर प्रकाश नायक ने तत्काल अपनी पिकअप वाहन से तीनों को धामनोद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉ. सचिन पाटीदार ने परीक्षण के बाद जगदीश और मोहन को मृत घोषित कर दिया। वहीं, घायल भाजपा मंडल अध्यक्ष का प्राथमिक उपचार कर उन्हें भर्ती किया गया है। डॉ. पाटीदार ने बताया कि हादसे की सूचना पुलिस को दे दी गई है। पोस्टमार्टम के बाद शवों को परिजनों के सुपुर्द किया जाएगा।

गुस्साए लोगों ने की कार्रवाई की मांग

अज्ञात लोग बालक को उठा ले गए, जांच में जुटी पुलिस

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

तेजगढ़ थाना क्षेत्र की इमलिया चौकी अंतर्गत ग्राम महुआखेड़ा से एक 3 वर्ष का बालक के लापता होने का मामला सामने आया है। परिजनों और ग्रामीणों की माने तो सफेद कार जिसपर काली फिल्म चढ़ी थी और बच्चों के कपड़े बेचने के बहाने बाइक से आए अज्ञात लोग बालक को उठाकर ले गए है। परिजनों की जानकारी पर तेजगढ़ थाना पुलिस मामला दर्ज कर कार्यवाही और जांच में जुटी हुई है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीणों ने मामले में तत्काल कार्यवाही की मांग को लेकर शुक्रवार शाम पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पहुंचकर ज्ञापन सौंपा। जानकारी अनुसार ग्राम महुआखेड़ा निवासी माखन पिता कनई सिंह लोधी का 3 वर्षीय बालक अनिरुद्ध लोधी दोपहर को घर पर था और अचानक ही वह लापता हो गया। बालक को लापता देख ग्रामीणों ने अलग-अलग स्थान पर उसकी तलाश शुरू की और काफी तलाश करने के बाद भी बालक की कोई जानकारी उन्हें नहीं लगी। वही इस दौरान ग्राम के कुछ बच्चों ने बताया की एक बाइक पर बच्चों के कपड़े बेचने वाला उनके घर तक आया था और एक सफेद कर भी

गांव के बाहर खड़ी थी जो बालक को उठाकर ले गए हैं। बच्चों से जानकारी मिलने के बाद परिजन और ग्रामीण सकते में आ गए उनके द्वारा तत्काल ही पुलिस को सूचना देने के साथ ही पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर कार्यवाही की मांग की है। वहीं दूसरी ओर घटना की गंभीरता को देख तेजगढ़ थाना और इमलिया चौकी पुलिस जांच में जुटी है। स्थानीय लोगों ने गांव के बाहर मुख्य सड़क पर कार खड़ी होने की पुष्टि तो की है। परंतु कार से किसी भी व्यक्ति के बाहर निकलने की बात फिलहाल सामने नहीं आई है। इसके साथी बाइक सवार व्यक्ति के संबंध में की कोई स्पष्ट जानकारी अभी तक सामने नहीं आई है।

पार्षद पुत्र पर चाकूबाजी

भोपाल-नागपुर फोरलेन ढाबे पर हमला, दो घायल

नर्मदापुरम। दोपहर मेट्रो

देर रात इटारसी के पास भोपाल-नागपुर फोरलेन पर स्थित एक ढाबे पर पार्षद पुत्र आकाश यादव पर अज्ञात बदमाशों ने चाकू से हमला कर दिया। बचाव में बीच में आए ढाबे के कर्मचारी तुलसी को भी चोटें आईं। दोनों का इलाज इटारसी के निजी अस्पताल में चल रहा है। जानकारी के मुताबिक, बीती रात आकाश अपने ढाबे पर थे। तभी कुछ अज्ञात लोग आए और विवाद हो गया। गुस्से में आकर उन्होंने आकाश के चेहरे पर चाकू से वार किया। बचाव करने आए तुलसी की जांघ और कूल्हे पर भी चाकूबाजों ने प्रहार किए। हमलावर मौके से फरार हो गए। आकाश को चेहरे पर करीब 12 टांके आए हैं, जबकि तुलसी को जांघ व कूल्हे पर अंदरूनी व बाहरी टांके लगे हैं।बता दे कि घायल हुए ढाबा संचालक आकाश कि माँ सत्ताधारी दल से नगर पालिका मे पार्षद और सभापति है शहर में लगातार हो रही चाकूबाजी की घटनाओं से पुलिस की कार्यप्रणाली सवालों के घेरे में है। सोशल मीडिया पर लोग कह रहे हैं कि खाकी का डर खत्म हो गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

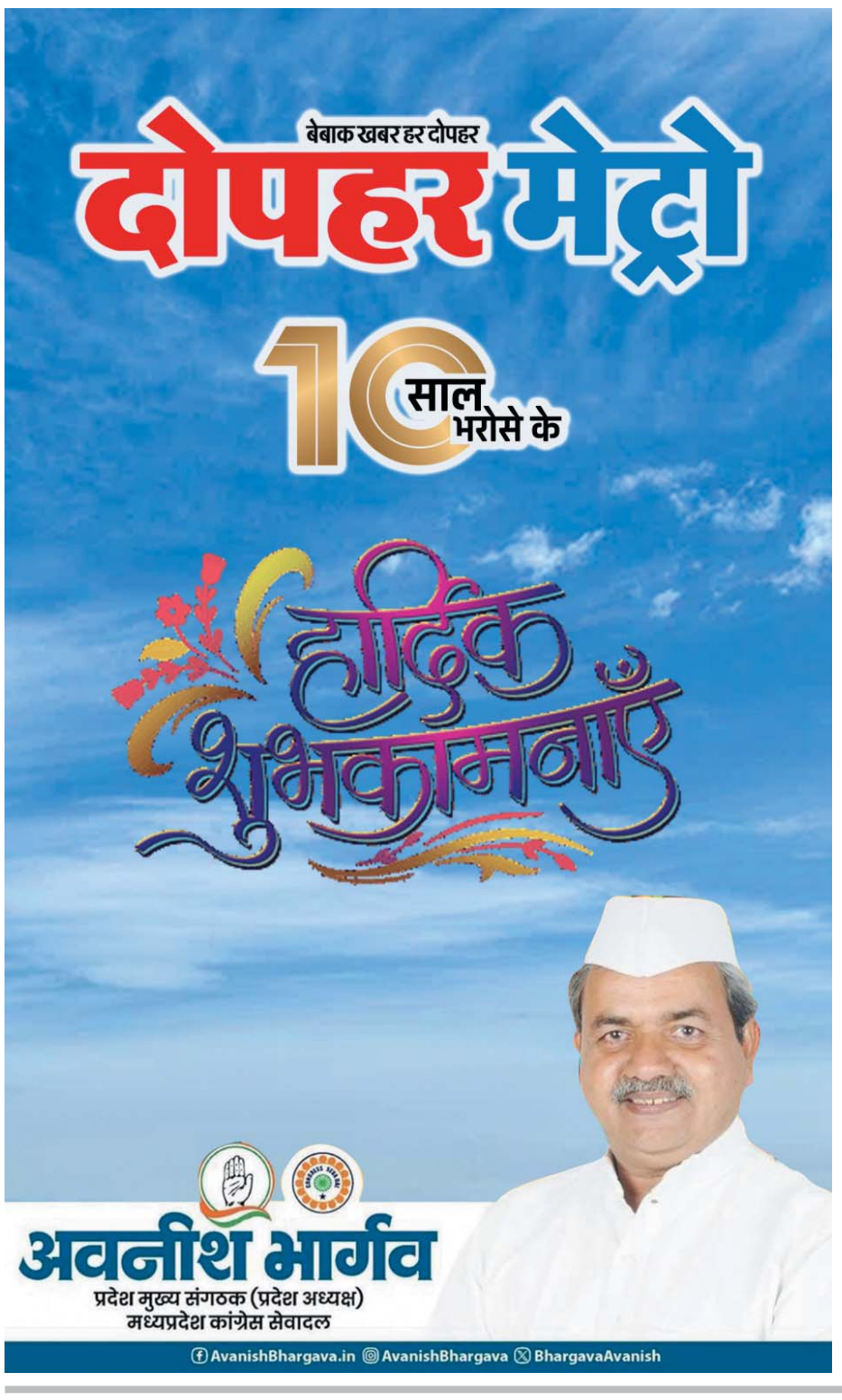

प्रणाम दुष्यन्त कुमार और प्रणाम उनके नेपथ्य की शक्ति राजेश्वरी त्यागी को

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं..!

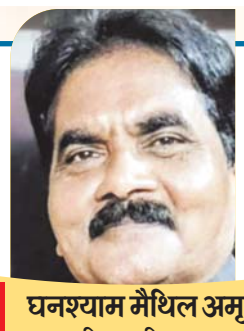

घनश्याम मैथिल अमृत
वरिष्ठ साहित्यकार

दुष्यन्त कुमार यानि पूरा नाम दुष्यन्त कुमार त्यागी। इन्हें भला कौन नहीं जानता। इन्होंने जो भी लिखा वह पत्थर की लकीर हो गया, खासतौर से उनकी कही ग़ज़लें तो जैसे मुहावरे बन गईं। संसद से लेकर सड़कों तक ऐसा कौन पक्ष या विपक्ष का नेता होगा जिसने अपनी बात प्रभावी ढंग से रखने के लिये उनकी पंक्तियों का उल्लेख न किया हो।

दुष्यन्त कुमार आधुनिक हिन्दी कविता के ऐसे सशक्त कवि थे जिन्होंने कविता को जन-जीवन की पीड़ा, संघर्ष और सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। उनका जन्म 1 सितम्बर 1933 को उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में हुआ और 30 दिसम्बर 1975 को भोपाल में उनका निधन हुआ। वे हिन्दी के प्रखर चेतना सम्पन्न जनकवि माने जाते हैं। दुष्यन्त कुमार का व्यक्तित्व भी बड़ा प्रभावशाली था, गौर वर्ण, उन्नत ललाट ऊंचा पूरा कद साथ ही अत्यंत सरल, संवेदनशील और विद्रोही स्वभाव भी और यारों के यार ठहाकेदार जीवंत महफ़िलों के केंद्र वे अपने लेखन में निर्भीक होकर सत्ता और व्यवस्था की विसंगतियों पर खुलकर प्रहार करते थे।

उनमें हृदय में सामाजिक अन्याय के प्रति तीव्र आक्रोश और बदलाव की उत्कट आकांक्षा थी। वे आम आदमी के दुख-दर्द को अपनी कविता का मूल केंद्र बनाते थे।उनकी रचनाओं के तेवर में पैनापन था । उनकी भाषा सहज,सरल बोलचाल की और प्रभावशाली थी, जिससे वे सीधे जनमानस से जुड़ते हैं। दुष्यन्त कुमार आडंबर और बनावटीपन के घोर विरोधी तथा स्पष्टवादी थे। वे समाज में ज़मीनी बदलाव चाहते थे

उनका व्यक्तित्व एक ऐसे कवि का था जो केवल लिखता नहीं, बल्कि समाज की नब्ज को महसूस करता है। दुष्यन्त कुमार को आम आदमी भले एक़ ग़ज़लकार के रूप में जानता हो परन्तु उनके सृजन का क्षेत्रफल व्यापक था उन्होंने कविता, ,नाटक और उपन्यास आदि सभी विधाओं में महत्वपूर्ण लेखन किया, लेकिन उन्हें सबसे अधिक प्रसिद्धि हिन्दी ग़ज़लों से मिली। साये में धूप उनकी अमर गज़ल कृति है ।

साये में धूप हिन्दी ग़ज़ल को नई पहचान देने वाली उनकी अमर कृति है। इसमें उन्होंने परंपरागत प्रेम-विषयक ग़ज़लों से हटकर राजनीतिक, सामाजिक और जन-सरोकारों को अपना स्वर दिया। है इन गज़लों के कुछ प्रसिद्ध शेर -

कहां तो तय था चरागां हर एक घर के लिए,
कहां चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए,
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिये ।

यह सारा जिस्म बोझ से दोहरा हुआ होगा,
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा ।

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से नई गंगा निकलनी चाहिए ।

कैसे आकाश में सुराख हो नहीं सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ।

ये कालजयी पंक्तियाँ आज भी व्यवस्था पर सीधा तीखा व्यंग्य सीधा प्रहार सीधी चोट करती हैं।

दुष्यन्त कुमार ने हिन्दी ग़ज़ल को उर्दू की पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालकर आम जनता की आवाज़ बना दिया। उनके कारण हिन्दी ग़ज़ल केवल प्रेम और श्रृंगार तक सीमित न रहकर सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनी। वे आमजन के दुःख दर्द के अमर गायक हो गये । दुष्यन्त कुमार का व्यक्तित्व और कृतित्व हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने कविता को जनसरोकारों से जोड़कर उसे संघर्ष और परिवर्तन का सशक्त हथियार बनाया। वे आज भी अपने शब्दों के माध्यम से समाज को सोचने और बदलने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसा कि कहा जाता है, हर सफल पुरुष के पीछे इक स्त्री का हाथ होता है, पति पत्नी घर की गाड़ी चलाने वाले दो पहिये होते हैं यदि इनमें से एक़ भी पहिया गड़बड़ हो जाये तो गाड़ी पटरी पर नहीं चलेगी, दुष्यन्त को दुष्यन्त कुमार बनाने में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजेश्वरी कौशिक त्यागी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, थोड़ी चर्चा नेपथ्य की इस मौन समर्पण की शक्ति पर भी ।

मुझे ठीक तरह से स्मरण है। पूरा घटनाक्रम मेरी आँखों के सामने घूम रहा है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महापर्व यानी 30 अगस्त 2021 सोमवार को परमश्रद्धेया श्रीमती राजेश्वरी दुष्यंत त्यागी भोपाल के तात्याटोपे नगर स्थित भदभदा विश्राम-घाट में पंचतत्व में विलीन हो गयीं ,इस अवसर पर मुखाग्नि उनके बड़े सुपुत्र सेवा निवृत्त बैंक कर्मी एवं गज़लकारआलोक त्यागी ने दी ,उन्हें नम आंखों से बिदाई देने उनके परिवार जनों के अतिरिक्त कुछ साहित्यकार जिनमें दुष्यंत रचनावली का सम्पादन करने वाले वरिष्ठ आलोचक व साहित्यकार डॉ विजयबहादुर सिंह ,श्री रामप्रकाश त्रिपाठी ,एवम दुष्यंत स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के निदेशक राजुरकर राज (अब स्वर्गीय)और आदर्श बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (मॉडल स्कूल) जहां लंबे समय तक राजेश्वरी जी शिक्षिका रहीं उनके कुछ विद्यार्थी जैसे सुनील शुक्ला ,अशेष श्रीवास्तव उपस्थित थे ।

राजेश्वरी जी को विद्यालय में कौशिक मैडम के नाम से जाना जाता था ,क्योंकि उनका नाम विवाह से पूर्व राजेश्वरी कौशिक था जो विवाह उपरांत राजेश्वरी त्यागी हो गया था । बहुत ही कम बोलने वाली अपने काम से काम रखने वाली। नाहक की गपशप में मशगूल हमने उन्हें कभी नहीं देखा ,हाथ में हाजरी रजिस्टर या बच्चों की कापियां या पुस्तक दबाए वे क्लास में आतीं और पाठ पढ़ाना प्रारम्भ कर देतीं। ,गौरवर्ण,छरहरी काया आंखों पर नज़र का चश्मा ,भव्य और दिव्य सरस्वती की मूर्ति सी त्यागी मैडम ,ना कभी किसी भी नाराज होतीं न फटकार लगातीं एक दम स्थिर सहज और शांत ,शायद यह स्थिति सन 1975 में उनके पति दुष्यंत जी के आसामयिक निधन के कारण बनी हो। वे उस विषाद की काली छाया से अंदर ही अंदर लड़ रही हों ,क्योंकि वर्ष 1977 में उनसे हमारी मुलाकात हुई थी और दो वर्ष ही तो हुए थे दुष्यंत जी को उन्हें अलविदा कहते हुए ।

वर्ष 1979 की बात है मॉडल स्कूल की शालेय पत्रिका का प्रकाशन हुआ और जिसके सम्पादन का दायित्व त्यागी मैडम को दिया गया और हमने भी अपनी एक टूटी-फूटी कविता मैडम के पास प्रकाशन हेतु जमा कर दी। आपको आश्चर्य होगा इस कविता को पूरी तरह सुधार कर मैडम ने पत्रिका में प्रकाशित किया। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था और यह हमारी पहली लिखी और प्रकाशित कविता थी हमारा वतन जिसका शीर्षक था । इस कविता के बाद कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा हमारी त्यागी मैडम से निकटता बढ़ गयी। हम स्कूल बाउंड्री के सामने उनके सरकारी निवास एफ- 69 /8 दक्षिण तात्या टोपे नगर भोपाल, जो कि एक सरकारी आवास था ,पर कभी-कभार आने जाने लगे यहां दरवाजे पर दुष्यंत कुमार त्यागी ,सहायक संचालक भाषा विभाग की नेम प्लेट लगी थी। अब यह शासकीय आवास, विकास के नाम पर यानी कथित स्मार्ट-सिटी की भेंट चढ़ गया। जैसे ख्यात व्यंग्यकार शरद जोशी जी का घर और उनके नाम की सड़क। काश ! यह घर न होकर धार्मिक स्थल होते तो मजाल यूँ मलबे के ढेर में तब्दील हो पाते। उस समय हमें न तो साहित्य की कोई समझ थी और न अधिक जानकारी और साथ ही दुष्यंत जी के महत्वपूर्ण साहित्यिक अवदान और उनके ऊंचे कद की ,हाँ बस इतना मालूम था कि मेम के पति बहुत बड़े साहित्यकार थे। उस सरकारी आवास में दस बारह फिट की खुली जगह के बाद छोटा से बैठक का कमरा था जिसमें एक बहुत ही साधरण सा पलंग और चार कुर्सियां डली रहती थीं । कमरे में दुष्यंत जी का चर्चित श्वेत-श्याम चित्र जो आज भी बहुत जगह प्रयुक्त होता है टँगा हुआ था। साथ ही मेम के साथ उनकी युवावस्था का एक चित्र भी दीवार पर लगा हुआ था । आज भी उस कमरे का दृश्य एक चलचित्र की भांति दृश्यमान हो उठता है ।

फिर जब स्कूल छूटा तो त्यागी मैडम भी कहीं छूट गयीं ,और लगभग दो दशक पश्चात 1985 में कुछ साहित्यिक सक्रियता बढ़ी और कीर्तिशेष मित्र डॉ बाबूराव गुजरे ने करवट कला परिषद से जोड़ा तथा राजुरकर जी ने दुष्यंत संग्रहालय की स्थापना की तो एक बार पुनः उसी शासकीय आवास में त्यागी मैडम से भेंट होने लगी । अब तो हमारी समझ थोड़ी विकसित हो गयी थी सो हम दुष्यंत जी के बारे में भी मैडम से कुछ अनौपचारिक चर्चा कर लेते थे । दुष्यंत जी कब लिखते थे कैसे लिखते थे ,आचनक उन्हें क्या हुआ था आदि-आदि । कभी कुछ रफ कागजों ,पुरानी डायरियों में दुष्यंत जी का लिखा हुआ मैडम हमें दिखाती तो बड़ा कौतूहल होता ,और अपने भाग्य पर गर्व कि हम इतने महान कालजयी रचनाकार के घर में बैठे हैं ,उनकी धर्मपत्नी अपनी शिक्षिका से बात कर रहे हैं और उनकी लिखी हुई रचनाओं को देख रहे हैं ,स्पर्श कर रहे हैं ।

यूँ ही एक बार त्यागी मेम के घर उन्हें किसी साहित्यिक आयोजन का निमंत्रण देने मैं अपने मित्र डॉ बाबूराव गुजरे के साथ गया था। मैडम तो अमूमन कहीं आया-जाया नहीं करती थीं ,परन्तु फिर भी हम उन्हें अपने कार्यक्रमों की सूचना दे दिया करते थे ,क्योंकि उन्हें हमारी साहित्यिक सक्रियता बहुत अच्छी लगती थी और वे मॉडल स्कूल के विद्यार्थी होने के नाते हमसे अतिरिक्त स्नेह भी करती थीं ,और हमें भी उनका सानिध्य अच्छा लगता था । मेम के साथ हम बात कर रहे थे कि हमारे सम्मुख चाय पानी लेकर कोई उपस्थित हुआ। उन्होंने हम से नमस्ते की और चाय सामने रख दी । तब मैडम ने कहा- यह हमारी बहू मानू है। बेटेआलोक की पत्नी ,यह कमलेश्वर जी की बिटिया है । हमने कहा जी मैडम हमें मालूम है क्योंकि उन दिनों दुष्यंत जी और कमलेश्वर जी की मित्रता के बारे में हमने सुन रखा था ,और बाद में दो मित्र समधी बन गए यह जानकारी भी हमें थी ,मानू भाभी भी बड़ी सहज विनम्र और उदार ,फिर जब भी हमारा मेम के घर जाना होता मानू भाभी से भी मुलाकात होती और आलोक जी से भी । हाँ वैसे भोपाल के किसी साहित्यिक आयोजन में मैडम भले न जाती हों परन्तु वे दुष्यंत संग्रहालय के महत्वपूर्ण आयोजनों में कभी कभार समय निकाल कर अवश्य आतीं और साथ में आलोक भाई और मानू भाभी भी ।

शायद वर्ष 1984-85 की बात होगी तब आकाशवाणी के युववाणी कार्यक्रम में पहली बार रचनापाठ का अवसर मिला होगा ,तब यहां युववाणी की कार्यक्रम अधिकारी मैडम की पुत्री अर्चना राजकुमार जी हुआ करती थीं ,एकदम ऊंची पूरी उन्नत ललाट गौरवर्ण और बहुत ही हँसमुख और व्यवहार कुशल,जिनका दुःखद निधन इंदौर रोड पर घटित एक भीषण कार दुर्घटना में हो गया था ,और एक बबूल के पेड़ से टकराई हुई गाड़ी उसमें टूटी हुई चूड़ियां और बिखरा हुआ सामान मैनें संयोग से स्वयम देखा था,क्योंकि मैं उन दिनों बैरागढ़ के पास एक गांव बरखेड़ा सालम के प्राथमिक स्कूल में शिक्षक था ,और सुबह अपनी साइकिल से स्कूल जा रहा था ,और इस दुर्घटना स्थल के करीब से गुजरा तो आने जाने वाले राहगीर यहां रुक रुक कर काले रंग की क्षतिग्रस्त गाड़ी को देखते और आगे बढ़ जाते, मैं भी यहां रुका और देखा। बाद में पता चला यह तो अपनी त्यागी मैडम की बिटिया और दामाद थे जिनका इस भीषण दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया था ,इस भयानक वज्रपात से भी मैडम काफी टूट गयी थी ।

आज सड़क से लेकर संसद तक आम से लेकर खास तक सब लोगों द्वारा दुष्यंत की गज़लों को गाया जाता है , कहाँ तो तय था चारांगा हर घर के लिए,हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए, मत कहो आकाश में कुहरा घना है,यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है, कौन कहता है आकाश में सुराख हो नहीं सकता, एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो ,इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है..जैसी गज़लें और उनके शेर किसको याद नहीं होंगे , वे आज के सबसे लोकप्रिय शायरों में से एक हैं और मीर ,कबीर ,ग़ालिब तुलसी जैसे ही आमजनों के कंठ पर विराजे हैं ,जो रचनाकार किताबों से मुक्त होकर वाचिक और श्रवण परम्परा से सहज रूप में बिना प्रयास के हमारे हृदय में विराजते हैं अगली पीढ़ी तक पहुंचते हैं वे ही तो कालजयी रचनाकार होते हैं । दुष्यन्त आम आदमी की आवाज हैं साये में धूप की उनकी हर ग़ज़ल आम आदमी की जुबान है हर आदमी की अपनी ग़ज़ल है ,दुष्यंत जी ने ग़ज़ल के अलावा भी बहुत कुछ लिखा है विविध विधाओं में उनकी एक कंठ विषपायी (काव्य-नाटक) और मसीहा मर गया (नाटक) सूर्य का स्वागत,आवाजों के घेरे,जलते हुए वन्त का बसन्त (काव्य)छोटे-छोटे सवाल ,आंगन में एक वृक्ष, दोहरी ज़िन्दगी, (उपन्यास) मन के कोण (लघुकथा)सहित अनेक पुस्तकें हमारे सम्मुख हैं परन्तु दुष्यंत जी की चर्चा सिर्फ और सिर्फ एक कालजयी ग़ज़लकार और साये के धूप रचनाकार के रूप में होती है ।

दुष्यंत जी का एक हस्तलिखित पत्र (छाया प्रति) मेरे पास है जो उन्होंने तत्कालीन राजनेता मंत्री कवि कीर्तिशेष श्री विट्ठलभाई पटेल को लिखा था। अपनी नौकरी से परेशान हो कर अपनी नई पदस्थापना और स्थानांतरण के संदर्भ में बड़ा भावुक और मार्मिक पत्र जिसमें उन्होंने तत्कालीन सूचना और प्रसारण मंत्री विद्याचरण शुक्ल से अपना काम करवाने का अनुरोध किया था। पत्र पढ़ने लायक है ,और यह बताता है जो आदमी आपातकाल के विरोध में कलम चलाता है , दूषित राजनीति को इतनी कड़वी फटकार लगाता है ,वही कभी-कभी अपने आपको व्यक्तिगत रूप से कितना कमजोर कितना असहाय महसूस करता है और अपने लेखन से एकदम परे व्यवहार करने लगता है । महान रचनाकार दुष्यंत कुमार को साथ ही दुष्यंत कुमार को दुष्यन्त बनाने वाली उनकी नेपथ्य की शक्ति आदरणीया राजेश्वरी जी को शत शत नमन , विनम्र श्रद्धासुमन ।

भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन

उत्थान और पतन की अकथ-कथा

डॉ. सुधीर सक्सेना
हिन्दी के वरिष्ठ कवि, लेखक,
अनुवादक एवं पत्रकार

शुरूआत सचमुच शानदार थी। भारत ब्रिटेन का उपनिवेश था; दमन, शोषण और दीनता का शिकार दास राष्ट्र। महात्मा गांधी विश्व-इतिहास के अलीक-योद्धा के तौर पर परिदृश्य में उभर रहे थे। सारा राष्ट्र आजादी के लिये व्यग्र था। ऐसे में एक नये वैचारिक-आंदोलन ने भारत में प्रवेश किया और सर्वथा अलहदा मिजाज की एक पार्टी ने भारत में जन्म लिया। इसमें केन्द्रीय और अग्रणी भूमिका थी एमएन राय यानि मानवेंद्र नाथ राय की, जिन्हें सोवियत संघ जैसे विशाल राष्ट्र के सर्वेसर्वा बलादिमीर इलिच लेनिन का संग-साथ और विश्वास हासिल था।

हुआ यह कि 17 अक्टूबर, सन 1920 को पामीर पार ताशकंद में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस की बैठक हुई और इसने भारत में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की पूर्वपीठिका रच दी। विचार मंथन और सांगठनिक प्रयासों के बाद अंततः 25 दिसंबर, सन 1925 को भारत के मैनचेस्टर कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। इसके शुरूआती नेताओं में एमएन राय के अलावा अबनि मुखर्जी, मोहम्मद अली और शफीक सिद्दिकी प्रमुख थे।

25 दिसंबर, सन 2025 से काल गणना करें तो भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन की एक सदी पूरी हो चुकी है। इस मान से यदि एक शती के वृत्तांत यानि कम्युनिस्ट आंदोलन के हश्र को बांचें तो बहुत दिलचस्प चटख और धूमिल रंगों का कोलाज उभरता है। बालीवुड की फिल्म की तर्ज पर हम इसे राइज एण्ड फाल आफ कम्युनिस्ट मूवमेंट-कम्युनिस्ट आंदोलन का उत्थान और पतन भी कह सकते हैं। इस वृत्तांत में लंबे रक्तिम संघर्ष हैं और गर्वीली सफलतायें भी। वहां विफलतायें हैं और बिखराव भी। वहां विमर्श है और विभ्रम भी। संघर्ष, निष्ठा, समर्पण, बलिदान और अनेक महत्वपूर्ण योगदानों के बावजूद इसकी अंततः शोकांतिका में परिणिति विस्मयकारी है, जो बहुतों को शोकाकुल करती है, तो बहुतों को हर्षित भी। क्या वजह है कि ऐसा हुआ? क्या ऐसा होना वृहत्तर समाज के स्वास्थ्य और भविष्य के लिहाज से सुखद है अथवा इसे विडंबना या त्रासदी माना जाये।

विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन और भारत के रिश्तों से शुरू करें तो कई अहम निष्कर्ष निकलते हैं। आंदोलन के प्रणेता कार्ल मार्क्स पहले मनीषी हैं, जिसने सन 1857 के अंग्रेजों द्वारा प्रचारित गदर को स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी। मार्क्स की भारत के इतिहास में गहरी रूचि थी और वह भारत की आजादी के हिमायती थे। इसमें कोई शक नहीं कि बीसवीं सदी विश्व स्तर पर वाम विचारों की सदी थी और इसने सभी महाद्वीपों में करोड़ों लोगों को वैचारिक तौर पर प्रभावित और आंदोलित किया। श्रमिकों, लेखकों और कलाकारों पर इसका प्रभाव अभूतपूर्व था। श्रम की महत्ता और गरिमा का पाठ प्रस्तुत कर इसने अनेक देशों में कू-दे-ता (तख्तापलट) की स्थितियां पैदा कीं; साहित्य कला और संस्कृति में नये आंदोलन उपजाये, पूंजीवादी-ईमान को डगमग किया, श्रमिकों के लिए बेहतर वातावरण सृजित किया, पारंपरिक रूढ़ियों के प्रति असंतोष उपजाया, उपनिवेशवाद के खिलाफ अलख जगाई और युवा वर्ग की आंखों में नये सपने आंजे। उसने गैर-बराबरी के खिलाफ बराबरी, शोषण के खिलाफ मुक्ति और दासता के खिलाफ स्वतंत्रता की हिमायत की। यह विश्व इतिहास में परंपरा और रूढ़ियों के खिलाफ विचलन और हस्तक्षेप का सर्वथा भिन्न और अपूर्व उपक्रम था। हम स्तालिन, गोर्की, चेखव, माओ, होची मिन्ह, चेग्वेरा, कास्त्रो, नाजिम, हिकमत, फैज, रेजिस द ब्रे, चार्ली चैप्लिन आदि की बात न कर यदि भारतीय परिदृश्य पर भी दृष्टिपात करें तो बड़े और सितारा नेताओं, कवियों, कलाकारों, दार्शनिकों और कार्यकर्ताओं में कौन है, जिसे सोवियत क्रांति अथवा साम्यवादी विचारों व आंदोलनों ने प्रभावित नहीं किया? पं. नेहरू से लेकर भगत सिंह तक, रबींद्रनाथ ठाकुर से लेकर प्रेमचंद तक, राजकपूर से लेकर बलराज साहनी तक, माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर गणेश शंकर विद्यार्थी तक नामों की एक अछोर कतार है, जिन्हें साम्यवादी विचारों ने आलोड़ित किया। शहीदे आजम भगत सिंह तो फांसी के तख्ते की ओर जाने से कुछ क्षण पहले तक लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे....

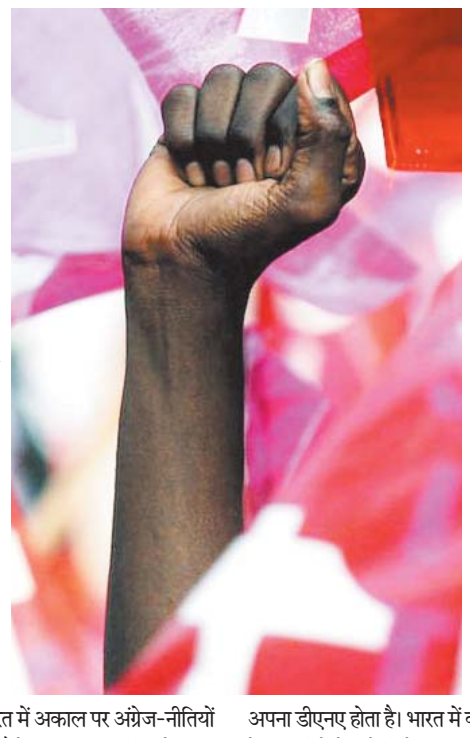

और लेनिन? लेनिन तब नहीं थे, लेकिन बड़ी बात यह है कि लेनिन क्या थे? लेनिन भारत से गेहरे प्रेम में डूबी हुई - महान क्रांतिकारी शख्सियत थे। उन्होंने बंगाल विभाजन के विरोध में लिखा, जालियांवाला कांड की निंदा की, तिलक को मांडले जेल भेजन का विरोध किया, महात्मा गांधी की अगुवाई में आजादी की लड़ाई का समर्थन किया, भारत में अकाल पर अंग्रेज-नीतियों की निंदा की और भगत सिंह जैसे महान क्रांतिकारी समेत सैकड़ों युवकों के विचारों को प्रज्वलित किया।

निश्चित ही, लेनिन अपने प्रति भारतवासियों के बेहतर सोच और सलूक के हकदार हैं। बाद के दौर को देखें तो भी सोवियत और फिर रूस के शासक और जन भारत के प्रति प्रेम, सम्मान और सदिच्छा रखते हैं। चाहे बुल्गानिन, ब्रेभनेव, खुश्चेव और कोसीगिन रहे हों या फिर पुतिन। बावजूद इन संदर्भों के भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन बिखरता गया। उन्होंने यत्नपूर्वक ट्रेड यूनियनों को संगठित किया, इंडियन कॉफी हाऊस जैसे दर्जनों संस्थाओं के हेतु बने, सन 1957 में केरल में पहली निर्वाचित सरकार का गठन हुआ, पश्चिम बंगाल में कई दहाइयां उनके लाल झंडे के तले बीतीं, देवेगौड़ा और गुजराल की केन्द्रीय सरकारों में उनकी भागीदारी रही, साहित्य और कला के लोक में उनकी केंद्रीय इयत्ता रही, लेकिन मोटे तौर पर बीती पाव सदी में भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन का शीराजा बिखरता गया। क्यों?

भारत में कम्युनिस्टों का इतिहास आंदोलनों का इतिहास है। आंदोलन यानि संघर्ष। संघर्ष यानि विचलन। विचलन यानि मौजूदा स्वरूप, मौजूदा ढांचे मौजूदा समीकरणों के स्थान पर नया स्वरूप, नया ढांचा, नये समीकरण। यानि परिवर्तन। यथास्थिति नहीं, बदलाव। जड़त्व नहीं गतिज। नयी वैचारिकी। नया उन्मेष। अब परंपरा के सन्दर्भ में इन परिवर्तनों की भूमिका पर गौर करें। एक बंद रूढ़िग्रस्त समाज में ग्लासनोस्त (खुलापन) और पिरिस्त्रोइका (पुनर्रचना) की जरूरत, उसके प्रति पारंपरिक सोच और तज्जन्य प्रतिकार पर तवज्जो दें। हश्र के वजूहात स्पष्ट हैं। जहां परिवर्तन के बजाय परंपरा श्रेष्ठ और श्रेयस्कर हो, वहां आप कब तक और कहां तक जूझेंगे? संघर्ष जब थकता है, तो सुविधा मांगता है। हर कौम, नस्ल और समाज का अपना डीएनए होता है। भारत में कम्युनिस्ट विचारधारा को देशी बागीचे में विदेशी बेल या विजातीय प्रजाति माना गया। रूपक गढ़ा गया कि जब मस्क्वा में बारिश होती है तो भारत में कम्युनिस्ट अपनी छतरियां खोल लेते हैं। यह नैरेटिव भी पनपा कि भारतीय कम्युनिस्टों का रिमोट कंट्रोल मस्क्वा और बीजिंग के हाथों में है। भारत में कम्युनिस्टों की विफलता का एक बड़ा मुद्दा उनकी धार्मिक सोच भी रहा। एक धर्मप्राण राष्ट्र में धर्म को अफीम बताना लोगों के गले नहीं उतरा। यह बात भी घर-घर फैलाई गई कि कम्युनिस्ट राज में तो सब कुछ सरकारी है। नौकरी भी और बच्चे भी। कम्युनिस्ट आयेंगे तो मंदिर बंद हो जायेंगे और बच्चों को सरकार छीन लेगी। और आपकी संपत्ति भी आपकी नहीं होगी। स्पष्ट है कि ये %नैरेटिव% काम कर गये। एक धर्मप्राण आस्था से परंपराजीवी महादेश में परिवर्तन के ध्वजवाहक सफलता की पताकायें कहां फहराते? मेरा निजी अनुभव है कि परंपरा पोषक कर्मकाण्डी घरों में 'साला कम्युनिस्ट' गाली की तरह इस्तेमाल होने लगा। भारतीय समाज में वैसे भी तर्क के लिये कम ठौर रहा है। कम्युनिस्टों की गलती रही या मूर्खता कि वे साम्यवादी सोच या विचारधारा को भारतीय या देशज शब्दावली और सांचे में नहीं ढाल सके और कई बार उन्होंने राष्ट्रीय परिस्थितियों को नजरंदाज कर तदनुरूप निर्णय लेने के बजाय 'ऊपरी निर्देश' पर फैसले किये। वे बूर्ज्वा, वर्ग संघर्ष, सर्वहारा की आयातित शब्दावली में उलझे रहे। नतीजतन उनका दायरा सीमित रहा। वे अंदरूनी इलाकों या वृहत्तर भूभाग में जमीन नहीं गोड़ सके।

ऐसा नहीं है कि भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन की पंजी में चमकीली घटनाएं या चेहरे नहीं हैं। आज की दलदली राजनीति में कम्युनिस्ट नेता ही हैं, जो भ्रष्टाचार के आरोपों से कभी नहीं बिंधे। ज्योति बसु का प्रधानमंत्री बनने से इंकार भारतीय राजनीति की विरल घटना है। भारत में जब भी आंदोलनों का इतिहास लिखा जायेगा, तेभागा और तेलंगाना आंदोलन, नलगोंडा, वारंगल और खम्मम का कर्ज माफी आंदोलन, नक्सलबाड़ी संघर्ष का भी जिक्र होगा। इसी विचार ने हमें इंकलाब जिंदाबाद, दुनिया के मजदूरों एक हो, हर जोर जुलम की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है, रोटी कपड़ा लेकर रहेंगे जैसे नारे दिये। इसी ने हमें हम होंगे कामयाब और वो सुबह कभी तो आयेगी जैसे गीत और साहिर और शैलेन्द्र जैसे अनेक बड़े गीतकार दिये। इसी ने पत्रकारों को श्रमजीवी के खाने में वर्गीकृत किया। कम्युनिस्टों ने हमें नंबूदरीपाद, बीटी रणदिवे, एके गोपालन, श्रीपाद अमृत डांगे, पीसी जोशी, अजय घोष, हरकिशन सुरजीत, ज्योति बसु, अच्युत मेनन, इंद्रजीत गुप्त, प्रकाश कारंत, वृंदा करात, जैसे बेदाग चेहरे दिये। मगर आज कम्युनिस्ट पार्टियों का फलक बेनूर है। वह बार-बार विघटन और विभाजन की भी शिकार रही। कांग्रेस ने उसे पोसा भी और ग्रसा भी। कम्युनिस्ट पश्चिम बंगाल तो पहले ही गँवा चुके थे, चार मई को उनका केरल का अंतिम लाल किला भी ढह गया। भारत नक्सलमुक्त हो चुका है। एक शती के बाद के पहले वर्ष में उनका यह हश्र भारतीय राजनीति का काबिलेगौर अध्याय और पाठ है, लेकिन चीजें लौटती हैं। नये-नये रंग रूपों में। और फिर विचार मरा नहीं करते। वे फीनिक्स पक्षियों की मानिंद होते हैं। परंतु इतिहासजन्य ताजा सच यही है कि कम्युनिस्ट विचारधारा के लिए भारत की आबो-हवा अनुकूल नहीं बैठी।

सिरोंज-बासौदा रोड पर दो स्थानों पर जताया विरोध

इकलौद और परसोरा सोसायटी पर बारदाना संकट, किया चक्काजाम

सिरोंज। दोपहर मेट्रो

खरीदी केन्द्रों पर किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए कोई भी गंभीर नहीं है। परेशान किसानों ने गत दिवस सिरोज-बासौदा रोड पर दो स्थानों पर चक्काजाम कर दिया। एक चक्काजाम ग्राम देहरी के समीप स्थित इकलौद सोसायटी के वेयर हाउस पर था तो दूसरा चक्काजाम परसोरा सोसायटी के वेयर हाउस के बाहर सड़क पर किसानों ने किया। चक्काजाम के दौरान किसान सरकार और प्रशासन विरोधी नारे लगा रहे थे। उनका कहना था कि तीन दिन से तौल का इंतजार कर रहे हैं लेकिन न तो तौल हो रही है और न ही यहां पर बारदाना आ रहा है। इस प्रक्रिया में सबसे ज्यादा दिक्कत उन किसानों को हो रही थी जिनके स्लॉट बुक थे और कईयों की आखरी तारीख शुक्रवार को ही थी। इन किसानों का कहना था कि तौल नहीं होने के कारण किसानों की टेक्टर-ट्रालियों को भीतर भी नहीं जाने दिया जा रहा है। ऐसे में समझ में नही आ रहा कि वापस घर जाएं या फिर यहीं पर खड़े रहे। चक्काजाम शुरू होने के करीब एक घंटे बाद मौक पर तहसीलदार संजय चौरसिया पहुंचे और कुछ देर बाद एसडीएम हरिशंकर विष्वकर्मा भी पहुंचे। उन्होंने समझाइश दी और पहले परसोरा सोसायटी के किसानों का

प्रदर्शन खत्म करवाया। इसके बाद वे इकलौद सोसायटी के वेयर हाउस पर भी पहुंचे और किसानों का चक्काजाम खत्म करवाया।

चक्काजाम कर रहे किसानों का कहना था कि बारदाना नहीं होना किसानों की समस्या नहीं है। इसके लिए खरीदी केन्द्र व्यवस्थापक जिम्मेदार है। कई केन्द्रों पर दो से तीन दिन तक बारदाना नहीं आ रहा है। स्लॉट बुक होने के बाद तौल की समय सीमा भी निकल रही है। इन हालातों में किसानों को दोबारा स्लॉट बुक करना होगा। किसानों की समस्या को सुनने के बाद अधिकारियों ने सड़क पर कतार में खड़ी सभी टेक्टर-ट्रालियों को वेयर हाउस परिसर में पहुंचाकर सभी को टोकन पर्ची दिलवाने की व्यवस्था की। चक्काजाम के दौरान किसानों ने सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन रोक दिया। इनमें दोपहिया वाहन चालकों के साथ ही यात्री बस भी शामिल थी। यात्री बस डेढ़ से दो घंटे देरी से अपने गंतव्य तक पहुंची। बारदाने के अभाव में गुरूवार को अनूपपुर सोसायटी पर तौल भी बंद हो गई थी। मौके पर विधायक उमाकांत शर्मा भी पहुंचे थे। किसानों से चर्चा के बाद उन्होंने कलेक्टर और एसडीएम को उनकी परेशानी से अवगत कराया था। मौके पर एसडीएम खुद भी पहुंचे और व्यवस्था बनवाई थी। हालांकि इस सोसायटी के किसानों को भी शुक्रवार दोपहर में बारदाना मिल सका।

नगरपालिका में विदाई समारोह

35 वर्षों की सेवा के बाद प्रदीप व्यास को दी सम्मानपूर्ण विदाई

सिरोंज। दोपहर मेट्रो

नगर पालिका परिषद में उस समय भावुक माहौल बन गया, जब 35 वर्षों तक अपनी सेवाएं देने वाले वरिष्ठ कर्मचारी प्रदीप व्यास को सेवानिवृत्ति पर सम्मानपूर्वक विदाई दी गई। समारोह में नगर पालिका अध्यक्ष, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, पार्षदों एवं कर्मचारियों ने उनके लंबे कार्यकाल, अनुभव और कार्यशैली को याद करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। नगर पालिका अध्यक्ष मनमोहन साहू ने कहा कि प्रदीप व्यास उनके बचपन के साथी रहे हैं। दोनों ने साथ में शिक्षा प्राप्त की और लंबे समय तक एक ही विभाग में कार्य किया। उन्होंने कहा कि प्रदीप व्यास ने हमेशा नगर पालिका के कार्यों को प्राथमिकता दी और अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। मुख्य नगर पालिका अधिकारी रामप्रकाश साहू ने कहा कि प्रदीप व्यास कार्य के प्रति बेहद जागरूक कर्मचारी रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनका स्वभाव थोड़ा तेज जरूर था, लेकिन वह हमेशा काम को लेकर गंभीर और जिम्मेदार रहे। नगर पालिका के कार्यों में उनकी सक्रियता और अनुभव हमेशा याद किए जाएंगे। पार्षद तोशमनी पंथी ने कहा कि उन्हें करीब 20 वर्षों तक प्रदीप व्यास के साथ काम करने का अवसर मिला। उन्होंने बताया कि नगर पालिका की लगभग सभी शाखाओं में प्रदीप व्यास ने प्रभारी एवं सहयोगी के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाई। पूरे कार्यालय में सबसे अधिक अनुभव उन्हीं के पास था।पार्षद टीकाराम ने कहा कि प्रदीप व्यास का व्यवहार हमेशा सहयोगात्मक रहा। जब भी किसी जरूरी कार्य के लिए उन्हें बुलाया जाता था, तो वह तुरंत उपस्थित होकर काम को प्राथमिकता से पूरा करते थे। पार्षद धर्मेंद्र जैन ने कहा कि प्रदीप व्यास ने अपने पूरे कार्यकाल में कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ बेहतर तालमेल बनाकर काम किया। वह हर जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाते थे और नगर पालिका के कामों में हमेशा सक्रिय रहते थे। विदाई समारोह में पार्षद सचिन शर्मा सहित अन्य पार्षद एवं नगर पालिका कर्मचारी भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी ने पुष्पमाला पहनाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रदीप व्यास का सम्मान किया।

संतोषजनक कार्य न होने पर पांच जनगणना चार्ज अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस

सागर। दोपहर मेट्रो

कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी प्रतिभा पाल ने सख्त सख्त कार्यवाही करते हुए जनगणना के अंतर्गत मकानगणना कार्य में प्रगति न लाने पर पांच जनगणना चार्ज अधिकारियों को कारण बताओं नोटिस जारी किए। उन्होंने दो दिन में प्रगति न लाने पर कार्यवाही करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 10 मई तक 50 प्रतिशत कार्य पूर्ण करें,

15 मई तक 75 एवं 20 मई तक 100 प्रतिशत कार्य पूर्ण करें। पवन कुमार शर्मा मुख्य नगर पालिका एवं जनगणना चार्ज अधिकारी मकरोनिया, बालकिशन पटेल मुख्य नगर परिषद एवं जनगणना चार्ज अधिकारी शाहपुर, आकाश जैन जनगणना चार्ज अधिकारी राहतगढ, प्रेमनारायणसिंह तहसीलदार एवं जनगणना चार्ज अधिकारी जैसीनगर, अनिल कुशवाह तहसीलदार एवं जनगणना चार्ज अधिकारी बांदरी को नोटिस जारी किए गए हैं। कलेक्टर ने निर्देश दिए की जनगणना महाअभियान के अंतर्गत मकानगणना का कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता का है।

50 से अधिक ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर लगे रेडियम रिफ्लेक्टर, सुरक्षा के दिए निर्देश

नर्मदापुरम। दोपहर मेट्रो

कुलमारी रोड स्थित मां नर्मदा वेयरहाउस में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी प्रमोद कुमार ने सड़क सुरक्षा अभियान चलाया। इस दौरान 50 से अधिक ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर निःशुल्क रेडियम रिफ्लेक्टर लगाए गए, ताकि रात में वाहनों की दृश्यता बढ़े और दुर्घटनाएं रुकें। आरटीओ अधिकारी ने किसानों से सीधे बातचीत कर सुरक्षित परिवहन और यातायात नियमों का पालन करने पर जोर दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि अंधेरे में ट्रैक्टर-ट्रॉली कम दिखाई देते हैं, जिससे हादसों का खतरा बढ़ जाता है। रेडियम रिफ्लेक्टर लगने से वाहन दूर से चमकेंगे और सड़क सुरक्षा मजबूत होगी। इसके अलावा, मां नर्मदा वेयरहाउस के

स्टाफ को सख्त निर्देश दिए गए कि सभी ट्रैक्टर-ट्रॉलियां रात में वेयरहाउस परिसर में ही पार्क की जाएं। सड़क किनारे खड़े वाहन अक्सर दुर्घटना का कारण बनते हैं, इसलिए यह कदम सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा।

सम्मान, सुरक्षा और संवेदना - जीवन की हर अवस्था में

हमारी सोच
मैत्री का उद्देश्य बुजुर्गों को सिर्फ इलाज नहीं, बल्कि 'सुरक्षा, आत्मीयता और गरिमामय जीवन' देना है।

समर्पित चिकित्सा दल
तीन चरणों की सम्पूर्ण देखभाल
बुजुर्गों की देखभाल के लिए डॉक्टरों और मेडिकल स्टॉफ की विशेष टीम
नियमित स्वास्थ्य जांच और 24x7 सहयोग
घर पर सहायता और आपातकालीन सेवाएँ

आरामदायक अस्पताल
अस्पताल में सिर्फ इलाज नहीं, बल्कि 'आराम व सहज वातावरण'
इलाज के साथ मानसिक व भावनात्मक सहयोग
व्यक्तिगत सुझाव, ताकि बुजुर्ग अकेलेपन का अनुभव न करे।

Helpline Number
9111700600

मैत्री का लक्ष्य
बुजुर्गों को एक ऐसा 'सहारा और परिवार' देना, जहां वे सम्मान, आत्मीयता और शांति के साथ जीवन जी सकें।

हमारा दृष्टिकोण
सुरक्षित स्टूडियो अपार्टमेंट्स बुजुर्गों के लिए
स्वास्थ्य सेवाएं और दवा/डायग्नोस्टिक पर रियायत
Pallative & Hospice Care* भारतीय दर्शन पर आधारित
'मृत्यु को संक्रमण नहीं, यात्रा का चरण मानना'
Accepting Death with Dignity

MAYTRI-Comprehensive Geriatric Care
ई-8/38, 12 नं. बस स्टॉप, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462039 www.maytriparentcare.com

भोपाल केयर हॉस्पिटल

ई-8/38, 12 नं. बस स्टॉप,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
फोन: 0755-2567696, 4221121
मो. 9425017148, 8839958323
ई-मेल : bchbplarera@gmail.com

मोतिया तालाब -
मोतिया तालाब रोड, ताजुल मस्जिद के सामने, भोपाल-462 001 (म.प्र.)
फोन: 0755-2679180-81, 4240749
मो. 9827204548
ई-मेल : bchbpl@gmail.com

बानापुरा -
46, मेन रोड, तहसील सिवनी मालवा
जिला नर्मदापुरम (म.प्र.)
फोन: 07570-299097
मो. 8959492438
ई-मेल : bchbanapura@gmail.com

राजस्थान, गुजरात के पास टॉप-3 में आने का मौका आज

आईपीएल : दिल्ली प्लेऑफ की रेस से लगभग बाहर, कोलकाता ने पीछे छोड़ा

नईदिल्ली, एजेंसी

दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल में 7वीं हार मिली। कोलकाता नाइट राइडर्स ने उसे 8 विकेट से हराया। इस हार से दिल्ली प्लेऑफ की रेस से लगभग बाहर हो गई है। दूसरी ओर कोलकाता ने अपनी उम्मीदें कायम रखी हैं। अरुण जेटली स्टेडियम में कोलकाता ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। दिल्ली ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 142 रन बनाए। कोलकाता ने 143 रन का टारगेट 14.2 ओवर में 2 विकेट पर हासिल कर लिया। फिन एलन ने नाबाद 100 रन बनाए।

कोलकाता ने लगातार चौथी जीत हासिल की। कैपिटल्स को सीजन में सातवीं हार मिली है। कोलकाता के 10 मैचों में 9 अंक हैं। टीम ने 4 मैच जीते और 5 गंवाए हैं। टीम की प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीद कायम है। हालांकि, उसे बाकी सभी मैच बड़े अंतर से जीतने होंगे। साथ ही अन्य टीमों के प्रदर्शन पर भी निर्भर रहना होगा।

दिल्ली 11 में से सिर्फ 4 मैच जीत सकी है। टीम के पास 8 अंक हैं और अब वह अधिकतम 14 अंक तक पहुंच सकती है। पिछले चार आईपीएल सीजन में सिर्फ एक बार कोई टीम 14 अंक लेकर प्लेऑफ में पहुंची है। ऐसा 2024 सीजन में हुआ था। 2022, 2023 और 2025 में चौथे प्लेऑफ

की सभी टीमों ने कम से कम 16 पॉइंट्स हासिल किए थे।

राजस्थान के पास टॉप-4 की रेस में मजबूत पकड़ बनाने का मौका

राजस्थान रॉयल्स ने 10 मैचों में 12 पॉइंट्स हासिल किए हैं। टीम के लिए अब हर मुकाबला करो या मरो जैसा है। प्लेऑफ की रेस में बने रहने के लिए उसे बाकी चार में से कम से कम 3 मैच जीतने होंगे। गुजरात के खिलाफ जीत से टीम की टॉप-4 की उम्मीद मजबूत होगी। हार मिलने पर राह मुश्किल हो सकती है। गुजरात टाइटंस के 10 मैचों में 12 अंक हैं। टीम के लिए बाकी चार मैच प्लेऑफ के लिहाज से अहम हैं। राजस्थान रॉयल्स, सनराइजर्स हैदराबाद, कोलकाता नाइटराइडर्स और चेन्नई सुपरकिंग्स के खिलाफ ज्यादातर मैच जीतने पर उसका टॉप-4 में पहुंचना लगभग तय हो सकता है। हार मिलने पर नेट रनरेट भी अहम रहेगा।

ऑरेंज कैप के टॉप-3 पोजिशन में कोई बदलाव नहीं

सीजन के 51 मैचों के बाद सनराइजर्स हैदराबाद के हेनरिक क्लासन 11 मैचों में 494 रन बनाकर ऑरेंज कैप लीडरबोर्ड में टॉप पर हैं। उनके साथी खिलाड़ी अभिषेक शर्मा 475 रन के साथ दूसरे और दिल्ली कैपिटल्स के केएल राहुल 468 रन के साथ तीसरे स्थान पर हैं। दिल्ली-कोलकाता मैच के बाद पर्पल कैप के टॉप-3 में कोई बदलाव नहीं हुआ।

जीत की हैट्रिक लगा चुकी टाइटंस के पास रॉयल्स को पीछे छोड़ने का मौका

आज राजस्थान रॉयल्स और गुजरात टाइटंस के बीच खेला जाएगा। मैच राजस्थान के होम ग्राउंड जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में शाम 7.30 बजे से होगा। शुभमन गिल की कप्तानी वाली गुजरात टाइटंस के पास पॉइंट टेबल में राजस्थान को पीछे छोड़ने का मौका है। दोनों टीमों के 10 मैचों में 6 जीत और 4 हार के साथ 12-12 अंक हैं, लेकिन बेहतर नेट रनरेट के कारण राजस्थान चौथे और गुजरात पांचवें स्थान पर है। गुजरात पिछले तीन मैच लगातार जीतकर शानदार लय में है। वहीं, रियान पराग की कप्तानी वाली राजस्थान रॉयल्स पिछले पांच में से तीन मैच हार चुकी है। दोनों टीमों के बीच अब तक 9 मैच खेले गए हैं। दोनों टीमों ने पिछले सीजन में दोनों ने एक-एक मैच जीता था। इस सीजन में यह दूसरा मुकाबला है। अहमदाबाद में खेले गए पहले मैच में राजस्थान 6 रन से जीता था। राजस्थान रॉयल्स के लिए सबसे बड़ी चिंता गेंदबाजी है। पिछले दो मैचों में टीम 220 से ज्यादा का स्कोर बनाने के बावजूद उसे डिफेंड नहीं कर सकी।

एएफसी अंडर-17 महिला एशियन कप के क्वार्टर फाइनल में भारत

लेबनान को 4-0 से हराया

नईदिल्ली, एजेंसी

अंडर-17 भारतीय महिला फुटबॉल टीम पहली बार एएफसी अंडर-17 महिला एशियन कप 2026 के क्वार्टरफाइनल में पहुंची है। चीन के सूझोऊ में खेले गए आखिरी ग्रुप मैच में भारत ने लेबनान को 4-0 से हराया। प्रीतिका बर्मन ने दो गोल किए, जबकि अल्वा देवी संजम और जोया ने एक-एक गोल दागा। भारत ने ग्रुप स्टेज 3 अंकों के साथ खत्म किया और थाईलैंड के साथ बेस्ट थर्ड प्लेस टीम के तौर पर अंतिम आठ में जगह बनाई।

भारत ने शुरुआत से ही लेबनान पर दबाव बनाए रखा। छठे मिनट में दिव्यानी लिंडा के लॉन्ग पास पर प्रीतिका बर्मन ने गोल कर भारत को 1-0 की बढ़त दिलाई। 35वें मिनट में अल्वा देवी संजम ने स्कोर 2-0 कर दिया। दूसरे हाफ में भारत ने दो और गोल कर लेबनान की वापसी के रास्ते बंद कर दिए। भारतीय महिला फुटबॉल के लिए यह बड़ी उपलब्धि है। 2004 में स्नष्ट अंडर-19 महिला चैंपियनशिप के बाद पहली बार भारत की किसी महिला टीम ने एशियन कप के नॉकआउट स्टेज में जगह बनाई है। वहीं, 2018 में अंडर-16 पुरुष टीम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के बाद यह किसी भी भारतीय टीम का पहला नॉकआउट है। सोमवार को क्वार्टर फाइनल में भारत का मुकाबला मेजबान चीन से होगा। चीन ग्रुप में तीनों मैच जीतकर 9 अंकों के साथ टॉप पर रहा। मैच सूझोऊ स्पोर्ट्स सेंटर स्टेडियम में खेला जाएगा। चीन टूर्नामेंट की सबसे मजबूत टीमों में से एक है, इसलिए भारत के लिए यह मुकाबला कड़ी चुनौती होगा। अगर भारत सोमवार को चीन को हराता है, तो टीम सीधे मोरक्को में होने वाले अंडर-17 महिला वर्ल्ड कप 2026 के लिए क्वालीफाई कर लेगी।

मनोरंजन | **बॉलीवुड का कोना**

साई पल्लवी @ 34 : लव लेटर मिलने पर मार पड़ी, फिल्म ऑफर करने वाले को समझा स्टॉकर

इंडियन सिनेमा की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक रामायण में माता सीता के किरदार में नजर आने वालीं साई पल्लवी आज 34 साल की हो चुकी हैं। साई पल्लवी कभी एक डांस रियलिटी शो की आम सी कंटेस्टेंट हुआ करती थीं। बचपन में वो कंगना रनोट की फिल्म में बतौर जूनियर आर्टिस्ट भी नजर आईं। आज अपने हुनर और सादगी से साई पल्लवी साउथ की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल हैं। उनके जन्मदिन के खास मौके पर एक नजर उनके बचपन, करियर और बेहतरीन किस्सों पर...

साई पल्लवी का जन्म तमिलनाडु के कोएम्बटूर में हुआ। पिता एक्साइज ऑफिसर और एक फुटबॉल प्लेयर थे और मां राधा एक डांसर थीं। बचपन में साई भी अच्छी बैडमिंटन प्लेयर थीं। साई महज 13 साल की उम्र में फिल्म कस्तूरी मान (2005) में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट नजर आई थीं। इसके बाद उन्होंने 2008 की तमिल फिल्म धाम धूम में बतौर जूनियर आर्टिस्ट काम किया। वो उस वक्त छठी क्लास में थीं। इस फिल्म से कंगना रनोट ने तमिल सिनेमा में डेब्यू किया था। मां के नक्शेकदम पर चलते साई को डांस में रुचि होने लगी। टीनएज में उन्होंने तमिल डांस शो उंगालिल यार उधुता प्रभु देवा (कौन बनेगा अगला प्रभू देवा) (2008) में हिस्सा लिया। शो के एक एपिसोड में सामंथा रुथप्रभू साई के डांस से इंप्रेस हुई थीं और जमकर तारीफ की थी। तब से ही साई को थोड़ी-बहुत पहचान मिलने लगी। कौन बनेगा अगला प्रभू देवा में अगर साई फाइनलिस्ट होतीं, तो उन्हें प्रभू देवा से मिलने का मौका मिलता, लेकिन सेमी फिनाले में ही शो से बाहर होने पर वो प्रभु देवा से नहीं मिल सकीं। लेकिन संयोग से सालों बाद प्रभू देवा ने उनके लिए डांस कोरियोग्राफ किया, जिसने बड़ा रिकॉर्ड कायम किया। साई वो डांस रियलिटी शो तो नहीं जीत सकीं, लेकिन उनकी परफॉर्मेंस सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई। उस समय साउथ के डायरेक्टर अल्फोंस पुथ्रेन अपनी एक फिल्म के लिए नए चेहरे की तलाश में थे कि तभी एक दिन फेसबुक पर उनकी नजर एक डांस वीडियो पर पड़ी। वो वीडियो साई पल्लवी के डांस क्लिप का था। उन्हें साई इतनी पसंद आई कि वो जैसे-तैसे उनका नंबर ढूंढने लगे। एक रोज कॉल कर अल्फोंस ने साई को फिल्म ऑफर कर दी। शौकिया

तौर पर डांस रियलिटी शो करने वालीं साई को असल में डॉक्टर बनना था। उनकी एक कजिन डॉक्टरी पढ़ने जॉर्जिया जा रही थी, तो साई ने भी वहीं एडमिशन ले लिया। यही वजह रही कि उन्होंने डायरेक्टर अल्फोंस की फिल्म भी ठुकरा दी। साई छुट्टियों में भारत आती थीं और बाकी समय जॉर्जिया में रहती थीं। साउथ रिपोर्ट्स के मुताबिक, साई शुरुआत में जॉर्जिया नहीं जाना चाहती थीं, तब उनकी मां ने कहा था कि अगर वो नहीं गईं, तो उनकी कजिन वहां गोरी हो जाएंगी, अच्छी अंग्रेजी सीखेंगी और उन्हें अच्छे रिश्ते भी मिलेंगे। इसी लालच में मां ने उन्हें जॉर्जिया जाने के लिए राजी किया। जब साई के फाइनल ईयर के एग्जाम नजदीक आए तो वो पढ़ाई पर फोकस करने के लिए कोएम्बटूर आ गईं। ये वही समय था, 6 साल पहले साई को फिल्म ऑफर करने वाले डायरेक्टर अल्फोंस ने फिल्म प्रेमम शुरू की। इस फिल्म में वो असिन को कास्ट करना चाहते थे, लेकिन फिर मलयाली बोलने वाली एक्ट्रेस की चाह में उन्होंने असिन का नाम ड्रॉप कर दिया।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले भारत दौरे पर आएगी ऑस्ट्रेलिया की टीम

नईदिल्ली, एजेंसी

अगले साल जनवरी में होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की तैयारियों के लिए ऑस्ट्रेलिया की 'ए' टीम भारत का दौरा करेगी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने बुधवार को शेड्यूल जारी किया, जिसके मुताबिक ऑस्ट्रेलिया 'ए' की टीम सितंबर और अक्टूबर में भारत के खिलाफ दो 4-दिवसीय मैच और तीन 50-ओवर के मैच खेलेगी।

ये सभी मुकाबले पुडुचेरी में आयोजित किए जाएंगे। इसके साथ ही ऑस्ट्रेलिया की महिला 'ए' टीम और पुरुषों की अंडर-19 टीम भी अलग-अलग सीरीज के लिए भारत आएगी। अगले साल 21 जनवरी से नागपुर में शुरू होने वाली 5 टेस्ट मैचों की सीरीज से पहले यह दौरा ऑस्ट्रेलिया के लिए काफी अहम है। पिछले साल भी ऑस्ट्रेलिया ने भारत का दौरा किया था, जहां सैम कोंस्टास, नाथन मैकस्वीनी और टॉड मर्फी जैसे खिलाड़ियों को भारतीय परिस्थितियों में खेलने का मौका मिला था। कोंस्टास ने पिछले दौरे के पहले मैच में शतक लगाया था, वहीं मैकस्वीनी ने 74 और नाबाद 85 रनों की पारियां खेली थीं।

महिला और अंडर-19 टीमें भी खेलेंगी सीरीज

बीसीसीआई ने सिर्फ मेंस टीम ही नहीं, बल्कि महिला ए और अंडर-19 टीमों के दौरे की भी पुष्टि की है। ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम 2018 के बाद पहली बार भारत में मल्टी-फॉर्मेट सीरीज खेलेगी। वे मोहाली में 2 टी20 और धर्मशाला में तीन वनडे और एक 4-दिवसीय मैच खेलेंगी। मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन भारत की अंडर-19 टीम राजकोट और अहमदाबाद में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलेगी। इसमें भारत के 15 साल के उभरते सितारे वैभव सूर्यवंशी पर सबकी नजरें होंगी।

उर्वशी रौतेला ने विराट कोहली को बताया अपना जीजू!

एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला आईपीएल में विराट कोहली की टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को सपोर्ट कर रही हैं। साथ ही उन्होंने विराट कोहली को अपना जीजू बताया। मिस मालिनी को दिए इंटरव्यू में उर्वशी ने मजाकिया अंदाज में कहा, 'हमारे तो जीजू हैं, विराट कोहली। फिर हम आपको सपोर्ट क्यों नहीं करेंगे? बिल्कुल करेंगे।' जब

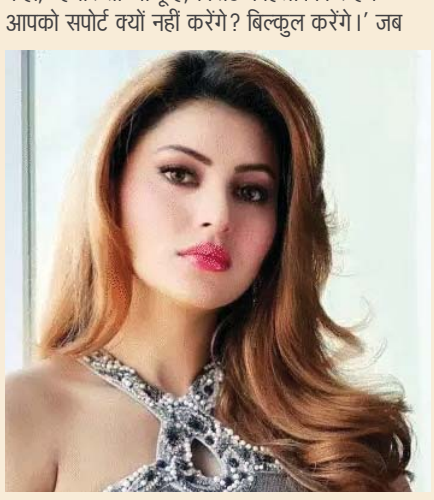

उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें क्रिकेट देखने का समय मिलता है, तो उर्वशी ने कहा कि वह ज्यादा मैच नहीं देख पातीं, लेकिन आईपीएल के सेमीफाइनल और फाइनल को लेकर काफी एक्साइटेड रहती हैं। वहीं आरसीबी के इस साल ट्रॉफी जीतने के सवाल पर उन्होंने कहा, 'क्यों नहीं?' इंटरव्यू के दौरान उर्वशी ने यह भी बताया कि विराट कोहली के साथ एक ऐड शूट करना था, लेकिन वह हो नहीं पाया था।

आईपीएल 2026 की पॉइंट्स टेबल में डिफेंडिंग चैंपियन आरसीबी तीसरे स्थान पर है। टीम ने अब तक खेले गए 10 मैचों में से 6 जीते हैं और 4 में उन्हें हार का सामना करना पड़ा है।

इंस्पेक्टर अविनाश 2 में दिखेंगी उर्वशी: वर्क फ्रंट की बात करें तो उर्वशी जल्द वेब सीरीज इंस्पेक्टर अविनाश के दूसरे सीजन में नजर आएंगी। इसमें वह रणदीप हुड्डा की पत्नी पूनम मिश्रा के रोल में दिखेंगी। फिल्मों की बात करें तो उर्वशी जल्द अक्षय कुमार स्टारर फिल्म वेलकम टू द जंगल में नजर आएंगी। फिल्म 26 जून को रिलीज होगी। वहीं, उन्हें बड़े पर्दे पर आखिरी बार तेलुगु फिल्म डाकू महाराज में देखा गया था।

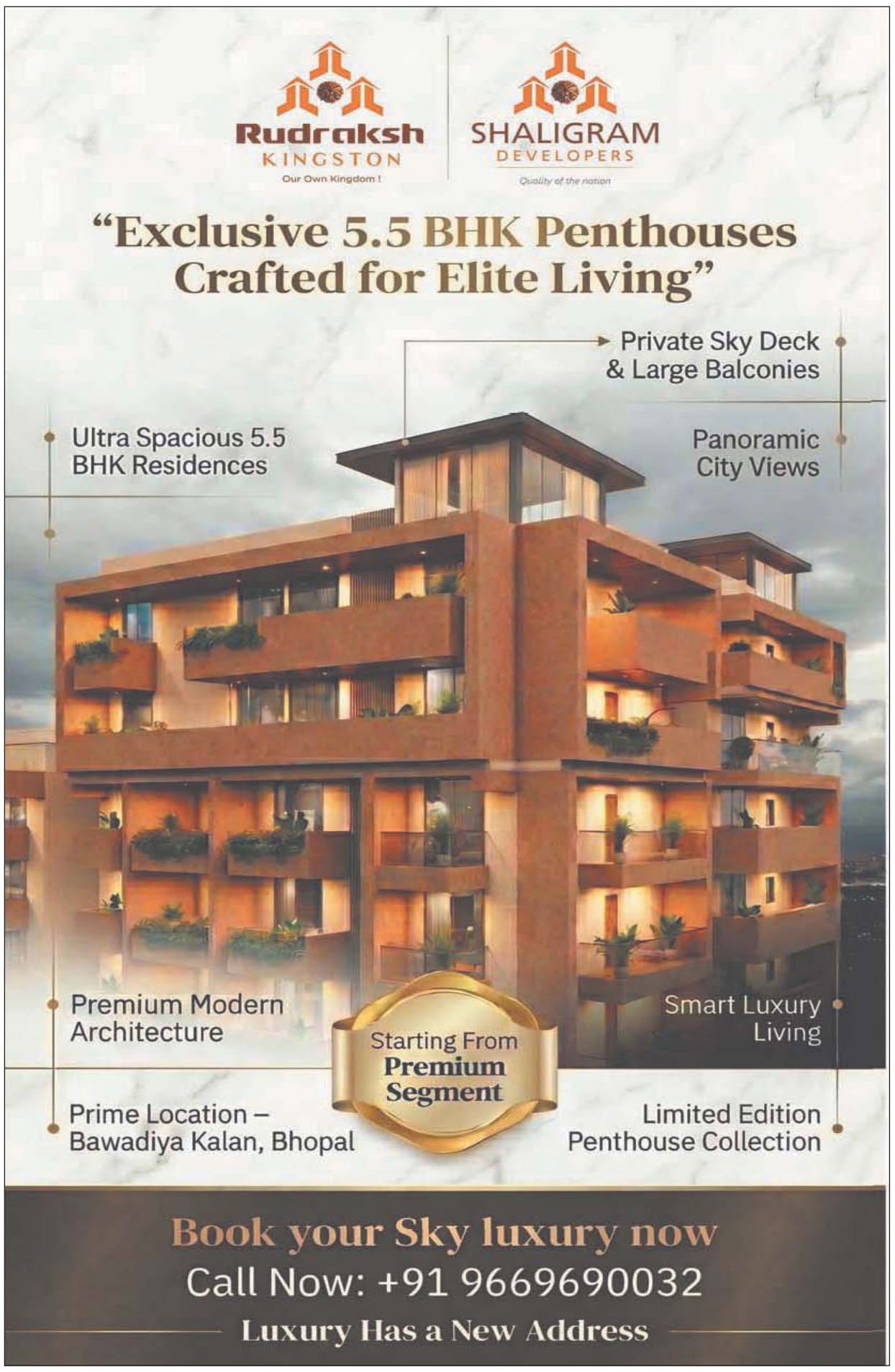

यूएस-इंडिया एआई एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी फोरम में दोनों देशों ने साझा किए विचार

भारत-यूएस एआई पर सहयोग बढ़ाएंगे, चीन को घेरने की तैयारी

वाशिंगटन, एजेंसी

भारत और अमेरिका के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और उभरती तकनीकों को लेकर सहयोग लगातार मजबूत हो रहा है। इसी बीच अमेरिका के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा है कि एआई जैसी अत्याधुनिक तकनीकों की पूरी क्षमता हासिल करने के लिए भारत और अमेरिका को खुलेपन के सिद्धांतों पर आगे बढ़ना होगा और विरोधी देशों पर किसी भी प्रकार की तकनीकी निर्भरता से बचना होगा।

अमेरिकी विदेश विभाग की डिप्टी असिस्टेंट सेक्रेटरी बेथानी मॉरिसन ने आयोजित यूएस-इंडिया एआई एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी फोरम को संबोधित करते हुए यह बात कही। इस कार्यक्रम का आयोजन यूएस-इंडिया एआई और इमर्जिंग टेक्नोलॉजी फोरम की ओर से किया गया था।

इंड-पैसिफिक को विश्वस्तरीय तकनीक की मिले पहुंच

बेथनी मॉरिसन ने कहा कि अमेरिका चाहता है कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के देशों को विश्वस्तरीय तकनीक तक पहुंच मिले और उसे समाज के विकास व लोगों को बेहतर सुविधाएं देने के लिए इस्तेमाल किया जाए। उन्होंने कहा कि एआई तकनीक में अपार संभावनाएं हैं, लेकिन इसके लाभ पूरी तरह तभी मिल सकते हैं जब देश खुले और सुरक्षित तकनीकी ढांचे पर काम करें।

विरोधी देशों पर निर्भरता से बचें

उन्होंने कहा कि हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी तकनीकी साझेदारी सुरक्षा, इंटरऑपरेबिलिटी और भरोसेमंद आपूर्ति श्रृंखला पर आधारित हो। साथ ही हमें विरोधी देशों पर निर्भरता से बचना होगा। मॉरिसन ने एआई क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहे निवेश का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि साल 2026 की पहली तिमाही में निजी क्षेत्र ने ढ्ढ तकनीकों के विकास में 300 अरब डॉलर से ज्यादा का निवेश किया है, जिसमें आधे से अधिक निवेश अमेरिकी कंपनियों द्वारा किए गए हैं।

भारत की हुई सराहना

उन्होंने भारतीय कंपनियों की भी सराहना करते हुए कहा कि भारत की कंपनियां ढ्ढ और उभरती तकनीकों के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने बताया कि इसी सप्ताह आयोजित सेलेक्टयूएसए इन्वेस्टमेंट समिट में भारतीय कंपनियों ने 1.1 अरब डॉलर के निवेश की घोषणा की है, जो दोनों देशों के बीच मजबूत होते तकनीकी और आर्थिक रिश्तों का संकेत है।अमेरिकी अधिकारी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि भारत सरकार साफ तौर पर समझती है कि ढ्ढ तकनीक का इस्तेमाल दोनों देशों की समृद्धि और विकास के लिए होना चाहिए, लेकिन साथ ही इससे जुड़े सुरक्षा खतरों को लेकर भी सतर्क रहना जरूरी है।बेथनी मॉरिसन ने कहा कि अमेरिका और भारत तकनीकी नवाचार के अगले दौर में एक मजबूत साझेदार के रूप में उभर रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि दोनों देश मिलकर ढ्ढ के भविष्य को दिशा देंगे और वैश्विक स्तर पर नई तकनीकी नेतृत्व क्षमता विकसित करेंगे।

पीएम मोदी ने महाराणा प्रताप की जयंती पर दी श्रद्धांजलि कहा- 'पूरा जीवन मातृभूमि को समर्पित किया'

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज राष्ट्र के महान योद्धा और वीरता एवं पराक्रम के अमर प्रतीक महाराणा प्रताप को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'देश के महान योद्धा और वीरता एवं पराक्रम के अमर प्रतीक महाराणा प्रताप को उनकी जयंती पर हार्दिक श्रद्धांजलि। उन्होंने अपना पूरा जीवन मातृभूमि के सम्मान, गरिमा और गौरव की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। उनके अदम्य साहस और अटूट आत्मसम्मान की गाथाएं आने वाले युगों तक देशवासियों के हृदयों में देशभक्ति की लौ प्रज्वलित करती रहेंगी।'

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी सोशल मीडिया पर लिखा, 'अदम्य साहस, आत्मसम्मान और राष्ट्र के प्रति समर्पण के शाश्वत प्रतीक महाराणा प्रताप को उनकी जयंती के अवसर पर मेरा विनम्र नमन।' उन्होंने कहा, 'भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और बलिदान के सर्वोच्च प्रेरणास्रोत महाराणा प्रताप ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण अपनी मातृभूमि, धर्म और संस्कृति की रक्षा और उनकी गरिमा को बनाए रखने के लिए समर्पित कर दिया। प्रतिकूल परिस्थितियों, अभावों और संघर्षों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।'

भारत-पाकिस्तान के सुधरेंगे संबंध, 3 महीने में हुईं 2 गुप्त बैठकें, डोभाल भी एक्टिव

नई दिल्ली, एजेंसी। ऑपरेशन सिंदूर को एक वर्ष बीत चुके हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच इस बीच भले ही कोई आधिकारिक संपर्क नहीं हुआ हो, लेकिन बातचीत का रास्ता खोलने की कोशिश की जा रही है। इसकी जिम्मेदारी सेना के रिटायर जनरलों और रिटायर राजनयिकों ने संभाली है। इन्होंने पिछले तीन महीनों में कम से कम दो बार गुप्त बैठकें की हैं। इंडियन एक्सप्रेस ने अपनी एक रिपोर्ट में इसका दावा किया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, ये बैठकें कतर और एशिया के एक और देश की राजधानी में आयोजित की गई। हालांकि ये मुलाकातें औपचारिक नहीं हैं, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद यह इस तरह का पहली कोशिश की जा रही है। सरकारी हलकों में इस बात पर सहमति बन रही है कि इस्लामाबाद और रावलपिंडी के साथ बातचीत का एक गुप्त रास्ता खुला रहना चाहिए।अंग्रेजी अखबार ने यह भी कहा है कि इस बातचीत की आवश्यकता के बारे में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के कार्यालय और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय को अवगत करा दिया गया है। सूत्रों के मुताबिक, पाकिस्तान की ओर से भी ऐसी बातचीत की इच्छा जताई गई है।इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य में किसी भी संभावित आतंकी हमले की स्थिति में तनाव को और अधिक बढ़ने से रोकना है। वर्तमान में दोनों देशों के बीच केवल डीजीएमओ स्तर पर मंगलवार को होने वाली साप्ताहिक हॉटलाइन बातचीत ही एकमात्र संचार माध्यम है।भारत का मानना है कि बैक-चैनल संचार इस घोषित स्थिति का उल्लंघन नहीं करता कि आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं चल सकते। इसे एक ऐसी व्यवस्था के रूप में देखा जा रहा है जहां भारत सरकार सीधे पाकिस्तान के नेतृत्व के साथ संकट के समय में बात कर सके।

रूस और यूक्रेन ने मान ली ट्रंप की बात, 3 दिन तक नहीं करेंगे अटैक

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि रूस और यूक्रेन ने उनके अनुरोध पर 3 दिन के सीजफायर और कैदियों की अदला-बदली पर सहमति जताई है। ट्रंप ने कहा कि यह कदम लंबे समय से चल रहे युद्ध को खत्म करने की दिशा में 'अंत की शुरुआत' साबित हो सकता है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के विदेश मामलों के सलाहकार यूरी उशाकोव ने भी इस समझौते की पुष्टि की है।

व्हाइट हाउस से रवाना होते समय ट्रंप ने पत्रकारों से कहा, 'मैंने दोनों नेताओं से युद्ध रोकने की अपील की थी। राष्ट्रपति पुतिन मान गए और राष्ट्रपति जेलेंस्की ने भी तुरंत सहमति दे दी। कुछ समय के लिए लोग एक-दूसरे को नहीं मारेंगे, यह बहुत अच्छी बात है।' ट्रंप ने सोशल मीडिया पर जानकारी देते हुए कहा कि सीजफायर शनिवार से सोमवार तक लागू रहेगा। उन्होंने बताया कि यह फैसला रूस के 'विक्ट्री डे' समारोह के दौरान लिया गया है।

नेपाल से बेंगलुरु जा रही यात्री बस नरसिंहपुर में मुंगवानी के पास पलटी, एक दर्जन घायल

नरसिंहपुर। नरसिंहपुर जिले के मुंगवानी थाना क्षेत्र अंतर्गत चौधरी पेट्रोल पंप के पास तड़के नेपाल से बेंगलुरु जा रही एक यात्री बस अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे के समय बस में 80 से अधिक यात्री सवार थे।दुर्घटना में एक दर्जन से अधिक यात्री घायल हुए हैं, जिनमें दो बच्चे भी शामिल बताए जा रहे हैं। सूचना मिलते ही मुंगवानी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू करते हुए घायलों को एंबुलेंस की सहायता से जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका उपचार जारी है।

डंपर में लगी आग, टोल प्लाजा के सेंसर बैरियर-बूथ भी चपेट में आए

खजुराहो। झांसी-खजुराहो फोरलेन पर स्थित देवगांव टोल प्लाजा पर एक डंपर में आग लग गई। आग इतनी तेज थी कि डंपर करीब एक घंटे तक धू-धू कर जलता रहा, जिससे टोल प्लाजा को भी नुकसान पहुंचा। घटना बमीठा थाना क्षेत्र की सुबह करीब 8 बजे की है।जानकारी के अनुसार, बमीठा से छतरपुर की ओर जा रहा यह डंपर जैसे ही टोल प्लाजा पर पहुंचा, उसमें अचानक आग लग गई। शुरुआती जांच में आग का कारण शॉर्ट सर्किट या कोई अन्य तकनीकी खराबी बताया जा रहा है।डंपर चालक ने केबिन में रखे कंबल से आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन आग तेजी से फैल गई और देखते ही देखते पूरा डंपर जलकर खाक हो गया।

The SAGE GROUP | 43 Glorious YEARS

SAGE REALTY
WE BUILD TRUST & QUALITY

SAGE to Singapore

Book your property with **SAGE REALTY**
and get a trip **to Singapore** on the spot

Hurry! Limited Period Offer

Call: 9200700800

Save Upto 25 lakhs*

Scan For Brochure

Scan For Location

RERA - P-BPL-25-5653

SAGE SKYLINE

LAVISH 3, 4, 5 & 5+1 BHK
APARTMENTS & PENTHOUSES

E-8 BAWADIYA KALAN, BHOPAL

Club house · Infinity pool, first time in bhopal · Wellness center · 300+ Capacity banquet hall · Movie theater · Executive lounge · Pickleball court
24x7 Security · Library with work station · Lush green garden · Podium parking · Jogging track · Corn hole game · Table tennis

READY POSSESSION

SAGE Golden Spring

RERA: P-BPL-22-3358, P-BPL-21-2843 & P-BPL-22-33

10 LANE MAIN AYODHYA BYPASS ROAD, BHOPAL

2, 3 & 4 BHK APARTMENTS & COMMERCIAL SPACES

PARKING WITH VISITOR PARKING · ELEVATORS TO EACH BLOCK · 12 ACRE LAVISH GREEN LANDSCAPING · SHOPPING MALL with 4 SCREENS CINEMA · JAIN & RADHA KRISHNA MANDIR IN CAMPUS · CLUB HOUSE WITH GYM, YOGA & SWIMMING POOL

मेन होशंगाबाद रोड पर ₹15.90 लाख में
शॉप्स, ऑफिस और शोरूम खरीदने का सुनहरा अवसर।

READY POSSESSION

SAGE Milestone Mall

RERA REG. P-BPL-R202734

5 Mins Drive from Ashima Mall,
MAIN HOSHANGABAD ROAD,
BHOPAL

Sage Galleria

RERA REG. P-BPL-26-6345

SHOPS | OFFICES | SHOWROOMS

MAIN ROAD, BAWADIYA KALAN,
BHOPAL

Sage Prestige

RERA NO. - P-BPL-25-5408

BIG SIZE
PREMIUM PLOTS

NEAR PUSHPANJALI HOSPITAL,
E-8 BAWADIYA KALAN, BHOPAL

SCAN QR FOR
YOUR DREAM HOME

SAGE UNIVERSITY INDORE • BHOPAL
Katara Extension, Sahara Bypass Road, Bhopal +91 7880199961/62
Kailod Kartal, Rau by-pass Road, Indore +91 9522578382

ADMISSION OPEN

SIRT SAGE GROUP OF INSTITUTIONS
Engineering • Management • Pharmacy
Ayodhya Bypass Road, Bhopal Ph. : 0755 4983150

SAGE INTERNATIONAL SCHOOL
Ayodhya Nagar • Danish Kunj
Near SIRT, Ayodhya Bypass Road, Bhopal Ph. : 7694013272
Danish Kunj-5, Kolar Road, Bhopal Ph. : 6232881872

Apollo Sage HOSPITALS
@ www.apollosage.in
E-8, Extension, Bavadiyakalan, Bhopal Ph. : 0755 4308111

SGI SAGE GREEN INDUSTRIES
AGRAWAL POWER PVT. LTD.
www.agrawalpower.in
True Sage Foundation
www.truesagefoundation.co.in

Head Office: 250, Sage Plaza, MP Nagar Zone-II, Bhopal | info@sagerealty.in | www.sagerealty.in